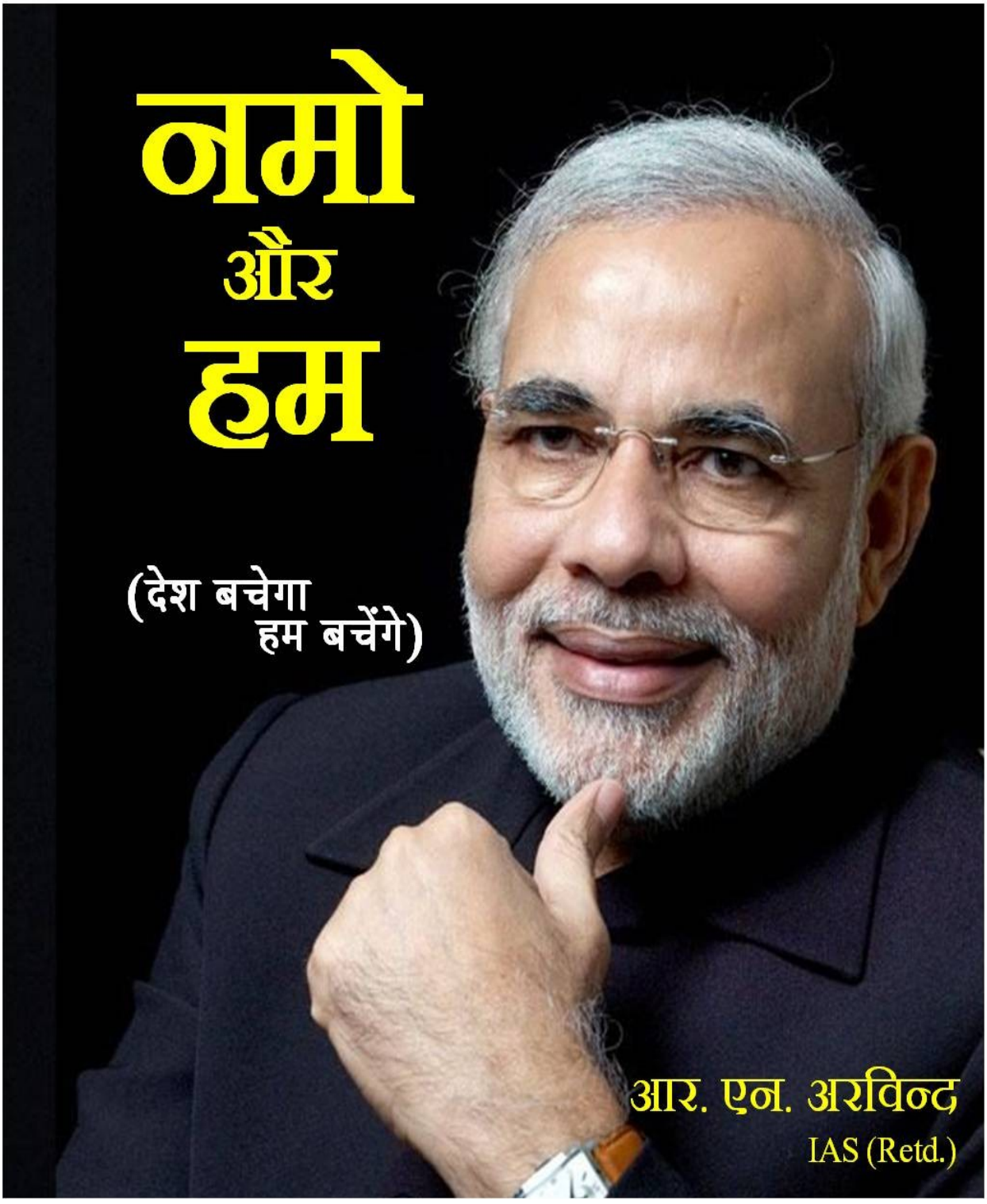
नमो
और
हम
(देश बचेगा
हम बचेंगे)
आर. एन. अरविन्द
IAS (Retd.)

नमो और हम

(देश बचेगा – हम बचेंगे)

आर एन अरविन्द

I A S (RETD)

लेखक
आर एन अरविन्द I A S [RETD),
खेताराम फार्म पोस्ट थली
तहसील बुहाना
जिला झुंझुनू – राजस्थान – 333516

CAMP ADDRESS: 677 OMAXE CITY

AJMER ROAD JAIPUR - 302026

कापीराइट – पाठक का
संशोधित संस्करण 11.11.17

मोबाईल– 9829361171
ई मेल– arvindrna@gmail-com
मूल्य– पाठक का प्यार

A DIGITAL PUBLICATION

[20---11----17]

डिजाईन भगवत कुमार एम ए एल एल बी

मोदी–मोदी क्यों?

"वसुधा का नेता कौन हुआ?
भूखंड विजेता कौन हुआ?
जिसने ना कभी आराम किया,
विघ्नों में रहकर नाम किया।"

''जितने कष्ट कंटकों में है जिनका जीवन सुमन खिला
गौरव गान उन्हें उतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला''

"जितना जिसका धैर्य प्रबल है,
उसकी उतनी बड़ी सृष्टि है।
जिसका जितना बड़ा स्वप्न है,
उसकी उतनी बड़ी दृष्टि है।"

''प्रतिभा कभी होती नहीं तमगों की मोहताज
राजतिलक किसने किया, सिंह बने बनराज''

बढ़े चलो, बढ़े चलो

हिमाद्री तुंग श्रुंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो–बढ़े चलो
असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह सी
सपूत मातृभूमि के, रूको न शूर साहसी,
अराती सैन्य सिन्धु में सुबाड़वाग्नी से जलो,
प्रवीर हो, जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

– जयशंकर प्रसाद

''तुम्हारे घर में दरवाजा है जबकि तुम्हें खतरे का अंदाजा नहीं है
हमें खतरे का अंदाजा है लेकिन हमारे घर में दरवाजा नहीं है।''

"औरों को हँसते देख मनु, हंसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।"

– महाकवि जयशंकर प्रसाद

इस पुस्तक का उद्देश्य

मोदीजी की महानता से आम नागरिक को अवगत करवाना है–

और पुस्तक का उद्देश्य आम नागरिक को खुद की जिम्मेवारियों के बाबत अवगत कराना है.....

जहां हम मोदीजी से बहुत सी उम्मीदें पाल रहें हैं तो हमें भी तो हमारी जिम्मेवारियां याद रहनी चाहियें.

मुझे खुद को भी इसी जिम्मेवारी बाबत अवगत कराना है ..... परिणाम है यह एक और पुस्तक.....

[8TH IN THIS SERIES]

वर्तमान काल भारत का स्वर्णिम युग है अतः इस युग में हर सब को भरपूर योगदान देना है.

''हमें मोदी से सैकड़ों शिकायतें हैं लेकिन उम्मीद भी केवल उन्हीं से हैं''

"आजादी की रक्षा के लिए जरूरी है कि हम जातिवाद को पूर्णतया नकार देवें." – सरदार पटेल

नमो और हम

देश को दूसरी गुलामी से आजादी के प्रयास तथा देश को बर्बादी के दलदल से निकालने वाले महान् देशभक्त नरेन्द्रभाई मोदी जिन्हे प्यार से देश नमो–नमो बोलता है के सद्प्रयासों को उजागर करने वाली और उनकी जोरदार टीम की क्षमता को उजागर करने वाली योजनाओं का लाभ उठाने तथा आम नागरिकों को देशभक्ति के प्रति सतर्क करने वाली मेरी यह आठवीं पुस्तक है। पहली पुस्तक जनवरी 2014 में आई उसका नाम था 'जागें और जगाएं – भारत नया बनायें।'

जागें और जगाएं –– भारत नया बनाएं के चार संस्करण छापे गए.

मित्रों की मदद से कुछ और पुस्तकें जैसे –

सबका साथ ––––– सबका विकास

सपने मोदी के ––––– सहयोग हमारा

जानदार मोदी ––––– शानदार शतक

और अब –––

नमो और हम ––––––– आपके सामने है.

इस पुस्तक में बहुत से जोरदार लोगों का भी जिक्र किया गया है जिससे नयी पीढी को प्रेरणा मिले.

"भारत की आजादी की रक्षा का काम केवल सैनिकों का नहीं है ––– इस हेतु हर नागरिक को खुद को ताकतवर बनाना होगा." – लाल बहादुर शास्त्री

मोदी–मोदी क्यों?

''लोहे को सोना करे पारस की पहचान

मिट्टी को सोना करे पौरूष की पहचान''

क्यों अलग हैं मोदी

जब हर कोई अपने परिवार को सेट करने में जुटा है वहीं एक मोदी है जो अपने परिवार से पहले सारे देश को परिवार मानता है. पहली प्राथमिकता देश है और खुद का परिवार बाद में आता है. लोग अचम्भा करते हैं कि यह कैसा आदमी है.

वाह वाही के लालच में मिडिया को विदेश नहीं घुमाता है और ना उनको पार्टियाँ देता है.

हमारी पाठक से प्रार्थना

"मैं कब कहता इन्साफ न चाह
या यह कि हक की छेड़ ना जंग
पर दुश्मन की पहचान तो कर
योंही मत काट अपनों के ही अंग।"

"आजादी की रक्षा के लिए जरूरी है कि हम जातिवाद को पूर्णतया नकार देवें."

———सरदार पटेल

करेंगे और कर के रहेंगे

(15 अगस्त 2017 तक)

- प्रधानमंत्री जनधन योजना – 29 करोड़ खाते खोले गए।
- मुद्रा योजना लाभान्वित परिवार – 8.63 करोड़
- ऋण राशि – 3.72 लाख करोड़
- प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना – 1.33 लाख किलोमीटर निर्माण
- बिजली आपूर्ति – 18452 गांवो में से विद्युतीकरण किया गया 14125 गाँव
- उजाला योजना के तहत् 25.41 करोड़ बल्ब वितरित।
- स्वच्छ भारत अभियान के तहत् 4.58 करोड़ शौचालयों का निमार्ण।
- प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत् 2.68 करोड़ मुफ्त गैस कनेक्शन वितरित।
- साइल हेल्थ कार्ड वितरित 9.03 करोड़।

क्यों छोड़ा घर

नमो ने जो निजी सुख सुविधाओं का त्याग किया है उसके पीछे भूत का लम्बा अनुभव है। कुछ लोग जो मोदीजी पर परिवार के प्रति निष्ठुरता और उदासीन होने का आरोप लगा रहे हैं उनको इतिहास के अनुभवों को देखना चाहिए व सबक लेना चाहिए। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्या ने एक बार गुरूवर चाणक्य से शिकायत की कि चाणक्य द्वारा उनके व्यक्तिगत सुख और आराम का ध्यान नहीं रखा जाता है। चाणक्य ने स्पष्ट जवाब दिया कि उन्होंने चन्द्रगुप्त को सम्राट बनाने का वादा किया था, लेकिन सम्राट के सुख का वादा नहीं किया है। यह भी कहा कि सम्राट का निजी सुख कोई प्राथमिकता नहीं होती। जनता का सुख ही सम्राट का सुख होगा।

यूनान के दार्शनिक प्लेटो ने अपने दार्शनिक राजा के लिए परिवार के निजी सुख को नकार दिया था।

भारतीय नीति शास्त्र में भी जो उत्तम कामना की है वह है –

न त्वहं कामये राज्यं न मोक्षं न स्वर्गं नापुनर्भवम्
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशम्

राजा के लिए संतुष्ट होकर बैठना भी पाप है। "असंतुष्टा विप्रा नाशा–संतुष्टा च महीपति।"

हमारे आदर्श राजा रामचन्द्र हैं जिन्होंने जनहित को प्राथमिकता देकर राम राज्य के लिए अपने निजी सुखों का बार–बार परित्याग किया।

भगवान कृष्ण ने जहाँ अपना बचपन खूब ठाठ–बाठ से बिताया तो बाद में राजा बनने के बाद उन्होंने अपने सुख की कभी इच्छा नहीं की। न्याय की रक्षा के लिए उन्होंने अर्जुन के सारथी बनकर 18 दिन युद्ध लड़वाया और कुरूक्षेत्र को धर्मक्षेत्र बनाकर अन्याय को हरा दिया।

हम नहीं कहते कि मोदी को हम मुकाबले में खड़ा कर रहे हैं लेकिन इस बात को विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि मोदी उस राह का अनुगमन कर रहे हैं जो राह किसी भी शासक के लिए आदर्श है।

बचना दुखदायी इतिहास से

वतन बेच कर पंडित नेहरू फूले नहीं समाते हैं।

बेशर्मी की हद है फिर भी बाते बड़ी बनाते हैं।

अंग्रेजी अमरीकी जोकों की जमात में हैं शामिल–

फिर भी बापू की समाध पर झुक झुक फूल चढ़ाते हैं। ---

– बाबा नागार्जुन

देश बचेगा – हम बचेंगे

पता नहीं क्यों साधारण सी बात लोगों के समझ में नहीं आती। लोग गलती कर रहे हैं। अलग अलग जाति, वर्ग, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि में बँट कर लोग देश का ही नहीं, खुद का भी नुकसान कर रहे हैं। लोगों को समझना चाहिए कि हम आपस में झगड़ेंगे तो ना केवल हम कमजोर होंगे बल्कि देश भी कमजोर होगा। लोगों को भली प्रकार जान लेना चाहिए कि देश बचेगा तो हम बचेंगे।

कोई भी देश तब तक सुरक्षित रहता है जब तक उसकी सभी व्यवस्थायें न्याय पर आधारित हों । न्याय का हनन होगा तो विद्रोह और विद्वेष का फैलना संभावित है।

वोट बैंक के लालच में जो अपना पराया का भेदभाव चल पड़ है यह देश की एकता और सुख चैन के लिए बाधक है।

हम कितने भी तर्क गढ़ लें लेकिन किसी भी भेदभाव और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का लाभ उठाकर हम अपना भविष्य सुरक्षित नहीं कर सकते। खुद का और देश का भविष्य सुखमय बनाने के लिए जरूरी है सबका साथ और सबको न्याय, सबका विकास।

नमो दर्शन – सबसे पहले देश

"फर्क थोड़ा सा है
तेरे और मेरे इश्क में
तू माशूक की खातिर
रात भर जगता है
और मुझे मातृ भूमि के हालात
सोने नहीं देते –"

आजादी के बाद हमारी बड़ी कमी रही कि देशभक्ति और देश के प्रति कर्त्तव्यों पर जोर नहीं दिया। हमारे संविधान को केवल मौलिक अधिकारों की याद आई और कर्तव्यों के बाबत् 1976में

कुछ बात हुई वो भी अधूरे मन से। हमने इजराइल और जापान से कुछ नहीं सीखा। हमारे कर्त्तव्यों की सार्थक याद मोदी जी ने दिलाई और इस जिम्मेवारी को हम नहीं समझेंगे तो देश वैसा मजबूत नहीं होगा जैसा होना नरेन्द्र मोदी चाहते हैं। जरूरत है हमें अपने गौरवशाली इतिहास को जानने की।

देश में मातृभूमि के बलिदान के लिए एक लम्बी परंपरा रही है। चाणक्य से लेकर मोदी तक अनगिनत लोगों ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने सुखों का जो बलिदान दिया है उन ज्ञात अज्ञात लोगों के प्रति हदृय से हमें बार–बार आभार व्यक्त करना चाहिए। विशेष उल्लेख करें तो हमें याद करना होगा सर्वस्व बलिदानी गुरू गोविन्द सिंह जी को जिन्होंने नौ साल की उम्र में अपने पिता श्री को बलिदान के लिए प्रेरित किया। अपने चार बच्चों के बलिदान के गवाह बने और अन्त में खुद शहीद हो गये।

महाराणा प्रताप ने घास की रोटियाँ खा कर, अपार कष्ट सहन करके भी मातृभूमि का मान बचाया। वीर शिवाजी ने आंतकवादी औरंगजेब से लम्बी लड़ाई लड़ी और अपार कष्टों को दरगुजर किया।

इसी पंक्ति में नेताजी सुभाष के कौशल और साहस हमारे लिए प्रेरणादायी हैं। शहीदे आजम भगतसिंह और उनके साथियों ने जो वीरता दिखाई और बलिदान दिये उनको देखकर हमारी चेतना हमारा मार्गदर्शन करती है। सरदार पटेल की ढ़ृढ़ता और कौशल और लाल बहादुर शास्त्री का साहस और त्याग हमारे पास देश भक्ति की जोरदार विरासत है। आइये स्वर्णिम इतिहास से सतत् प्रेरणा लेना जारी रखें।

इसी सन्दर्भ में नमो का राजनीतिक लाभ से अलग यह कथन सराहनीय है – हम यह नहीं देखेंगे की पार्टी का लाभ किस निर्णय में है। हमारा एक ही लक्ष्य है कि ऐसे निर्णय किये जायेंगे जिससे देश को लाभ हो।

“हमें मोदी से बहुत शिकायतें हैं लेकिन उम्मीदें भी तो उन्हीं से हैं।”

बदल रहा है देश

आजादी के बाद पहली बार देश में यह हुआ कि सरकारी विभागों का बजट आवंटन पहली अप्रेल (2017) को ही हो गया है। अमूमन बजट आवंटन बहुत देरी से होता है जिससे योजनाओं के लक्ष्य प्राप्ति में बड़ी दिक्कत होती है। मोदी जी ने इस सूरत को बदल दिया है।

आज आदरणीय राम मनोहर लौहिया की आत्मा को यह जानकर बड़ी शांति मिलेगी कि पहली अप्रेल से विभागों को वित्तीय आवंटन हो रहा है। वे इसके लिए हमेशा लड़ते रहे और 1954 में नेहरू के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाये उसमें बजट का देरीना आावंटन भी एक बड़ा मुद्दा था।

नरेन्द्र मोदी ––– ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने मुख्यमंत्री काल के अनुभवों से प्राप्त कठिनाइयों का शीघ्र से शीघ्र निराकरण करना चाहते हैं। आजादी के बाद के 70 वर्षो में शासन प्रशासन में इतनी कमियाँ बनी रही और चलती रही हैं कि उनको एक एक करके दुरूस्त करने के लिए बहुत समय चाहिए। मोदी जी के पास व्यग्रता है कि कमियों को जल्दी से जल्दी दुरूस्त किया जावे।

देश में तीन साल के कार्यकाल में कुछ ऐसे ऐतिहासिक कार्य हुए जिनके लिए हर नागरिक नमो की कार्यशैली पर गर्व कर सकता है।

"केवल सस्ता पेट्रोल सुख की गारंटी होता तो आज अरब के देश बहुत सुखी होते।"

यह कैसा पी एम

ना खाता है ना खाने देता है
ना सोता है ना सोने देता है
ना डरता है ना डरने देता है
वोट बैंक की परवाह ही नही
कड़वे फैसलों की जिम्मेवारी खुद लेता है –
दूसरों के कन्धों पर बन्दूक नहीं रखता।
अब्दुल कलाम साहेब की तरह
अपने निजी बिल खुद भुगतान करता है।

.....सोशल मीडिया से साभार

सर्जिकल स्ट्राइक

पहली बार देश को इस बात पर गर्व हुआ कि दुश्मन को उसके घर में घुस कर मारा गया। पहली बार दो साल पहले बर्मा में और फिर कुछ माह पहले पाकिस्तान में। खाली रक्षात्मक शैली से तंग आये देश को कुछ सार्थक और साहसिक कदम देखने को मिले।

भारत पिछले 55 साल से चीन स खौफ खाता रहा है। अब जाकर खौफ मिटा जब मोदी जैसा बहादुर नेतृत्व मिला है। चीन की सीमा पर ब्रहमोस मिसाइलें लगाकर जाहिर किया गया कि भारत भी ड्रेगन का मुकाबला कर सकता है।

सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल क्यों

कोई कुछ सवाल उठाता है कोई सेना के सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल उठाता है। मैं एक फौजी के बेटे की हैसियत से कहना चाहता हूं कि फौज है तो देश है और देश है तो हम हैं। सोचो और फौज का आदर करना सीखों। **– अभिनेता अक्षय कुमार**

नोटबंदी

माफियाओं व संगठित अपराधों और आतंकी फंडिंग तथा नकली करेन्सी पर रोकथाम के लिए लम्बे समय से भारत के अर्थशास्त्री नोटबंदी की सलाह दे रहे थे लेकिन किसी नेता ने इतना बड़ा साहस नहीं दिखाया जितना नमो ने दिखाया। इस कदम से बहुत कठिनाईयां आई लेकिन नाजायज दौलत कमानेवालों पर जोरदार हथोड़ा पड़ा। देश के तथाकथित बुद्दिजीवियों की सारी आलोचना धरी रह गई और देश की जनता ने 8 नवम्बर 2016 के बाद के हर चुनाव में इस साहसिक कदम का जोरदार अनुमोदन किया – अभूतपूर्व और अपेक्षाओं से ज्यादा।

मुद्रा योजना

मुद्रा योजना से छोटे और मध्यम कारोबारियों को लाखों करोड़ के ऋण दिए गए। ये ऋण जमानत हेतु कोई उपलब्ध ना होने पर भी दिए। गरीबों की जमानत की समस्या रहती है और संपत्ति गिरवी रखने की भी समस्या होती है। इस समस्या का आसान हल निकाला गया। बिना संपत्ति के ऋण मिल रहे है। मामूली राशि जमा करने पर यानि महिने का एक रूपया जमा करने पर भी लोगों को लाखों का बीमा किया गया। एक रूपया रोज पर बड़ी राशि का बीमा। इसी प्रकार बहुत कम किश्तें जमा कराने पर भी फसल बीमा किया गया।

नोटबंदी से दो नम्बर के कारोबार की कमर टूटी है तथा नाजायज साधनों के उपार्जित धन पर इतराने वाले लोगों का घमंड टूटा है। गरीब तबका इस बात से बहुत खुश है।

भारत पिछले 55 साल से चीन से खौफ खाता रहा है। अब जाकर खौफ मिटा जब मोदी जैसा बहादुर नेतृत्व मिला है। चीन की सीमा पर ब्रहमोस मिसाइलें लगाकर जाहिर किया गया कि भारत भी ड्रेगन का मुकाबला कर सकता है।

जी.एस.टी.

लम्बे समय से मांग थी कि एक देश में एक ही कर प्रणाली हो लेकिन इसके लिए आने वाली व्यावहारिक कठिनाईयों के कारण यह न हो सका। इस हेतु पुनः एक साहसी नेतृत्व और विलक्षण कौशल की जरूरत थी और यह सब कर के दिखाया साहसी नमो ने। चाणक्य ने सही कहा था कि कौशल –– साहस और त्याग के बिना कोई भी राजा देश की ना सुरक्षा कर सकता है और ना भला कर सकता है। जी.एस.टी. को लागू करने में साल भर तक बहुत कठिनाईयाँ आयेंगी। लेकिन यह कदम भारत के आर्थिक सामर्थ्य निमार्ण के लिए बहुत जरूरी था। दुनिया के करीब सारे विकसित देश एक कर प्रणाली का सिद्वांत अपना चुके है तो जरूर यह बहुत आवश्यक समझी गई होगी। भारत पिछड़ गया था और नमो के हाथों देश के आर्थिक सामर्थ्य के निर्माण का यह महान काम होना था।

जी।एस।टी एक नया कदम है अतः इसमें शुरुआत में काफी कठिनाइयां आ रही हैं लेकिन सही नियत होने से इन कठिनाइयों से भी बाहर आ जायेंगे।

सीमा सुरक्षा को प्राथमिकता

आजादी के बाद से ही पाकिस्तान दुश्मनी निभा रहा है और सन बासठ से चीन खुले रूप से हमारा शत्रु बन गया है। हमारे सुरक्षा को लगातार खतरा बना रहता है। पाकिस्तान से चार युद्ध लड़ने के बाद भी हम लगातार आतंक के छदम युद्ध का जवाब देने को बाध्य हैं। देश की सुरक्षा के लिए हमें दूसरे लाल बहादुर शास्त्री की जरूरत थी और देश की एकता को मजबूत करने के लिए दूसरे सरदार पटेल की जरूरत थी। नमो याने नरेन्द्र भाई मोदी के आने से हमारी यह इच्छा पूर्ण हुई है। महानता दिखाने के लिए हमें एक गांधी मिल गया और अब दूसरे गांधी की जरूरत नहीं है। लेकिन हमें सरदार पटेल और लाल बहादुर हर वक्त चाहियें, बार–बार चाहियें होंगे। भारत की सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए नमो ने हथियारों की बड़ी संख्या में खरीद शुरू की है। तीस साल बाद तोपों के सौदे हुए और आधुनिक लड़ाकू जहाज खरीदे जा रहे हैं। यह पहली बार हुआ है कि आतंक से लड़ने वाले सुरक्षा बलों के लिए बुलेट प्रूफ गाड़ियाँ खरीदी जा रही हैं।

बड़ी मात्रा में बुलेट प्रूफ जैकेट खरीदी जा रही हैं। सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए वन रेंक वन पेंशन योजना सार्थक रूप से लागू हो चुकी है।

स्वच्छ सरकार

वर्षों बाद देश को एक ऐसी सरकार मिली है जो साफ सुथरी है। तीन साल पूरे हो गए और मोदी सरकार पर कोई भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है। जनता की सम्पत्ति की लूट बंद हुई है। इससे पहले की यू.पी.ए. सरकार के वक्त लूट पाट लगातार होती रही और करीब दस लाख करोड़ की सम्पत्ति लूट ली गई। लूट और भ्रष्टाचार का देश के मनोबल पर इतना बुरा असर पड़ा कि कर्नाटक के एक युवक ने इस लूट और भ्रष्टाचार से दुखी होकर आत्म हत्या तक कर ली। देश अँधेरे कुएं में गिर गया था और निराशा और आक्रोश से बाहर कोई नमो ही ला सकता था।

गरीबों को समर्पित सरकार

मोदी सरकार गरीबों को समर्पित सरकार है। जो भी निर्णय हो रहे हैं उनमे गरीब का ख्याल सबसे पहले है। अमीरों से गैस सब्सिडी छुड़वाकर गरीबों के घर चुल्हे जलवाए जा रहे हैं। कोई भेदभाव नहीं। गरीबी ही है केवल एक मापदंड। गरीब की मृत्यु या दुर्घटना के वक्त मदद के लिए कोडियों की दर पे बीमा किये गए। फसल बीमा की दरें बहुत मामूली रखी गई।

राष्ट्रप्रेम

मोदी जी ने लोगों के अंदर राष्ट्रप्रेम जगा दिया है, भारत विरोधी ताकतें बेनकाब हो रही हैं, कुछ तो पागलों जैसी हरकतें करके खुद को ही नंगा कर रहे हैं———

वो लूट रहे हैं सपनों को

मैं चैन से कैसे सो जाऊं

वो बेच रहे हैं भारत को

खामोश मैं कैसे हो जाऊं।———सोशल मीडिया से साभार

ऐसे आते है परिणाम

हमारी जांच एजेंसियां अपने कौशल का परिचय दे रही हैं। इन एजेंसियों ने हाल के कुछ माह में सराहनीय सतर्कता बरती है। इनकी सतर्कता से पिछले एक साल में डेढ़ सौ से अधिक आतंकियों को मार गिराया गया है। एन.आई.ए. ने कश्मीर के अलगाववादी नेताओं पर जोरदार शिकंजा कसा है और उनकी देशद्रोही गतिविधियों पर अच्छे से पकड़ की है। देशद्रोहियों की गिरफ्तारियाँ हो रही हैं और प्रभावी कार्यवाही हो रही है। सवाल उठता है कि ऐसी सक्रियता पहले क्यों नही दिखाई गई। उत्तर साफ है कि मुलाजिम वैसे ही चलेंगे जैसी सरकार की मनसा होती है। फौज और पुलिस बलों के हाथ नमो ने खोले तो सराहनीय परिणाम आने लगे। उनका कहना है कि मनमोहन सिंह जी के राज में उनको फ्री हैण्ड यानि खुद निर्णय लेने की छूट नहीं थी और मोदीजी ने उनको विवेक से तत्काल निर्णय लेने की छूट दे दी है। इसे कहते हैं विवेकी नेतृत्व जो देश के हित में तुरंत निर्णय लेते हैं और देश को बर्बादी से बचाते हैं। सुरक्षा बलों को वाजिब छूट मिलने से उनका हौसला बढ़ा है और वे उचित परिणाम देने लगे हैं।

साहित्य का मार्ग दर्शन

" समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल व्याध।

जो तटस्थ है समय लिखेगा उसका भी अपराध।।"

आजादी से पहले देश को जगाया और जोश भरा साहित्यकारों ने। पं. रामप्रसाद बिस्मिल और शहीदे आजम भगतसिंह का साहित्यिक प्रेम जग जाहिर है। "मा मेरा रंग दे बसंती चोला" और "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है – देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।" – इन पंक्तियों का प्रभाव इतना था कि देशभक्तों के दिल में बिजली का करंट दौड़ जाता था। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता "वीरों का कैसा हो बसंत?" जन –जन की जबान पर रही। आजादी के बाद सबसे ज्यादा जागरूकता का काम किया, कविवर रामधारी सिंह दिनकर ने। दिनकर जी का मानना था कि जब–जब राजनीति लड़खड़ाई है तब तब साहित्य ने संभाला है। कवि चन्दरवरदायी, भूषण, पृथ्वीराज राठौड़ आदि का आजादी और शौर्य के लिए योगदान सदा याद रहेगा। न्याय और अन्याय के बीच महाभारत चलता रहा है और चलता रहेगा––

हजारों खिज्र पैदा कर चुकी है नश्ल आदम की।

यह सब मंजूर इंशा फिर भी भटकता है।

इस निरन्तर के समर में हर नागरिक की भागीदारी जरूरी है। भगवान कृष्ण ने सही कहा अगर आप न्याय के पक्ष में सक्रिय नहीं हैं तो आप निश्चित तौर से अन्याय के पक्ष में माने जायेंगे।

न्याय निष्पक्षता के कंधो पर सवार रहता है। अपना पराया मानते ही न्याय अपंग होकर नष्ट हो जाता है। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को इसीलिए सचेत किया था कि तुम्हारा कोई परिवार या रिश्तेदार नहीं है, जो अन्याय के पक्ष में है, उनका वध करो।

मै ऐसा गद्दार नहीं––

''उस कवि का मर जाना ही अच्छा है जो खुद्दार नहीं

देश जले, और मैं कुछ ना बोलूं, मै ऐसा गद्दार नहीं।''

– हरि ओम पंवार

''हम वो कलम नहीं हैं

जो बिक जाती दरबारों में।

हम वाणी के राजदूत हैं

सच पर मरने वाले हैं।

डाकू को डाकू कहने की

हिम्मत रखने वाले है।'' ––

– हरि ओम पंवार

जाग रहा है युग का प्रहरी

दिल्ली वालो ठोकर मारो दुनिया के हथकंडो पर।

इजराइल से जीना सीखो अपने ही भुजडंडों पर।

भारत माता का बंटवारा है जिनकी अभिलाषा में।

वे समझेंगे अर्जुन के गांडीव–धर्म की भाषा में।

फूल अमन के कभी नहीं खिलते कायर परिपाटी में।

नेहरूजी के श्वेत कबूतर मरे पड़े हैं घाटी में।

दिल्ली वालो अपने मन को बुद्ध करो या क्रुद्ध करो।

कश्मीर को दान करो या गद्दारों से युद्ध करें। ——

– हरि ओम पंवार

राजा शेर बनाम बन्दर राजा

भारतवासी धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होनें मोदी जैसे शेर को देश की बागडोर सौंपी, भारत जैसे महान देश को शेर जैसे साहस वाला व्यक्ति ही संभाल सकता है –हमें याद है कि जब जब सत्ता कमजोर लोगों के हाथ में गई तो देश बर्बाद हुआ। किसी का नाम लिए बिना हम अनुमान लगा सकते हैं कि आजादी के बाद कौन प्रध।न ऐसे आये जो माफिया लोगों पर लगाम नहीं लगा सके। हम हमारे भूत से समझाना चाहें तो यह कहानी पढ़े।

पंचतंत्र की एक कहानी है–– किसी जंगल का एक राजा लावारिस मर गया। इस राजा (शेर) का नियम था कि कोई भी हिंसक जानवर बिना भूख के शिकार नहीं करेगा।

राजा का स्थान भरने के लिए जानवरों की मीटिंग हुई। राजा लावारिश था अतः प्रजातंत्र के तरीके से राजा चुना गया।

हाथी, बैल उदासीन रहे। बन्दरों का बहुमत था अतः एक बन्दर राजा चुना गया।

एक दिन पड़ौस के जंगल से कुछ भेड़िये आये और बिना जरूरत के शाकाहारी जानवरों का शिकार करने लग गये––– हाहाकार मच गया। बन्दर राजा को प्रार्थना की गई कि बिना जरूरत का शिकार बंद किया जाए। बन्दर ने भेड़ियों को मना किया तो भेड़ियें बन्दर के ही पीछे पड़ गये। बंदर चिल्लाता रहा। इस पेड़ से उस पेड़ कूदता रहा लेकिन भेड़िये नहीं माने।

जब भेड़िये चले गये तो वापस पंचायत बैठी। राजा को उलाहना दिया गया। बन्दर बोला – देखो भाई – मेरे प्रयास में कमी हो तो बताओ। मेरी उछल कूद में कोई कमी हो तो बताओं। भेड़िये ना माने तो मैं क्या करूँ।

याद करें कि इस कहानी का संबंध दस लाख करोड़ के घोटालों से तो नहीं जुड़ता यदि जुड़ता है तो हम भविष्य में जागरूक रहें।

कैसे हों – सलाहकार

इतिहास गवाह है कि अच्छे–अच्छे नेक और साहसी लोग गलत सलाहकारों के कारण खुद का और देश का नुकसान करवाते हैं। देशवासियों की जिम्मेवारी है कि वे जागरूक रहें और कोई गलत सलाहकार मोदीजी के नजदीक जाता देखें तो नमो को सावधान करें। हमारा देश इतना बड़ा है और ढ़ेर सारे चालाक लोग हैं जिससे अकेले मोदीजी के लिए सबको एडवांस में समझना आसान नहीं है।

सलाहकार कैसे हों इस बाबत् पंचतंत्र की एक कहानी है। यह कहानी बताती है कि सलाहकार सच्चे, सुचरित्र और विवेकी होने चाहियें। हँस की तरह।

एक जंगल का शेर बूढ़ा हो गया। उसने पक्षीराज हँस से सलाह की। मैं दौड़कर शिकार नहीं कर सकता। मैं क्या करूँ। हँस ने सलाह दी – बदमाश और चोर–डकेत लोगों को मार लो। आसान शिकार होंगे। चोर, डकेत, बदमाश की पहचान मुझे है। शेर ने बदमाश लोगों के शिकार शुरू किये और ज्ञानी, सज्जनों को ईनाम, दक्षिणा देना शुरू किया। शेर की सर्वत्र प्रशंसा होने लगी। कालांतर में पक्षीराज हँस मानसरोवर यात्रा पर गये। मजबूरी में एक कौवे को सलाहकार बनाना पड़ा। कौवे को अच्छे बुरे की पहचान नहीं थी तो उसकी गलत सलाह पर सज्जन लोग भी

मारे जाने लगे। सिंह की बड़ी बदनामी हुई। एक दिन एक पंडित जी सिंहराज से दुबारा दक्षिणा लेने चले आये। सिंह राज ने ज्ञानी पंडित जी को पहचान लिया लेकिन कौवे ने नहीं पहचाना। कौवा सिंहराज को उत्प्रेरित करने लगा कि इस आदमी को मार डालो। सिंह राज ने पंडित जी को कहा पंडित जी आप बिना दक्षिणा जल्दी से लौटा जाइए। मैं हिंसक प्राणी हूं और मेरा सलाहकार कौवा मेरी हिंसक भावना को प्रेरित कर रहा ह। मेरा विवेक नष्ट हो सकता है क्योंकि सलाहकार गलत है। अब विवेकी हँस की बजाय कपटी कौवा मेरा सलाहकार है भागो – सिंह के वचन कविता में इस प्रकार जाने जाते हैं –

''हंसा तो सरवर गये

अब काग मेरे परधान

चलो विप्र अपने घर चलो

सिंघ किसके जजमान।''

नमो का साथ क्यों जरूरी

नमो ने एक उत्तम उदाहरण पेश किया है कि वे धन की मोहमाया से दूर हैं। लोगों को नमो से सीखना चाहिए कि उनके त्याग का कितना बड़ा फल आप सबने दिया। उनका यह त्याग ही है जिनके कारण लोगों के मन में उनके प्रति अपार श्रद्वा बनी हुई है। जनता के इसी विश्वास के कारण वे अपराजेय दिखने लगे हैं, धन के अविवेकी संग्रह की मनाही एक आदर्श वाक्य की नहीं बल्कि जीवन में लाभकारी भी हैं, आइये सब मिलकर त्याग भावना को संबल देवें, अपनी औलादों को अपाहिज ना बनावें।

''पूत सपूत तो क्यों धन सांचे

पूत कपूत तो क्यों धन सांचे।''

समाज के गहन अध्ययन के बाद उपरोक्त पंक्तियां निकली हैं। अगर पूत सपूत है तो खुद अपना वाजिब मुकाम खुद बना ले। अतः सपूत के लिए बहुत धन सरंक्षित करके रखना जरूरी नहीं है और पूत कपूत है तो आप कितना भी धन संचय करो उसको कपूत बहुत जल्दी बर्बाद कर देगा।

जो लोग विभिन्न हरकतों से आने वाली पीढ़ी के लिए धन संग्रह कर रहे हैं वो लोग यह नहीं समझ रहे हैं कि इस प्रकार के उद्योग आने वाली पीढ़ियो को अपाहित बना रहे हैं। विरासत में मिला नाजायज धन नई पीढ़ी के संघर्ष की संभावनायें छीन लेता है।

लोग इस बात को जानते तो हैं कि नाजायज धन संग्रह भावी पीढ़ी को अपाहित बना देगें लेकिन इस मान्यता को दिल से स्वीकार नहीं करते हैं। यही कारण है कि नाजायज धन संग्रह के परिणाम अच्छे नहीं आते हैं।

नोटबंदी के बाद जो घबराहट और हड़बड़ाहट सामने आई उससे जाहिर हुआ कि दो नंबर के रास्ते वाले लोगों के जीवन से सुख और शांति गायब हो जाते हैं। कहावत है कि जो सोना कान ही फाड़ दे वह किसी काम का नहीं। नाजायज साधनों का धन सुविधा देता है तो सुख छीन लेता है। नाजायज धन को छुपानें में ही सारी जिन्दगी निकल जाती है। पिछले कुछ सालों से जो बेईमान लोग मोज कर रहे थे अब उनका जमाना गया। मोदी उन्हें जीने नहीं देगा और धन मरने नहीं देगा।

वंशवाद की राजनीति को बाय–बाय

''भाई अगर गिरा सको, ऊँच–नीच की भीत।
संभव होगी फिर तभी, मानवता की जीत।।''
''अगर खत्म वंशानुगत, जर जमीन अधिकार।
मानवता की जीत का – एक यही हथियार।।''

भारत में 1947 से प्रजातंत्र तो आ गया लेकिन वास्तविक प्रजातंत्र नहीं आया। सत्ता नेहरू वंश के आहाते से बाहर नहीं निकली। बीच–बीच में कुछ समय दूसरे लोगों को मौका मिला लेकिन ऐसे अवसर बहुत कम समय तक रहे।

मई 2014 में जनता ने जागरूकता दिखाई और वंशवाद से बाहर से एक व्यक्ति को चुनकर देश की कमान संभलवाई। यह व्यक्ति है नरेन्द्र भाई मोदी जिनको लोग आदर और प्यार से नमो के नाम से संबोधित करने लगे है। मोदी का किसी भी सत्ता में चल रहे वंश से कोई संबंध नहीं। एक नई उम्मीद के साथ जब जनता ने मोदी जी को कमान सौंपी है तो बहुत सारी

उम्मीदें भी पाल ली हैं। वंशवाद ने देश के गरीब को गरीब रखा तो नई सत्ता से उम्मीद है कि गरीबी से प्रभावी लड़ाई लड़ी जायें। वंशवाद ने भ्रष्टाचार का संरक्षण किया तो नई उम्मीद बनी है कि अब भ्रष्टाचार नहीं होगा। लुकाछिपी का जो खेल चलता रहा वो खेल खत्म होगा और पारदर्शिता आयेगी। लेकिन यह तभी संभव होगा जब नमो के आदर्शों को देश के लोग मन से अपनाएँ और मोदी को पूरा सहयोग दें।

आडम्बरी आदर्शवाद – बाय–बाय

'' रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ

जाने दे उनको स्वर्ग धीर,

पर, फिर हमें गाण्डीव–गदा,

लौटा दे अर्जुन–भीम वीर।

कह दे शंकर से, आज करें

वे प्रलय–नृत्य फिर एक बार।

सारे भारत में गूंज उठे,

'हर हर बम बम का फिर महोच्चार।''

(महाकवि दिनकर का हिमालय को संबोधन गीत)

चीन द्वारा भारत के सम्मान को 1962 में भारी ठेस पहुँचाने के बाद हताश निराश देश को कविवर रामधारी सिंह दिनकर ने उपरोक्त पंक्तियां संसद में सुनाकर नई चेतना हेतु प्रेरित किया लेकिन नेहरू को भारत माता के सम्मान की पीड़ा महसूस नहीं हुई या नहीं इसका कोई उत्तर सामने नहीं आया। देश चीन से भयभीत रहा और यह हालात अब तक चलते रहे। पहली बार देश ने एक साहसी नेता को कमान सौंपी है जिसने ड्रेगन के दुस्साहस का उसी की भाषा में जवाब देना शुरू किया है। युद्ध के परिणाम तो बुरे होते है लेकिन आत्म सम्मान के लिए ऐसी जोखिम के लिए हमें तैयार रहना ही होगा और हम रहेंगे, जरूर रहेंगे।

नरेन्द्र मोदी ने सरदार पटेल और लाल बहादुर शास्त्री के साहसिक यथार्थवाद को नई चेतना दी है और मई 1914 के बाद देश की रक्षा की तैयारियों में जुटे हुए है। हमारे आर्मी चीफ जनरल श्री वी.के. सिंह ने हमें 2013 में चेताया था कि युद्ध के हालात बनने पर देश के पास एक सप्ताह का भी गोला बारूद नहीं है व मोदी जी ने देश की कमान संभाल लेने के बाद आर्मी नेवी व वायु सेना तीनों की ताकत बढ़ाने का तेजी से प्रयास किया है।

न्याय ... सर्वोपरि

''अधिकार खोकर बैठे रहना यह बड़ा दुष्कर्म है

न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।''

– मैथिलि शरण गुप्त

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि जो अन्याय और अनीति के साथ खड़े हैं वे दण्ड के भागी हैं। परिजन हों या रिश्तेदार कोई भी हों जो न्याय के साथ नहीं हैं वे आपके शत्रु हैं।

गीता का यह संदेश सदियों से सत्य रहा है लेकिन जब जब सभ्यता ने गीता से अलग रास्ता लिया तब तब बर्बादी हाथ लगी।

भारत में राजाओं में सबसे पहले जो नाम प्रथम पूजनीय माना जाता है वह है वीर विक्रमादित्य का। वीर विक्रमादित्य का न्याय आज सबसे बड़ा उदाहरण है।

प्रजातंत्र को लोगों ने न्याय से दूर ले जाकर भाई भतीजावाद और जाति धर्म तक सीमित करने की जो कोशिश की है वह देश के लिए घातक है।

महान विद्वान अरस्तू ने ठीक ही कहा है – ''मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है लेकिन न्याय से विमुख होने पर वह पशु से भी बदतर है।''

किसी भी सभ्य आदमी से सवाल किया जाये कि आपको सरकार से फायदा चाहिए या न्याय इसके बाद जो थोड़ी सी भी समझ रखता है वह कहेगा कि न्याय के साथ कोई समझौता

नहीं। आदमी सदियों से बिना सड़क, बिना बिजली के जिन्दा रहा है और सुविधाओं के लिए हथियार नहीं उठाये हैं लेकिन जब जब अन्याय हुआ है तब तब हथियार उठायें गये हैं। प्रजातंत्र यह मौका देता है कि बिना हथियार उठाये अन्यायपूर्ण शासन से छुटकारा प्राप्त करें। लोगों के खुद के ऊपर पड़ती है तब तो उनको समझ आती है वरना दूर की चीखें समझ नहीं आती हैं।

जिस प्रकार के जाति–धर्म के आधार पर लाभ देने की घोषणायें हो रही हैं उनमें न्याय का पक्ष गायब है और जो शासन न्याय नहीं कर सकता वह लोगों को खून के आंसू पीने को मजबूर करता है। लोग मतदान के वक्त न्याय की महत्ता को नहीं समझेंगे तो खून के आँसू रोयेंगे।

मोदीजी गलत लोगों की नाराजगी की परवाह किये बिना न्याय के सबल पथ पर चल रहे हैं. इतिहास गवाह है कि न्याय का पक्ष लेनेवाले लोगों की हार नहीं होती।

न्याय के मायने

सज्जनों के साथ एकात्म भाव सुख का स्त्रोत है और विघटन का भाव विनाशकारी है। सज्जनों का सम्मान और दुर्जनों की प्रताड़ना जरूरी है। न्याय होना जरूरी है। विश्व के एक महान विद्वान अरस्तु ठीक ही कहते हैं :–

"Man is the most beautiful creation of God on earth but deprived of justice man is worst than an animal."

न्याय का अर्थ है दोषी को दंड देना और निर्दोष की रक्षा। न्याय के अर्थ को सबसे बढ़िया तौर से यूनानी दार्शनिक प्लेटों ने परिभाषित किया है। उनके अनुसार दोषी को दंड देने के अलावा यह न्याय भी जरूरी है कि समाज में योग्यता के आधार पर पद और सम्मान मिलें। समाज योग्य व्यक्ति को हक नहीं देता है तो समाज प्रतिभा के साथ अन्याय करता है और अयोग्य व्यक्ति दूसरे योग्य लोगों को पीछे धकेल कर उनका हक मारता है तो ऐसा व्यक्ति समाज के साथ अन्याय करता है। वंशवाद के आधार पर पद प्राप्त करने वाले लोग इस परिभाषा से अन्यायी हैं। वंशवाद को नकार कर मोदीजी समाज के साथ सही न्याय कर रहे है।

सबसे खतरनाक माफिया – शिक्षा माफिया

जिस युवा पीढ़ी के हाथो में उम्मीदें सौंपनी है उनके हाथों में धोखा और फरेब परोसा जा रहा है। बिना मेहनत के डिग्री – पैसों में बिकती डिग्री – फर्जी डिग्री – झूठी डिग्री।

आखिर क्या अंजाम होगा इस राक्षसी प्रयास का। जो काबिल हैं वे देखते रह जायेंगे और जो चालाक हैं, झूठे हैं, 420 हैं वे नौकरियाँ पा जायेंगे। भारी निराशा फैल रही है नई पीढ़ी में। शिक्षा में निजीकरण एक मखोल बन गया है। अपवाद को छोड़कर उच्च शिक्षा में भारी भ्रष्टाचार फैल गया है। अजीत जोगी ने जो विश्वविद्यालय बांटने शुरू किये थे उसकी देखा देखी देशभर में कुकुरमुत्तों की तरह फैल गये हैं। योग्य लोग देखते रहेगें और अयोग्य लाभ प्राप्त करेंगे। भारी विद्रोह और निराशा का कारण बनेंगे ऐसे हालात।

जनसंख्या पर नियंत्रण जरूरी

ज्यादातर पार्टियों ने वोटबैंक की राजीनति के चलते परिवार नियोजन को किनारे कर दिया है। कानून बनाकर नियंत्रण जरूरी है। इसे प्रभावी बनाने के लिए जरूरी है कि तीन बच्चों से ज्यादा पैदा करने की किसी को इजाजत न हो। तीन बच्चों से ज्यादा के लिए मुफ्त और रियायत की सभी सुविधाएं बंद हो। तीन बच्चों से ज्यादा वाले माता–पिता के सभी तरह के चुनाव लड़ने पर पाबंदी हो। ऐसा नहीं होगा तो हमारी जनसंख्या का बोझ ही देश को ले डूबेगा। बच्चों की संख्या तीन के पीछे कई सार्थक कारण हैं जैसे दूसरे बच्चे के वक्त जुड़वां बच्चे पैदा होना तथा किसी विधुर द्वारा दूसरी पत्नी को एक बच्चे के सुख का मौका देना। इस स्थिति में भी जुड़वां बच्चे पैदा होने पर भी रियायत के लिए सक्षम अधिकारी की मंजूरी लेनी होगी। कुछ अवधि के बाद तीन बच्चों की सीमा को घटा कर दो तक करना भी पड़ सकता है।

आवारा भीड़ के खतरे––

– हरिशंकर परसाई

1991 में श्री हरिशंकर परसाई ने बहुत सही लिखा था। हालात और बिगड़े हैं।

अब इस भीड़ को रोकने के लिए नसबंदी बहुत है जरूरी.

''देश में वह दिशाहीन, बेकार और हताश भीड़ बढ़ रही है जिसका कभी हिटलर जैसों ने इस्तेमाल किया था

पत्थर फेंकनेवाला ''वह नाराज युवक साधारण कुर्ता पाजामा पहने था. चेहरा बुझा था जिसकी राख में से चिंगारी निकली थी पत्थर फेंकते वक्त. शिक्षित था. बेकार था. नौकरी के लिए भटकता रहा था. धंधा कोई नहीं. घर की हालत खराब. घर में अपमान बाहर अवहेलना. वह आत्मग्लानि से क्षुब्ध. घुटन और गुस्सा. एक नकारात्मक भावना. सबसे शिकायत. ऐसी मानसिकता में सुंदरता देखकर चिढ़ होती है. खिले हुए फूल बुरे लगते हैं. किसी के अच्छे घर से घृणा होती है. सुंदर कार पर थूकने का मन होता है. मीठा गाना सुनकर तकलीफ होती है. अच्छे कपड़े पहिने खुशहाल साथियों से विरक्ति होती है. जिस चीज से खुशी, सुंदरता, संपन्नता, सफलता, प्रतिष्ठा का बोध होता है, उस पर गुस्सा आता है.''

अति से बचाव

''युक्ता हार विहारस्य, युक्त चेष्टस्य कर्मसु

युक्त स्वपनाव बोधस्य योगा भवति दुखहा।''

– गीता

'' अति रूपेणेव सीता
अति गर्वेण रावणः
अति दानात बर्लिबध्धो
अति सर्वत्र वर्जते।''

Golden Mean is the best way of life.

It lies between two extremes ……. Aristotle

वीणा के तारों को ना तो इतना खींचो
कि वे टूट जायें और ना इतना ढ़ीला
छोड़ो कि वे बज ना सकें। **– गौतम बुद्ध**

हमारा रोज का व्यवहार सामान्यतः अति से पीड़ित रहता है। किसी विचार या व्यक्ति को हम या तो बहुत पंसद करते है या बहुत नापसंद।

अति से विपरीत मध्यम मार्ग ही वह मार्ग है जो दुष्परिणामों से बचाता है।

सिन्थेसिस तक पहुंचने के लिए थीसिस और एन्टीथीसिस का बराबर मूल्याकंन करना पड़ता है।

अहिंसा बनाम आत्मरक्षा

''मार ही डालेगी बेमोत यह दुनिया वो है
हम जो जिन्दा हैं जीने का हुनर जानते हैं।''

गाँधीजी ने कहा कि जो तुम्हारें बायें गाल पर थप्पड़ मारे तो दायां गाल आगे कर दो। लोग प्रश्न उठाते है कि वो दायें गाल पर ही थप्पड़ मार दे तो फिर क्या करोगें। गांधीजी ने गीता को माता माना लेकिन माता के संदेश को आधा समझा। गीता ने अन्याय से लड़ने का सन्देश

दिया। खुद भगवान् ने कौरवों से न्याय की याचना की लेकिन वे नहीं माने तो अर्जुन को समझाया कि कायरता का त्याग करके अन्याय के खिलाफ हथियार उठाओ।

दुनिया का इतिहास गवाह है कि क्रूर, निर्दयी, दुराग्रही और आतंकी व्यक्ति के सामने अहिंसा का पाठ बेवकूफी है। दुराग्रही आतंकी न्याय व अहिंसा की बात नहीं सुनना चाहता। नादिरशाह व तैमूर लंग ने दिल्ली को लूटा और निर्दोष नागरिकों का कत्ले आम किया। हिंसक भेड़िये के सामने अहिंसक हिरण की फरयाद कोई अर्थ नहीं रखती।

इतिहास इस बात का भी गवाह है कि जिसने दुष्ट पर दया की वह मारा गया। जो अपनी रक्षा के प्रति सचेत नहीं रहा वह मारा जायेगा। जिन्दा रहना है तो अपनी सुरक्षा के प्रति सचेत रहो। दुनिया के बहुत लोग ऐसी भी मान्यता को मानते हैं कि विधर्मी आदमी का बिना दोष के भी कत्ल कर दो। दुष्ट को माफी देने का अर्थ है खुद के लिए खतरा मोल लेना। महाकवि दिनकर जी ठीक कहते है :–

''छमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो

उसका क्या जो दन्तहीन, विषहीन, विनीत सरल हो।''

फिर ना हो वैसी गलती

भारत की आज जो दुदर्शा है इसके जिम्मेवारों के नाम गिने जाये ंतो सबसे ऊपर नेहरू का नाम आयेगा।

आजादी के तुरंत बाद नेहरू को पग पग पर सरदार पटेल ने आगाह किया। देश के एकीकरण के बाबत् सरदार की बात ना मानने का नतीजा कश्मीर की उलझी समस्या के रूप में मिला। नेहरू द्वारा भारी नासूर देश को दिया गया।

चीन के बाबत् सरकार पटेल ने नवम्बर 1950 में लम्बा पत्र लिखकर आगाह किया था। नेहरू नहीं जागे और सन् 1962 में अपमान का घूट देश को पिलाया।

अब आप तय करेंगें कि नेहरू कितने नासमझ थे कि दूर्दशी सरदार पटेल द्वारा बार–बार चेताने के बाद भी वे सोते रहे और लापरवाह बने रहें।

महापुरूष और हम

भारतीय संस्कृति का अच्छा पक्ष यह है कि हम अपने महापुरूषों को याद रखते हैं लेकिन कमजोर पक्ष यह ह कि उन महापुरूषों के कमजोर पक्ष के बाबत् बात करने में झिझकते है।

होना यह चाहिए कि देश से बड़ा कोई नहीं है और किसी महान व्यक्ति के कुछ सिद्धान्त या आचरण देश को कमजोर करते हैं तो उनके बाबत निर्भीकता से मंथन होना चाहिए।

कई उदाहरणों में महाकवि दिनकर जी और बाबा नागार्जुन के उदाहरण हमारे सामने अग्रणी हैं। नागार्जुन जी ने जब देखा कि बापू के नाम पर धंधे होने लगे हैं तो उन्होनें हमें चेताया। यह बात दूसरी है कि हम निजी स्वार्थों से कितना बाहर निकले।

''बापू के भी ताऊ निकले तीनो बन्दर बापू के

सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बन्दर बापू के''

आजादी की लड़ाई के महानायकों में हमने अपने–अपने आदर्श पुरूष बांट लिये हैं। गाँधी और अम्बेडकर के विवादों व उनके समन्वय में से वह अर्थ आज निकाला जायें जो भारत की वर्तमान परिस्थितियों में सबसे अधिक सार्थक और सकारात्मक है।

जो धर्म के साथ

ज्ञानी लोगों की राय है कि महाभारत का संग्राम होने से पहले जिस प्रकार सेनानियों को निष्ठाओं के अनुसार पाला बदलने का मौका मिला उसी प्रकार आनेवाले 2019 के महासंग्राम से पहले जो धर्म के साथ हैं उनको मोदीजी के साथ आ जाना चाहिए।

जातिवाद का जहर

"मुल्क तेरी बरबादी के आसार नजर आते हैं।
चोरों के संग पहरेदार नजर आते हैं।
खण्ड खण्ड में खण्डित भारत रो रहा है जोरों से
हर जाति, हर धर्म के ठेकेदार नजर आते हैं।"

नेहरू को पचास के दशक में ही महाकवि दिनकर जी ने चेताया था लेकिन नेहरू अपनी धुन में चलते हुए यथार्थ को नकराते रहे। अब तो यह समस्या इतनी गंभीर हो गई है कि देश का पूरा जन मानस साथ आये बिना इस महामारी का इलाज नहीं होगा। आइये हम अपने छोटे दायरों से बाहर निकलकर देश की चिन्ता करें।

यह बात पूर्ण तर्कसम्मत है कि जाति व्यवस्था ईश्वर की बनाई हुई नहीं है। जन्म से व्यक्ति पर जाति के कोई चिन्ह नहीं होते हैं। अतः जो जाति ईश्वर ने ना बनाई है वह स्वीकार्य कैसे हो सकती है। जाति व्यवस्था का वैसे भी विज्ञान के युग में कोई व्यावहारिक लाभ नहीं है। हर जाति के लोग हर तरह के काम करते हैं अतः वर्ण व्यवस्था की प्राचीन आवश्यकतायें भी आज निरर्थक हो चुकी हैं।

जब जाति व्यवस्था का कोई तर्क सम्मत आधार ही नहीं है तो जाति के आधार पर जो संगठन बन रहे हैं वे केवल संकुचित मानसिकता जाहिर करते हैं। स्वार्थी और चालाक लोगों ने जातीय संगठनों का लाभ उठाकर प्रजातंत्र की व्यवस्था को अपने स्वार्थ साधनों का माध्यम बना लिया है। जातीय आधार पर वैमनस्य फैलाने वाली मायावती भी जानती है कि जातीय व्यवस्था की प्रासांगिकता सामाजिक तौर पर खत्म हो रही है लेकिन राजनीतिक लाभ के लिए उनको वैमनस्य फैलाना ज्यादा लाभकारी लगता है। एक समय था जब "तिलक, तराजू और तलवार–इनको मारो जूते चार " जैसी घृणात्मक बातें फैलाने से राजनीतिक लाभ दिखता था वो नये समीकरणों में "हाथी नहीं गणेश है, ब्रहमा, विष्णु, महेश है " के रूप में प्रसारित हुआ। जातिवाद देश का दुश्मन है और देश विखंडित होगा तो हम नहीं बचेंगे। याद रहे।

"आजादी की रक्षा के लिए जरूरी है कि हम जातिवाद को पूर्णतया नकार देवें." – सरदार पटेल

बाला साहेब की आत्मा

जिस बब्बर शेर बाला साहेब ने देशहित में सबल, सुढ़ृढ़ और स्पष्ट मार्गदर्शन दिया उसके लड़के श्री उद्धव जी ठाकरे के क्रियाकलाप शायद ही बाला साहेब की आत्मा को संतुष्टि प्रदान करें।

एक विलक्षण विरासत को संभालने के लिए एक बड़ा दिल चाहिए और दृष्टिकोण विशाल चाहिए। हार्दिक पटेल जैसे गैर जिम्मेवार को समर्थन देकर श्री उद्धव जी ठाकरे ने ऐसा कार्य किया है जिसकी चारों तरफ आलोचना हो रही है।

श्री उद्धव जी को महान दृष्टा श्री अटल जी की पंक्तियाँ याद दिलाना चाहता हूँ –

"छोटे दिल से कोई बड़ा नहीं होता

टूटी टांग से कोई खड़ा नहीं होता।"

मोदी की हिम्मत

है लिए हथियार दुश्मन ताक में बैठा उधर,

और हम तैयार हैं सीना लिए अपना इधर।

खून से खेलेंगे होली अगर वतन मुश्किल में है

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।

लगातार एक साथ पुलिस के खास अधिकारियों की बड़ी टीम सवाल पर सवाल दागती रही। मोदी को दही की तरह बिलोया गया। सवालों की मशीन में पेला गया। मोदी ने हिम्मत नहीं

हारी। रोना धोना नहीं किया। माफी मांग कर पीछा नहीं छुड़ाना चाहा। बारह साल तक मोदी पर जबानी हमले ही नहीं हुए उन्हें जेल भेजने का भरपूर प्रयास किया गया। उनके नजदीकी लोगों को जेल में डाल दिया। कई बड़े अधिकारियों को लालच देकर मोदी के खिलाफ बुलवाया गया। भारी षड़यंत्र हुए ... मोदी को गुजरात दंगों के लिए दोषी साबित करने के लिए एन.जी.ओ. के नाम पर काम कर रही षड़यंत्रकारी–– कई गेंग ने देश विदेश में मोदी के खिलाफ भारी दुष्प्रचार किया। दुष्प्रचार से प्रभावित अमरीका ने तो मोदी को वीजा नहीं देने का निर्णय किया। मोदी विरोधी कुछ आई.ए.एस. और आई.पी.एस. हाइकमान के इशारों पर नाचने की खबरें आती रही। मोदी विरोधी अफसरों के परिवारों को चुनावी टिकटों से नवाजा गया। वो हारते नही ंतो षड़यंत्र और भारी होते।

पता नहीं किस मिट्टी के बने हैं हमारे नरेन्द्र मोदी जो ना झुकते हैं ना देश को झुकने देना चाहते हैं। कोई भी देश ऐसे ही विश्वगुरू नहीं बन सकता जब तक उस देश को कोई चाणक्य ना मिले और चन्द्रगुप्त ना हो। व्यक्तिगत सुख का त्याग करके चाणक्य ने भारत को विश्वगुरू बनाया और त्याग, बलिदान और धैर्य से मोदी भी भारत को विश्वगुरू बना सकेंगे।

झूठे झगड़े

बहुत मामलों में हमारे ज्ञान, समझ और धार्मिक मान्यताएं झूठे झगड़ों में उलझी रहती हैं। ऐसा ही एक झगड़ा है एकेश्वर वाद और बहुदेव वाद का और सुख दुःख का।

देखे कुछ उदाहरण :–

पढना और गुनना

पुरानी कहावत है कि पढ़ने से भी ज्यादा जरूरी है गुणना। गुणना यानि पढ़ाई पर मंथन करना, मनन करना और पढ़े हुए सिद्धान्तों को व्यवहार की कसौटी पर कसना। ज्ञान का व्यवहारिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सैद्धान्तिक ज्ञान। ज्ञानी को व्यवहारिक ज्ञान नहीं होगा तो क्या होगा –

"हमारे प्रोफेसर साहेब इतने विद्धान हैं कि उनको घोड़े के एक हजार अर्थ आते हैं।

फिर भी जब भी वो बाजार जाते हैं तो घोड़े की जगह, खच्चर खरीद लाते हैं।"

सकारात्मकता

किसी बात में बहुत घुमाव हैं तो जरूरी नहीं कि वह तकलीफ देह ही हो। जलेबी की घुण्डियाँ स्वाद और ज्यादा बढ़ा देती हैं। जीवन में उतार–चढ़ाव और मोड़–तोड़ बहुत बार सकारात्मक व्यक्ति के जीवन को और अधिक आनंद मय बना देते हैं। सकारात्मकता बहुत जरुरी है

सगुन और निर्गुण

स्वामी रामसुखदास ने सही कहा है कि निर्गुण और सगुण का झगडा माचिस में छुपी आग के समान है। माचिस में निर्गुण अग्नि है जो घर्षण यानी तपस्या से सजीव यानी मूर्तरूप ले लेती है। स्वामी विवेकानंद और स्वामी रामसुखदास इसी कारण मूर्ति पूजा को भी सार्थक मानते हैं। ये मूर्तिपूजा और एक ईश्वर की पूजा में भेद नहीं मानते थे।

सुख और दुख

स्वामी रामसुखदास जी एक और प्रसंग सुनाते थे। एक गाँव में डाका पड़ा। दो भाई लुट गये। एक ही हाल में एक रोने लगा और एक खुशी मनाने लगा। एक ही परिस्थिति से गुजरते हुए एक व्यक्ति सुखी तो दूसरा दुखी। सुखी वह था जो कह रहा था माल भले ही गया पर जान बच गई। दूसरा दुखी था कि सब माल चला गया। नतीजा यह निकला कि सुख दुःख भी वैसे ही हैं जैसा जो कोई मान लें। गोस्वामी तुलसीदास जी ने शायद इसी कारण से सुख को ईश्वर के अधीन नहीं माना है।

"सुनो भरत भावी प्रबल विलख कहेऊ मुनिनाथ

हानि–लाभ, जीवन–मरण, यश–अपयश विधि हाथ।

सार्थकता----- विरोध से समझौते की

''जिन्दगी तूने मुझे कब्र से कम दी है जमीं
पैर फैलाता हूं तो सर दीवार से टकराता है''

– बशीर ब्रद

भारतीय राजनीति ऐसे मोड़ पर आ गई है जब बार–बर ऐसा हो रहा है कि विरोधियों से समझौता करना मजबूरी होती जा रहा है। कश्मीर में जम्मू क्षेत्र में भाजपा और घाटी में पी.डी.पी. को बहुमत दे दिया गया। अब या तो ये दोनों विरोधी किसी मध्यम मार्ग पर आयें या दुबारा चुनाव कराये जावें। जनता को बार–बार चुनाव से बचाने के लिए समझौता मजबूरी तो है लेकिन समझौता ऐसे हो कि देशहित से समझौता ना हो।

जम्मू कश्मीर में भाजपा ने धुर विरोधी पी.डी.पी. से समझौता किया तो बहुत आलोचना सहन करनी पड़ी लेकिन जब पीडीपी की मुख्यमंत्री ने आतंकियों को फटकार लगाई और शिवलिंग पर दूध चढ़ाया तो लोगों को इस गठबंधन मे काफी सार्थकता नजर आई। जो महबूबा प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उग्रवाद का समर्थन कर रही थी उसने पत्थरबाजों पर पैलेट गन दागे जाने का समर्थन कर दिया। गठबंधन की सार्थकता तभी है जब आपका विरोधी अपनी कट्टर मानसिकता छोड़ कर किसी स्वीकार्य मध्यम मार्ग पर आ सके।

"कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता
कही जमीं तो कहीं आसमां नहीं मिलता।"

अब ज्यों ज्यों वोट बैंक का दबाव बढ़ रहा है त्यों त्यों महबूबा के सुर बदलने लगे हैं लेकिन स्थिति काबू करके मोदी जी जरूर कोई सार्थक हल तलाश लेंगे ऐसी उम्मीद है।

नीतीश जी ने बिहार चुनाव में मोदीजी पर बहुत कर्कश हमले किये लेकिन नमो के धैर्य के कारण सकारात्मक परिणाम निकले और आज धुर विरोधी पक्के समर्थक हो रहे हैं क्योंकि नमो के सामने खुद का नहीं देश का हित सबसे पहले है।

काली रात खत्म होगी

"मुझको जंगल दिया है जीने को
बुज दिलों को मचान कब देगा?
जुल्म तो बेजुबान है लेकिन
जख्म को तू जबान कब देगा?

– शीन काफ निजाम

लाल कोरीडोर के 150 जिले नक्सलवाद से पीड़ित रहे। दिल्ली की सत्ता यह सोचकर सोती रही कि आग दिल्ली से दूर है। भारत का शांतिप्रिय नागरिक उग्रवाद और आतंक के जुल्म सहता रहा और उम्मीद करता रहा कि कभी तो काली रात खत्म होगी और कभी तो सूरज उगेगा लेकिन करीब आधा भारत पीड़ा दर पीड़ा सहता रहा ।

जब–जब चुनाव आये तब–तब विघटनकारी तत्वों का पोषण किया गया या उनकी ज्यादतियों की अनदेखी की गई। हजारों कश्मीरी पंडितों पर जुल्म ढाये गये और उन पर तब तक जुल्म किये गये जब तक वो अपने घर–सम्पत्ति छोड़ कर भागने को मजबूर ना हो गये। देश जलता रहा और दिल्ली की सत्ता देखती रही। हम भी चिन्तन करें कि पीड़ितों के हक में आवाज बुलन्द ना करने के लिए हम भी तो दोषी हैं।

वोट बैंक या कैंसर

''भरा नहीं जो भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं
हृदय नहीं वो पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं.''

एक पक्ष यह है ———

"मुल्क तेरी बरबादी के आसार नजर आते हैं।
चोरों के संग पहरेदार नजर आते हैं।
खण्ड खण्ड में खण्डित भारत रो रहा है जोरों से
हर जाति, हर धर्म के ठेकेदार नजर आते हैं।"

लेकिन अटल बिहारी वाजपायी की उम्मीद सच निकलेगी. इस साधारण से लेखक को पूरा विश्वास है कि **"अँधेरा छंटेगा –– सूरज निकलेगा."**

हमने यह देख लिया कि चुनाव में वोट बैंक ललचाते हैं और देश प्रेशर ग्रुपों में विभाजित हो कर कमजोर हो रहा है। सरकारें और पाटियाँ तब तक नहीं सुधरेगी जब तक देश में हम कुछ सार्थक और राष्ट्रवादी प्रेशर ग्रुप नहीं बनाते रहेंगे। नमो ने हमें देश को प्रथम स्थान पर रखने का रास्ता दिखाया है अतः इस रास्ते पर चलना ही हमारे हित में है।

सबका साथ और सबका विकास के मोदीजी के नारे में कोई जातिवाद नहीं है। कोई धार्मिक भेदभाव नहीं है। एक भारत – श्रेष्ठ भारत किसी वर्ग के लिए नहीं है यह सारे देश के कल्याण के लिए है।

बीच बीच में इस महान देश के रास्ते में ऐसे मोड़ आते रहे हैं जिसमें संकीर्ण राजनीति ने देश का नुकशान किया है और अपरिपक्व और स्वार्थी लोगों ने देश को नुकशान पहुंचाया है। हरियाणा में बड़े आन्दोलन के बाद जाट जाति में जो शुचिता दिखाई दी उसमें भी महाराजा सूरजमल जैसे महान लोगों की विरासत का प्रभाव भी जरूर रहा होगा। अपने पूर्वजों की महान विरासत लोगों को तंग दायरों से बाहर निकालने का काम करती जरूर है केवल जरूरत है लोगों को उनका आत्मसम्मान की याद दिलाने की। हाल के दिनों में भी लोग देख रहे हैं के कुछ जातिवादी युवक गुजरात में बड़ी बड़ी पार्टयों को खूब नाच नचा रहे है। महान देश भक्त सरदार पटेल की विरासत को भारी नुकशान पहुंचा रहे हैं. लेकिन गुजराती पटेलों से पूरी उम्मीद है कि वे जातिवाद के छोटे हित छोड़कर अपना बड़प्पन कायम रखेंगे और जातिवादी राजनीति को सबक सिखायेंगे। गुजरात ने मोदीजी के सम्मान को हर बार कायम रखा है और इस बार भी कायम रखेंगे। मोदीजी एक महान दृष्टा और अद्भुत सृष्टा हैं और उनके प्रयास दुनिया पहचान रही है। हम गलती कैसे करेंगे ––– ऐसे नादानों को अपना भला समझाने की जरूरत है क्योंकि ––––––

"है बजा उनकी शिकायत, पर इसका क्या इलाज
बिजलियाँ खुद अपने ही गुलशन पे गिरा लेते है लोग।"

–दाग दहलवी

"आजादी की रक्षा के लिए जरूरी है कि हम जातिवाद को पूर्णतया नकार देवें." – सरदार पटेल

भारत की अस्मिता

"हिमगिरि से सागर पर्यन्ता महिमा अविनाशी।
भारत माता प्रेम, दया, करूणा की विश्वासी।
लेकिन जगत गुरू भारत का फिर उद्घोष करें।
गीता वाले पाञ्चजन्य का विजयी घोष करें।।"

– नरेन्द्र मिश्र

"राष्ट्र की सार्व भोम सत्ता की कर्मभूमि
शौर्य शक्ति धार सिंचि रहती है।
शांन्ति तभी रहती है जब उसकी रक्षा में
अहर्निष नंगी तलवार खिंची रहती है।।"

– नरेन्द्र मिश्र

वर्षो की तड़प के बाद भारत में नई उम्मीद जगी है। उम्मीद बनी है कि अब उन नेताओं के अच्छे दिन नहीं आयेंगे जो भारत की अस्मिता को पूरा सम्मान नहीं देते हैं।

देश सबसे पहले रहना चाहिए । मैं से पहले हम और हम सबसे बड़ा है देश। देश बचेगा तो हम बचेंगे। कोई व्यक्ति, समूह या समाज देश से बड़ा नहीं है और ये सब तभी सुरक्षित रहेंगे जब देश सुरक्षित रहेगा। आइये हम सब देश की चिन्ता करें। देश की रक्षा में हमारी रक्षा है और देश के सम्मान में हमारा सम्मान है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जब कहते हैं कि "मैं देश नहीं झुकने दूंगा– मैं देश नहीं मिटने दूंगा।" – तो वे हमें याद दिला रहे हैं कि देश हम सबसे बड़ा है। हमसे पहले है देश।

भूलना नहीं

देश लुटता रहा और वो देखते रहें

"तू इधर उधर की ना बात कर
बता ये कारवाँ क्यों लुटा।
मुझे राहजनी का गिला नहीं
तेरी रहबरी का सवाल है।"

हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी संसद में सुषमा जी स्वराज के इस सवाल का जवाब नहीं दे पाये थे। जबाब से बचने के लिए अपनी चुप्पी की प्रशंसा की और आत्ममुग्ध होकर चलते बने।

जबाब बहुत बातों का आना था।

देश की विभिन्न घोटालों के मार्फत दस लाख करोड़ से अधिक–.....कितने..... दस लाख करोड़ से अधिक का नुकसान पहुँचाया गया। इतनी बड़ी राशि जो कैलकूलेटर में लिखी भी ना जावे। रूपये बिछाने लगो तो कश्मीर से कन्या कुमारी तक बिछायें तो भी सड़क छोटी पड़ जाये।

बर्बादी की ये भी दास्तानें

वैज्ञानिकों के खिलाफ षड़यंत्र

"लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में
तुम तरस नहीं खाते, बस्तियाँ जलाने में।"

कुछ दिन पहले ईरान के परमाणु कार्यक्रम से जुड़े एक वैज्ञानिक की मौत ने पूरे विश्व को अपनी और खींचा था परंतु ये बहुत ही कम लोगों को पता होगा कि भारत के सर्वोच्च प्रतिष्ठित परमाणु प्रतिष्ठान और इसरो में पिछले 13 वर्षों में आधा दर्जन भारतीय वैज्ञानिकों की अकाल मौत हो चुकी है। ईरान की सरकार ने ऐसी घटनाओं से सबक लेकर अपने सभी वैज्ञानिकों को कड़ी सुरक्षा उपलब्ध करवाई परंतु भारतीय संस्थान में स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है।

मैं सोने वालों को कुछ ऐसी दास्तानें सुना रहा हूँ जिनको सुनकर संभव है उनकी आँखे खुल जायें और हो सकता है भविष्य में देश को ऐसे अत्याचारों और बरबादी से बचाया जा सके।

सन् 2000 से मई 2014 के बीच देश के करीब 11 वैज्ञानिक या तो मार दिये गये या गायब कर दिये गये या उन पर झूठे मुकदमें लागू करके उन्हें बर्बाद कर दिया गया।

एस नांबी नारायण और उनके साथियां को जासूसी के झूठे केस में फँसाया गया। इसरो के वैज्ञानिकों को नब्बेके दशक के बाद झूठे षड़यंत्र केस में फँसा दिया। क्रायोजेनिक इंजन तैयार करने के काम में जुटे वैज्ञानिकों के साथ षड़यंत्र किया गया। केरला पुलिस ने वैज्ञानिक नांबी नारायण आदि को गिरफ्तार कर लिया गया। सी.बी.आई ने दो साल की मेहनत के बाद पाया कि क्रायोजैनिक इंजन से संबंध में कोई जानकारी विदेश को नहीं दी गई। इस मामले में नांबी नारायण को माननीय सुप्रीम कोर्ट तक ने निर्दोष पाया। यदि इसरो के वैज्ञानिकों को झूठे मामलों में नहीं फँसाया गया होता तो भारत सन् 2007 में ही क्रायोजेनिक इंजन तैयार कर सकता था। झूठे केस की जानकारी मिलने पर नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री ने केरल जाकर नांबी नारायण से सारे मामले को समझा।

कैसे सुधरे राजनीति

''देश यह कैसा बनाया आपने
जिन्दगी भर पैसा बनाया आपने
शाम के जलते दिये भी बुझ गए
कैसा दीपक राग गाया आपने'' – **नरेन्द्र मिश्र**

एक तरफ नरेन्द्र भाई मोदी जी हैं जो राजनीति की बजाय राष्ट्रनीति को प्राथमिकता देते हैं तो दूसरी तरफ ऐसे लोगों की भरभार हैं जो घटिया राजनीति को ही अपना धर्म समझने में अपना बड़ा धर्म समझते है।

यह खुशी की बात है कि जागरूक जनता ने ऐसी गिरी हुई राजनीति को सबक सिखाना शुरू किया है लेकिन दुष्ट लोगों की जड़ो तक मट्ठा डालना जरूरी है।

यह कैसी राजनीति है कि सत्ता की चोटी पर बैठी एक नेता ने वर्षों तक अपने विदेशी दौरे गुप्त रखे। उनके उत्तराधिकारी भी वैसा ही कर रहे हैं। पहाड़ की चोटी पर बैठे व्यक्ति और सत्ता के शीर्ष लोगो का जीवन पूर्णतः पारदर्शी होना चाहिए।

यह कैसी राजनीति है कि लोग आतंकी औसामा को औसामा जी कहकर संबोधित करें। आतंकियो की मौत पर राजनीति मातम मनाये। सेना पर पत्थर फेंकने वालों के प्रति सहानुभूति और सैनिकों की शहादत के प्रति उदासीनता बहुत चिन्तनीय है।

फरवरी 2017 में देश के पांच राज्यों और खासकर उत्तरप्रदेश के चुनाव में जो जागरूकता जनता ने दिखाई है वह एक अच्छी उम्मीद जगाती है। तुष्टीकरण को अनदेखा करते हुए उत्तर प्रदेश की जनता ने जो नया उदाहरण पेश किया है वह आशावादी संकेत दे रहे हैं।

क्यों बनी ऐसी धारणा

जिस देश में गाँधी – तिलक – पटेल और सुभाष जैसे राजनेताओं को पूजा गया उस देश में राजनीती के लिए इतनी खराब धारणा क्यों बनी – विचार करो इसके लिए कौन लोग जिम्मेवार हैं––

राजनीति के बारे में धारणा बनी–

"सियासत एक ऐसी हसी खातून है,
जिसमें सर से पैर तक नाखून ही नाखून हैं।" **– अज्ञात**

संस्कार विहीन समाज के लिए कहा गया–

"नई हवाओं की सोहबत बिगाड़ देती है
कबूतरों को खुली छत बिगाड़ देती है।
मिलाना चाहा जब भी आदमी को आदमी से
यह सियासत सारा खेल बिगाड़ देती है।'' **– राहत इन्दौरी**

देश में छाई घोर निराशा का फायदा चालाक और देशद्रोही लोगों ने उठाने की कोशिश की। कुछ लोग ऐसे भी आये जिनकी कथनी करनी में बहुत अन्तर था। उनके मुँह में राम बगल में छुरी रही। ये ऐसे लोग थे–

"अन्दर का जहर चूम लिया और धुल कर आ गये
कितने शरीफ लोग थे सब खुलकर आ गये।"

आप समझ गये होंगे कि देशद्रोही टीमें कौन–कौन सी थी। यह तो गनीमत रही कि ये लोग खुद ही नंगे होने लगे वरना देश का भारी नुकसान कर सकते थे।

मोदीजी का नेतृत्व देश को नहीं मिलता तो न जाने कितनी खरपतवार देश के विकास की फसलों को बर्बाद कर देती। अब जिम्मेवारी हमारी है कि इन चालाक लोगों को समझें, इनकी मीठी बातों में ना आवें, इनके लुभावने वादों के पीछे छुपी नियत समझें। हम कई बार धोखा खा चुके और अब देश की धोखा बर्दाश्त करने की क्षमता नहीं है। देश को कमजोर करने की साजिशें जारी है। हम आगे भी अबकी बार की तरह देशभक्तों को चुनें और देश को बचायें। सरकार हम बनाते हैं। अतः हमारी गलती हमारे लिए ही घातक होती है।

मोदी के सराहनीय कार्य

शत्रुओं से चारो तरफ से घिरे हुए देश के पास मनमोहन सरकार में एक सप्ताह के लिए भी गोला बारूद पर्याप्त न होने की बात हमारे तत्कालीन सेनाध्यक्ष ने 2013 में कही तो देश सन्न रह गया।

मोदी जी ने शपथ लेने के बाद थल सेना, वायु सेना और नेवी के हाथ मजबूत करना शुरू कर दिये। अच्छी किश्म के विमान, पनडुब्बियां, तौपें आदि के बंदोबस्त हो रहे हैं। सैनिको की सुरक्षा हेतु बड़ी संख्या में बुलेट प्रूफ गाड़िया और बुलेट प्रूफ जैकेट खरीदे जा रहे हैं। मिसाइल कार्यक्रमों में तेजी आई है। देश निराशा व अवसाद से बाहर निकल रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों की बंदर बांट बन्द हुई है और ये संसाधन आय के बड़े स्रोत बन रहे हैं। सोलर सिस्टम को सबल बनाया जा रहा है। वर्षा और नदियों के जल संग्रहण पर ध्यान दिया गया।

किसानों को सिंचाई के भरोसेमन्द साधन बनाने हेतु और बांधो व नहरों के लिए अभूतपूर्व बजट आवंटन हुए है। पचास हजार करोड़ रूपये।

यूरिया खाद की काला बाजारी रोकने हेतु नीम कोटिंग शुरू किया गया।

विभिन्न माफिया वर्गों पर नियंत्रण शुरू हुए जिसका सार्थक प्रभाव आ रहा है।

युवकों में बेरोजगारी दूर करने के लिए कौशल विकास के प्रशिक्षण ऐतिहासिक कदम हैं। राज्यों द्वारा इसकी पालना में कोताही की शिकायतें रोकी जानी जरूरी हैं। रोजगार सृजन के कार्यों में राज्यों में बहुत ढिलाई हो रही है।

क्यों चलना मोदी के साथ

मोदीजी ने किसानों व नागरिकों को जागरूक किया कि कुदरत से मुफ्त मिल रही सूर्य की ऊर्जा और बादलों के जल संग्रहण की तरह बड़े पैमाने पर ध्यान देने की जरूरत है। ये दोनों साधन अक्षय हैं अतः इनका भरपूर लाभ उठाना चाहिए। हर नागरिक को चाहिए कि कुदरत के अक्षुण्ण भण्डार का भरपूर लाभ उठायें।

मोदी जी ने गुजरात में नदियों को जोड़ा और समुद्र में जाने वाले जल को बाँध कर प्रदेश के लिए उपयोगी बनाया। यह ऐतिहासिक कदम अब पूरे देश में उठाया जा रहा है।

भूमि की उर्वरा शक्ति की पहचान हेतु प्रयोगशालायें बनाई जिससे भूमि के उपजाउपन को बढ़ाया जा सके। इस कार्य को जन सहयोग से ही सफल बनाया जा सकता है।

युवको को मुद्रा योजना द्वारा अवसर मिला है कि वे छोटे और मध्यम उद्योग लगाये जिससें नौकरी मांगने की बजाय नौकरी देने वाले बनें।

सबका साथ और सबका विकास का नारा एक साधारण बात नहीं है। इस विचार को सभी नागरिक सार्थकता से अंगीकार करते हैं तो आपसी द्वेष और ईर्ष्या खत्म होंगें तथा भाईचारा बढ़ेगा। जो सरकार नागरिक–नागरिक में भेद न करे वह सरकार सम्मान की हकदार है।

तुष्टिकरण ने देश को भारी बर्बादी की तरफ धकेला है और मोदी जी ने तुष्टीकरण के भूत से भारत को मुक्त किया है। व्यवस्था और विकास में समान भागीदारी से किसी को शिकायत नहीं हो सकती।

मोदीजी ने कौशल विकास के लिए बहुत बड़े प्रयास शुरू किये हैं लेकिन कौशल बढ़ाने हेतु हो रहे प्रशिक्षणों का जब तक भरपूर लाभ लोग नही उठायेंगे तब तक पूरा लाभ नहीं होगा। लोगों को याद रखना चाहिए कि कर्मों में कुशलता ही योग है।

क्या दोष था उनका ?

मेरी पुस्तक जागें और जगाएं से कुछ अंश जरूरी होने से दोहरा रहा हूँ यह बात जनवरी 2014 में लिखी थी लेकिन निर्दोष पुलिसवालों की प्रताड़ना का दर्द अब भी महसूस हो रहा है :–

'' तेरे मेरे बीच कहीं है

एक घृणामय भाईचारा।

आपस के इस महासमर में

तू भी हारा, मैं भी हारा'' .. कविवर ताराप्रकाशजी जोशी

उन्होनें उस खूंखार अपराधी को मारा था जिस पर गंभीर अपराधों के चालीस से अधिक मुकदमें दर्ज थे। उस आतंकी को मारा गुजरात पुलिस ने। उसके गाँव में तलाशी के दौरान तीन दर्जन से अधिक राइफल एक कुएं में छुपाई गई मिली। ये राइफलें मध्यप्रदेश पुलिस ने पकड़ी। मध्यप्रदेश में सैकड़ों नाजायज हथियार पकड़े जाने से गुजरात सरकार पर पूर्वाग्रह के आरोप अपने आप कमजोर हो गये। फिर भी लोग मोदी पर दोष लगाते रहे।

इस खूंखार अपराधी सोहराबुद्दीन को एनकाउन्टर में मारे जाने वाले पुलिस अधिकारियों को सालों तक जेल में डाला गया। ऐसे कैसे बचेगा देश।

इसरत जहाँ को पाक मीडिय ने माना कि वह फियादीन थी लेकिन भारत के फर्जी बुद्धिजीवी और देशद्रोही एन.जी.ओ. कोशिश करते रहे कि ज्यादा से ज्यादा पुलिस वाले जेल में जावें। मानव अधिकार की आड़ में दानव अधिकार की पैरवी होती रही।

मीडिया में ऐसे लोग सक्रिय रहे जिन्होंने आंतकियों की परोक्ष और अपरोक्ष पैरवी की। ऐसा लग रहा था कि जैसे कुछ लोग देश में कभी भी भाईचारा बनने ही नहीं देंगे और धर्म जाति का जहर घोलते रहेंगे। ऐसे लोग मीडिया में खूब हावी रहे। तीस्ता जावेद शीतलवाड़, राजदीप देसाई, बरखादत्त, रवीश कुमार जैसे लोगों की भूमिका की जाँच होनी चाहिए। विचारणीय बिन्दु यह भी है कि भगवान राम को बाली को मारने के लिए छल करना पड़ा। मर्यादापुरूषोत्तम को मजबूरी में छल जायज जगा तो आज की हमारी पुलिस को ऐसी छूट क्यों नहीं।

क्या – क्या था जरूरी –

देश के लोगों ने जो परिवर्तन किया वह बहुत ही जरूरी हो गया था। हम तन्द्रा में थे और हम भूल गये थे कि हमारी भी देश के प्रति कोई जिम्मेदारी है। कमजोर नेतृत्व के चलते देश लुटता रहा। देश पर समर्पित नेता, अफसर और पत्रकार प्रताड़ित होते रहे। पंचतंत्र के बन्दर राजा की कहानी याद आई कि किस तरह सत्ता पर बैठे शीर्ष के अच्छे लोग बेबस हो गए थे। सत्ता उन हाथों में चली गई जिनके कोई संवैधानिक अधिकार ही नहीं थे। कई लोग संविधान से बड़े दिखाई देने लगे। परदे के पीछे की सत्ता ने तो संविधान को बार–बार अपमानित किया। लोगों का सम्मान छीनकर उन्हें परोपजीवी बनाया। ईमानदारी फालतू की चीज और प्रतिभा को नकारा साबित किया और भेदभाव और मुफ्तखोरी को बढ़ावा दिया। सलाहकार भी अवसरवादी और चापलूस रखे गए। जहाँ सलाहकार विदुर जैसे हंस स्वभाव के लोग होने चाहिए थे वहाँ शकुनी जैसे कौवे भी सलाहकार बन बैठे।

क्यों नहीं याद आये ये काम

देश को तन्द्रा से जगाना जरूरी था और मोदी ने युग पुरूष का काम किया।

हाल ही के कुछ सालों में मोदीजी ने हमें वह सब दुबारा बताया जिसे जानकर भी हम अंजान रहे।

67 साल में स्कूलों में छात्राओं के लिए टॉयलेट तक नहीं बनाए गए।

महिलायें सड़क पर शौच करने को मजबूर होती रही।

सरकारी कर्मचारियों में कार्य संस्कृति नहीं पैदा हुई।

खुद पीएम को लोगों को टाइम से दफ्तर आने के लिए कहना पड़ा।

देश के कौने–कौने को कूड़ाघर बनाकर रख दिया गया।

देश बलात्कारियों और आतंकवादियों का अड्डा बन गया।

देश को जाति और धर्म के नाम बांटा गया।

देश की सुरक्षा को खतरे में डाला गया।

माफिया लोगों को कभी छूट दी तो कभी दर गुजर किया।

हमारी युवा प्रतिभा पलायन करती रहे और हम सब कुछ विदेश से निर्यात करते रहे ....

सोचिये राष्ट्रभक्ति से सराबोर देश को 1947 में और उसके बाद क्या दिशा प्रदान की गयी ?

मोदी जी ने देश को आईना दिखा दिया .....

हमें नींद से वैसे ही जगाया जैसे वीर लाल बहादुर शास्त्री ने जगाया।

देश पिछले काफी वर्षों से वैसे ही सो रहा था जैसे कोई हताशा में अफीम खाकर सो रहा है।

सबका साथ–सबका विकास

देश को सेकुलरिज्म का सही अर्थ मोदीजी ने दिया। कांग्रेस और सपा, बसपा और अन्य काफी लोग तुष्टीकरण को ही सेकुलरिज्म कहते रहे। वे यह सब जानबूझकर कर रहे थे। वोट–बैंक के लिए 'बांटो और राज करो' की अंग्रेजी रणनीति पर चल रहे थे।

मोदीजी ने ऐसी परिभाषा दी जिसको अमेरिका तक ने सराहा .....

'सबका साथ–सबका विकास', इस परिभाषा में कोई भेदभाव नहीं है। इसमें राजधर्म का सही पालन है और यह सुख और समृद्धि का सर्वोत्तम रास्ता है।

जब सवा सौ करोड़ का साथ होगा तो सबका विकास निश्चित है।

वैसे भी मोदीजी की इस अवधारणा को सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद का भी भरपूर समर्थन है .. ..

''संगच्छद्वं संग्वद्द्वं संवो मनासी जानताम,

देवार्भागम यथापूर्वे संजनाना उपासते।

समानी व आकुति समनाम हृदानिवः,
समानमस्तु वो मनो, यथावः सुसहासति,''

बड़े लोगों से अपेक्षा
बर्बादी या आबादी

शिखर पर जो भी लोग बैठे हैं वे आम आदमी से अलग विशेषाधिकार रखते हैं और जब वे विशेष हैं तो निश्चित है कि उनकी जिम्मेवारियां भी विशेष होनी चाहिए. उनका जीवन पारदर्शी होना चाहिए. अब आप अंदाज लगा सकते हैं कि शिखर पर बैठे कौन लोग हैं जो अपने दौरे और संपती का व्योरा गुप्त रखते हैं. जिनके पास घोषणा से अतिरिक्त भी बहुत संपत्ति है. मेरी जानकारी में मोदीजी की आमदनी और संपत्ति का हिसाब तो सबके सामने है, जिनका हिसाब सबके सामने नहीं है उनसे मतदाता को हिसाब माँगना चाहिए और जो अपने दौरे और संपत्ति का हिसाब गुप्त रखते हैं उनका क्या किया जाना चाहिए. क्या शिखर पर बैठे लोगों का छुपा छुपी का खेल वाजिब है. मेरी राय में तो में तो छुपा छुपी का खेल वो लोग करते हैं जिनके मन में कोई बेईमानी है उनको सबक सिखाना चाहिए या नहीं चाहिए. मेरी मानो तो चोटी पर बैठे लोगों को बैमानी की सजा जरूर मिलनी चाहिए वरना वे देश को बर्बाद कर देंगे. आबाद रहना है या बर्बाद होना है यह हमारे खुद के हाथ में है.

अच्छे दिन के मायने

अच्छे दिन के मायने ये नहीं है कि सरकार हमें बैठे–बैठे खिलाने लगेगी बल्कि मायने ये हैं कि सरकार हमें उचित सुरक्षा दे। देश और विदेश में हमारे सम्मान में बढ़ोतरी करे और सरकार देश को सुखी और समृद्ध बनाने हेतु ईमानदारी से प्रयास करे। मोदी सरकार यह सब कर रही है। इन प्रयासों के फल हम तक पहुँचने में समय लगेगा लेकिन यह तो हम भी देख रहे हैं कि जो बाड़ खेत को खा रही थी वहीं अब खेत की सुरक्षा में जुट गई है। सरकार पर हमारा भरोसा देश में बढ़ा हैं और विदेशों में देश का सम्मान बढ़ा है।

मोदीजी को गुजरात में विलक्षण विकास के कीर्तिमान प्रस्तुत करने का गौरव मिला है लेकिन वोटबैंक वाले उनका लोहा मानने की बजाय उनकी खोखली आलोचना करते रहे हैं। उनकी आलोचना वो लोग करते रहे हैं जो घुटनों के बल पर भी नहीं चलना सीखे। उनके लिए कहना उचित होगा कि –

''जो पहुँच गए हैं मंजिल पर उनको तो नहीं है नाजे सफर।

दो कदम अभी जो चले नहीं रफ्तार की बातें करते हैं।''

आप जानते हैं कि कैसे कैसे एन.जी.ओ. और चापलूसों को पनपाया जिनका कोई बौद्धिक और सामाजिक आधार नहीं था फिर भी वे अपने बूते से बाहर की बातें करके भय और लालच से ग्रसित रहे। लोग पदम पुरस्कार तक प्राप्त करते रहे। संवधौनिक संस्थाओं का मखौल उड़ाया गया। ऐसे लोगों के लिए महान कवि दुष्यंत कुमार के शब्दों में कहना ही होगा –

''सुविधा में बिके हुए लोग, कुहनी पर टिके हुए लोग।
चर्चा बरगद पर कर रहे, गमलों में उगे हुए लोग''

ऐसे आयेंगे अच्छे दिन

हर देश में अच्छी सरकार जनता को ऐसा वातावरण देती है जिसमें अच्छे दिनों की और रफ्तार बनती है लेकिन अच्छे दिन के लिए राज और समाज को कदम से कदम मिलाना पड़ता है। अकेली सरकार से सब समस्याओं का हल नहीं निकलता। इसीलिए मोदीजी पहले दिन से कह रहे हैं कि देश के सवा सौ करोड़ लोग प्रगति हेतु एक कदम बढ़ायेंगे तो देश एक पल में सवा सौ करोड़ कदम आगे बढ़ेगा। कोई भी देश तब तक प्रगति नहीं कर सकता जब तक कि उस देश के

नागरिकों को उत्साह भरने वाला नेतृत्व ना मिले। युग पुरूष मोदी ने अपने आचरण, कर्म और व्यवहार से देश में नई उमंग और नये उत्साह का संचार किया है।

देश आगे बढ़ता है आशावाद से और सकारात्मक सोच से। ये दोनों पिछले कई साल से खत्म थे लेकिन मोदीजी के चमत्कारी नेतृत्व और आदर्श उदाहरणों ने इस आशा, विश्वास और सकारात्मकता को जिन्दा किया है।

बुरे दिन किनके –––

समझदार लोग जानते हैं कि मोदी राज में इमानदार और मेहनती लोगों के लिए थोडा समय दिक्कतों का रहेगा लेकिन आखिरकार उनके अच्छे दिन आयेंगे लेकिन उनके अच्छे दिन नहीं आने वाले जिनका इतिहास घोटालों और हेराफेरी और बेईमानी का रहा है। नोटबंदी में उनके बोरे भरे नोट समस्या बने। वे गरीबों के हाथ जोड़ रहे थे कि हमारा कुछ पैसा आपके बैंक में डाल लो या पैसे बदलवा लाओ। जी एस टी भी इमानदार व्यापारियों को ज्यादा तंग नहीं करेगी लेकिन टेक्स चोरों के तो बुरे दिन आयेंगे। गरीब और इमानदार लोगों का दिल जलता है जब बेईमान लोग नाजायज दौलत के अहंकार के बूते पर अन्याय और अत्याचार करते हैं। नोटबंदी के बाद गरीबों को परेशानी तो हुई लेकिन चोरों में घबराहट देख कर खुशी भी हुई। मोदीजी के शासन में चोर उचक्कों को और भी परेशानी देखनी पड़ेगी क्योंकि अब उनका नंबर आने वाला है जिन्होंने खूब सारी बेनामी संपत्ति इकठी कर रखी है। कर चोरी करके काला धन दबा रखा है। प्रॉपर्टी और सोने में लगा रखा है। कई लोग ऐसे भी हैं जिनके एक ही परिवार के दर्जनों प्लाट मिल जायेंगे। कोई कोई के पास तो सैकड़ों प्लाट की जमीन मिल जायेगी। गरीब 100 या 50 गज के प्लाट को तरसता है और ये लोग कई हजारों गज दबाये बैठे हैं।

आज 5 नवम्बर को खबर दूरदर्शन पर आ रही है कि करीब दौ लाख हेराफेरी वाली कंपनियों को पकड़ा है। हजारों करोड़ का धन नाजायज स्रोतों का जमा किया हुवा पकड़ा है। उम्मीद है मोदीजी चोर उचक्कों को चैन से बैठने नहीं देंगे। आम आदमी के लिए यह भी खुशी की बात होगी।

कौन असली सौदागर – मौत के

मोदीजी के खिलाफ 2002 से मई 2014 तक जो षड़यंत्र हुए उनको अमर क्रांतिकारी पंडित राम प्रसाद बिस्मिल की भाषा में निम्न प्रकार वर्णन कर सकते हैं–

''है लिए हथियार दुश्मन ताक में बैठा उधर
और हम तैयार हैं सीना लिए अपना इधर
खून से खेलेंगे होली अगर वतन मुश्किल में है
सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है. ''

आप जानते हैं कि – मौत का सौदागर – के बयान के बाद कौन लोग सक्रीय हुए और उस माहोल के क्या परिणाम हुए. नमो ने बहुत खतरनाक खतरे उठाये हैं। बारह साल तक उनकी जान को खतरे में डलवाने के काम हुए। जेल भेजने की तलवार लटकाये रखी। दुश्मनी खूब बरती, षड्यंत्र खूब किये लेकिन फौलादी पुरूष मोदी ने धैर्य और निर्भीकता से अपनी सार्थकता जारी रखी। गुजरात को अद्वितीय प्रदेश बनाया और शुचिता, दृढ़ता और न्याय के नये मापदण्ड पैदा किये। सारे घटनाक्रम का अब आप सही निर्णय कर सकते हैं. जानिये मौत के असली सौदागर कौन.----

अन्दर की बात–––

कुछ भी करो ––– मोदी को रोको–––

जो बात जनता में चलती रही है कि कांग्रेस ने मोदी को रोकने के लिए हर प्रयास किये ––––उचित और अनुचित। इस बात को प्रसिद्द लेखक एंडी मैरिनो ने वर्ष चोदह में साफ साफ लिखा। उनके लिखने का आज तक कोई खंडन नहीं देखने को मिला। ऐसे में जो लोग आरोप

लगाते हैं कि कांग्रेस नेतृत्व ने मोदी को रोकने के लिए हर हथकंडे अपनाए उस में दम है। कुछ लोग तो सोशल मीडिया पर यहाँ तक कहते रहे कि गुजरात में आतंक भले ही आ जाए लेकिन मोदी को रोको। कुछ भी करना पड़े ––– सही या गलत –––––सब रास्ते शामिल थे––––अब पाठक विचार करे कि मोदी को रोकने के लिए कांग्रेस का केन्द्रीय नेतृत्व कब कब कितना गिरा। गुजरात के हितों को कितना बर्बाद किया। सौ बात की एक बात यह है कि मोदी से दुश्मनी निकालने के लिए गुजरात के हितों की अनदेखी हुई। देखिये एंडी मैरिनो का कथन–

''THAT IS THE SOURCE OF CONSIDERABLE ANGST FOR LOCAL CONGRESS LEADERS WHO; OFF THE RECORD ;CONCEDE THAT THEY ARE UNDER TREMENDOUS PRESSURE FROM THE CENTRAL LEADERSHIP TO STOP MODI'S ASCENT—USING WHATEVER MEANS AVAILABLE.''----ANDY MARINO -----[ANGST MEANS ANGER]

यह कैसा मुख्यमंत्री

मोदी देश के पहले मुख्यमंत्री बने जिन्होंने अपनी माँ को घर तक नहीं बनवा के दिया लेकिन गुजरात की दोनों प्रमुख नदियों को जोड़ कर अटलजी की कल्पना साकार की।

गुजरात ने छः लाख वाटर बोडी बनवाई जिससे गुजरात भारत का पहला प्रदेश बना जिसमें भूमि के जलस्तर में गिरावट के बजाय बढ़ोतरी हुई।

गुजरात को बिजली की कमी वाले प्रदेश के बजाय बिजली सरप्लस राज्य बनाया।

कृषि उत्पादन की बढोतरी दर देश के मुकाबले तीन गुना हुई।

कच्छ भुज के भूकंप के बाद पुनर्निमाण की तेजी की दुनिया भर में सराहना हुई।

नहरों पर सोलर प्लांट लगवाए जिससे जगह की बचत हुई और पानी का वास्पीकरण बंद हुआ।

मैं ऐसे हालात बना दूंगा कि वे अपनी ही बेनामी सम्पति पर दावा भी नहीं कर पायेंगे।.....नरेन्द्र मोदी

सावधान – सिफारिशों से

देश में सिफारिशों का बहुत रिवाज चल पड़ा है – सिफारिश सुनने वालों से आग्रह है कि सिफारिश कहीं से आवे उसको सुनना तो ठीक हो सकता है लेकिन उस पर गुण–अवगुण के आधार पर ही विचार करना चाहिए। जब महान तपस्वी भीष्म पितामह कौरवों का साथ देने को मजबूर हो सकते हैं तो मजबूरी में कौन किसकी सिफारिश नहीं कर सकता। भय और लालच के वशीभूत होकर तो लोग रोज ही सिफारिशे करते रहते हैं। इस मामले में कवि ए.बी. सिंह की पंक्तियाँ जरूर याद रखें–

"भीष्म पितामह भी दे गए, कौरव पुत्रों का साथ
पता नहीं किसका कहाँ, दबा हुआ हो हाथ"

कुछ लोग अन्याय होते देखकर भी चुप रहते हैं। चाणक्य ने सही कहा है कि समाज का जितना बुरा बुरे लोगों ने किया है उससे ज्यादा भले लोगों की निष्क्रियता और उदासीनता ने किया है।"

हमारे युग कवि दिनकरजी ने सही कहा है कि :–

"समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।
जो तटस्थ है, समय लिखेगा उसका भी अपराध।"

मशहूर शायर रविन्द्र कृष्ण मजबूर ने भी क्या खूब कहा है–

"नेक नेक सब एक हैं, एक–एक नहीं नेक।"

जो लोग छुपकर अपराध करके बच निकलने की सोचते हैं उनको समझ लेना चाहिए कि जैसे पानी में कितने ही गहरे जाकर तेल को डाल देवें वह देर सवेर ऊपर आकर ही रहेगा । जयपुर के कवि आर.सी. गोपाल ने इस बात को बहुत अच्छे से कहा है–

"छुपकर जो तूने किये चतुराई से खास,
गुप्त चित्र उनके सदा चित्रगुप्त के पास ।"

अपराधियों को बचाने में सत्ताधारी लोग खूब लगे रहते हैं। ऐसे सत्ताधारी राजनीति में ही नहीं सब जगह हैं। चाहे राजनीति हो या अफसरशाही हो, चाहे पुलिस हो या पत्रकार हों, चाहे पैसे वाले हों या लठेत हों सबको याद रखना चाहिए कि अन्याय को समर्थन देने वालों को भुगतना ही पड़ेगा। पुत्रमोह से पीड़ित धृतराष्ट्र को भी भुगतना ही था। महान तपस्वी और भारत के सपूत भीष्म को भी भुगतना पड़ा। हमें जगाने वाले राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त न हमें सही मार्गदर्शन किया है–

"अन्याय सहकर बैठ रहना यह बड़ा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।"

सरकार से हमारी प्रार्थना है कि तीन बच्चों तक के छोटे परिवारों को रियायत का लाभ ज्यादा मिले और ज्यादा बच्चे वालों की रियायतें धीरे–धीरे कम की जाये।

और सुधरे चैनलों की भूमिका –

मोदीजी की लोकप्रियता से कुछ तो सुधार आया है और कुछ चैनल राष्ट्रहित में अच्छा काम कर रहे हैं लेकिन ज्यादातर के हाल क्या हैं–

"जिस बात की कोई बात नहीं,
उस बात की बातें होती हैं।
जिस बात की बातें होती हैं,
उस बात की कोई बात नहीं।"

किसी छोटे से विषय को उठाकर उसकी प्रपंच व्याख्या करना, तिल का ताड़ बना देना और बात का बतगंड़ बना देने में कुछ टीवी चैनल किंचित भी संकोच नहीं करते हैं।

कुछ लोग अपनी योग्यता दिखाने के चक्कर में भूल जाते हैं कि उनकी भी देश के लिए कोई जिम्मेदारी होगी। मोदीजी ने 'न्यूज ट्रेडर्स' का मसला सही उठाया है। 'न्यूज ट्रेडर्स' के प्रभाव का असर बहुत बार साफ दिखता है और कुछ की तो नीति और नियत पर संदेह साफ नजर आता है। 2002 से मई 2014 तक मोदी पर मीडिया ने मुड–मुड कर हमले किये। ऐसे हमले देश के लिए बहुत दुखदायी थे। मोदीजी के अलावा और कोई भी होता तो कब का हिम्मत हार जाता। एक बार सोनिया ने मोदी को मौत का सौदागर क्या कहा सोनिया के अंध समर्थक मोदीजी के पीछे ही पड़ गए। हर गलती को घुमा फिराकर मोदीजी पर लाकर ही छोड़ देते।

उन दिनों को देखो तो आप कह उठते हैं–

"मार ही डालेगी बेमौत, यह दुनिया वो है।
हम जिंदा हैं जो, जीने का हुनर जानते हैं।"

एन.डी.टी.वी. बड़े–बड़े आदर्शों का बखान करता है लेकिन इसके मालिकों के कारनामें सामने आ रहे हैं वो अचंभित करने वाले हैं। हजार करोड़ की हेराफेरी कोई मामूली बात मानते हैं लोग। समझदार लोगों ने नकारात्मक और देशद्रोही चैनलों को ब्लॉक करना शुरू कर दिया है।

यही कारण है कि सार्थक और सकरात्मक खबरें देने वाले चैनलों यथा जी न्यूज और सुदर्शन टीवी और डी.डी. न्यूज को लोग ज्यादा पसंद करने लगे हैं।

महंगाई से लड़ाई

मोदी सरकार बनने के बाद भी न्यूज चैनल अपनी संदिग्ध भूमिका निभाने से बाज नहीं आ रहे हैं। मंहगाई को लेकर इस तरह बवाल मचा रहे हैं जैसे मोदी सरकार मंहगाई की जनक है जबकि वास्तविकता यह है कि अरब देशों की परिस्थिति से तेल की कीमतें बढ़ती हैं और बरसात की देरी व कमी से सब्जियां महंगी होती ही रहती हैं। सरकार को दोष तब देना चाहिए जब सरकार घोटाले करे। जब मंहगाई के लिए कुदरत और परिस्थितियाँ जिम्मेदार हों तो सरकार को दोष किस बात का। मौजूदा सरकार के ईमानदार प्रयासों को समर्थन भी मिलना चाहिए। मोदीजी को पूरा ध्यान है और फूड प्रोसेसिंग उद्योग यानि खाद्य प्रसंस्करण को भरपूर बढ़ावा देना होगा।

हम जापान से सीखें मंहगाई से लड़ना। जापान में किसी वस्तुओं के भाव अचानक ज्यादा बढ़ जाते हैं तो लोग ऐसी वस्तुओं का उपभोग कम कर देते हैं और मांग कम होने से भाव अपने आप गिर जाते हैं। हमें मानसिकता बदलती होगी। मौसम की सब्जियां स्वास्थ्य के लिए ज्यादा उपयोगी होती हैं और बहुत सस्ती होती हैं लेकिन हम सस्ती सब्जियाँ ना खरीदकर बेमौसम की महंगी सब्जियाँ खरीदते हैं जो कोल्डस्टोरेज से आती हैं और उनकी उपयोगिता भी कम होती हैं।

अपराधों पर नियंत्रण

अपराधों के नियंत्रण का पहला कदम है कि सत्ताधारी लोगों को अनुशासन में रहना सिखाया जाये और सत्ता के दुरूपयोग को रोका जाए तथा सत्ताधारियों के परिवार और इर्द गिर्द के लोग अपने रिश्तों का नाजायज लाभ ना उठा सकें। अपराध नाजायज संरक्षण से भी बढ़ता है।

मोदीजी व्यावहारिक कठिनाइयों और दबावों के बावजूद इस दिशा में लगातार साहसिक कदम उठा रहे हैं।

अपराधों और भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों पर सख्त लगाम लगनी शुरू हो गई है। मध्यप्रदेश के एक भ्रष्ट आई.ए.एस. दम्पत्ति को डिसमिस कर दिया गया है। देश भर में एक दर्जन भ्रष्ट और अकर्मण्य आई.ए.एस. और आई.पी.एस. को निकाला गया है। आजादी के बाद ऐसे सख्त निर्णय पहली बार हुए हैं। जिससे खराब और बेखोफ लोगों पर लगाम लगेगी। यह बहुत बड़ी बात है। आई.ए.एस. को डिसमिस करना बहुत मुश्किल काम है क्योंकि इस सेवा को भारी संरक्षण है। संरक्षण की व्यवस्था तो इसलिए की गई थी कि अफसर बिना किसी दबाव के कार्य कर सकें लेकिन भ्रष्ट लोग इस भारी संरक्षण का दुरूपयोग कर लेते हैं। मोदी ऐसे कंस लोगों को बख्शने वाले नहीं है और उनकी नाजायज संपत्तियां भी जब्त होंगी।

अमीरों के बिगडेल बच्चों और माफिया से जुड़े किशोरों को अब जघन्य अपराध करने से डरना होगा। अब किसी भी अफरोज को किसी निर्भया के बलात्कार और क्रूर हत्या के बाद साफ बचने का मौका नहीं मिलेगा। अब निठारी कांड के नर पिशाच जैसे लोगों को फांसी जल्दी मिलने की उम्मीद बनी है।

सत्ता का दुरूपयोग –– ना ना

मोदीजी ने बिना नकेल के लोगों पर नकेल लगाई अर्थात् बेलगाम लोगों पर लगाम लगा दी है। अब मंत्री और सांसद भी सादगी को अपनाने लगे हैं। हमारे प्रदेश के एक सांसद श्री अर्जुन मेघवाल ने तो संसद में साईकिल से आना शुरू किया। मोदी की सरलता, सादगी, दृढ़ता और संस्कारों का असर अब सब तरफ दिखने लगा है। नकली मुद्रा पर सख्ती शुरू हो गई है और पड़ोसी देशों से आ रहे अपराधियों की धरपकड़ के लिए सूचना तंत्र को चुस्त किया गया है।

बर्बाद देश को चाहिए था एक दृढ़ निश्चयी और ईमानदार नेतृत्व और मोदी में यह विलक्षणता है कि वे प्रजातांत्रिक स्वभाव के लोकप्रिय नेतृत्व वाले फौलादी इरादों के नेता साबित होंगे।

स्वर्णिम एजेन्डा और हम

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जो एजेन्डा दिया है वह हमारी उम्मीदों को वापस स्थापित करता है। इस एजेन्डा में हम सबकी भागीदारी जरूरी है। पूरे सवा सौ करोड़ की भागीदारी जरूरी है। सरकार तो इंजन है और रेल के डिब्बे साथ नहीं देंगे तो यात्रा सम्पन्न नहीं होगी।

स्वच्छ भारत–स्वच्छ भारत के लिए हर व्यक्ति व परिवार को व्रत लेना होगा। बड़े काम सरकार करेगी लेकिन हर घर आंगन अपने परिसर को स्वच्छ रखना हमारा दायित्व है।

शहीद होने का मौका – मोदी जी सही कहते हैं। आज हमारे पास देश हेतु शहीद होने का मौका नहीं है लेकिन देश के लिए जीने का मौका है। हम जियें देश के लिए और अपने कर्म हों देश को समर्पित। जो व्यक्ति अपना काम अच्छी तरह करता है वह देश को मजबूत बनाता है।

सबको घर, बिजली–पानी की सुविधा – सबको घर मिले, बिजली, पानी की सुविधा मिले इसके लिए हमें भी अपने प्रयास सार्थकता से करने चाहिए वरना तो दिया हुआ ही हम बर्बाद कर देंगे। मोदीजी विकास को जन आन्दोलन बनाना चाहते हैं। प्रेरक विचार है। जब तक हर नागरिक नहीं जुड़ेगा जब तक सार्थक विकास नहीं होगा।

अपराधीकरण पर लगाम – राजनीति में अपराधीकरण की मोदी की पहल तभी सफल होगी जब हम सब सौगन्ध लें कि अपराधियों को वोट नहीं देंगे। अपराध को समर्थन देने से ही बढ़ता है।

गाँवों में सुविधाएं शहरों जैसी –गाँवों में सुविधायें मोदी बनायेंगे––– जैसे गुजरात के गाँव शहरों जैसे बन गये। गाँवो में रोजगार और सुखी जीवन की संभावनाओं शहरों से ज्यादा है। आइयें हम शहरों की ओर बढ़ रही अंधी दौड़ में शामिल न हो। मैं लिखने के साथ खुद पालन शुरू कर रहा हूँ। मैंने गांव के पुस्तैनी खेत में अपनी ढ़ाणी बसा ली है और वहाँ रहने लगा हूँ। बहुत आनन्द है कुदरत की गौद में और तारों की छाओं में।

दक्ष भारत – मोदी का दक्ष भारत का सपना साकार करने के लिए हर व्यक्ति को अपनी दक्षता बढ़ानी होगी। हर दक्ष व्यक्ति कम से कम एक युवक की दक्षता बढ़ावे।

याद रहे – कर्मों में कुशलता का नाम ही योग है।

अफसरों पर लगाम-- अफसरों पर लगाम लगने लगी और चोर सिपाही का खेल खत्म। अच्छे अफसरों को प्रोत्साहन मिलने लगा। संदिग्ध लोग हुए भयभीत। युपीए में उलटा था अच्छे अफसर भयभीत थे।

नारी सम्मान – मुझे इस बात का गर्व है कि सन् 1976 में बेटी के जन्म पर मैंने चुरू के पूरे सरकारी अस्पताल में मिठाई बांटी। मां–बहनों की इज्जत को आगे बढ़ाने का मोदी का सपना हम सब के सहयोग से पूरा होगा। मोदीजी ने हमें जगाया है। दायित्व तो हमें ही निभाना है।

दहेज से बचें व बचायें। बेटी के जन्म पर थाल बजायें।

त्वरित न्याय – पीड़ितों को त्वरित न्याय की बात मोदीजी ने कही है। ध्यान रहे न्याय को आइन्सटाइन ने धर्म का दर्जा दिया है। यूनान के महान् विद्वान अरस्तू का कहना है कि मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है लेकिन न्याय के बिना यह मनुष्य जानवर से भी बुरा है। हर सबल का धर्म है कि निर्बल से न्याय करें। हम अपने नौकरों से न्यायपूर्ण व्यवहार करें, छोटों के साथ न्याय करें।

याद रहें – "**Justice Delayed is Justice Denied**"

अन्याय ना होता तो महाभारत भी नहीं होता।

गरीबों की सुनो – मोदीजी सही कहते हैं। सरकार की सबसे ज्यादा जरूरत गरीब को होती है। अमीर तो न्याय खरीदने की हैसियत रखते हैं और लठैतों की ताकत से अपना न्याय खुद ले लेते हैं। पीड़ित होता है गरीब। भगवान को 'दीनबंधु' या 'दीन दयाल' यों ही नहीं कहा है।

''दीन सबन को लखत है दीनही लखत ना कोय।

जो रहीम दीनही लखत, दीन बन्धु सम होय।''

सूफी सन्तों को ''गरीब नवाज'' के नाम से संबोधित किया गया।

बाइबिल भी बहुत बड़ी बात कहती है – धनवानों का स्वर्ग में पहुंचना उसी प्रकार मुश्किल है जैसे ऊंट को सुई की आंख में से निकालना।

मोदीजी ने गरीब को दया का पात्र बनाने की बात नहीं की है बल्कि उसकी स्थिति से भागीदारी करके उसके लिए अच्छे दिनों की बात की है। मोदी का मंत्र है – सरकार गरीबों के लिए जिए, गरीबों की सुने।

सकारात्मक दृष्टिकोण – अन्य महत्वपूर्ण बातों के साथ मोदीजी ने बहुत बड़ी बात याद दिलाई–सकारात्मक दृष्टिाकोण। सकारात्मक दृष्टिकोण से शत्रुता घटती है, मित्रता बढ़ती है और जीवन में उत्साह का संचार होता है।

मोदीजी आधे खाली गिलास में भी सकारात्मकता देखते हैं। उन्होनें एक नया दृष्टिकोण दिया। गिलास आधा पानी से भरा है और आधा हवा से भरा है। यह दृष्टिकोण पहली बार आया है। सार्थक और सकारात्मक।

मोदीजी के एजेन्डा में और भी बहुत सार्थक बातें हैं लेकिन मुख्य बिन्दुओं को इंगित करके यहां यह निवेदन है कि मोदीजी का एजेन्डा बहुत आशावादी और व्यावहारिक होने के साथ 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' है अतः हम सब का देश हित में दायित्व है कि हम अपनी सकारात्मक भागीदारी निभायें।

सबल भारत – समृद्ध भारत – मोदी बहुत दूर की सोच रहे हैं। उनकी निगाह छोटे–छोटे मुद्दों के बजाय भारत को सबल और समृद्ध करने की है। देश में अकर्मण्यता हटेगी और सार्थक कार्य संस्कृति की शुरूआत होगी।

साजिशों से पर्दा

श्री नरेन्द्र भाई मोदी ने देश को सही आइना दिखाया। कांग्रेस के विज्ञापनों से भ्रमित जनता को बताया कि देश को सब तरफ से लूटा जा रहा है। जमीन पर लूटा, जमीन के अन्दर लूटा, पानी में लूटा और आसमान तक को लूटा।

देश आर्थिक बर्बादी तो झेल ही रहा था साथ ही देश की अखण्डता के साथ हो रहे षड्यंत्रो की अनदेखी हो रही थी। शिक्षकों और सैनिकों का मान–सम्मान खतरें में पड़ गया था।

जवान बेबस मारे गये और किसान आत्महत्या को विवश हुए। देश के लिए जबरदस्त लाभकारी खोज करने वाले वैज्ञानिकों की रहस्यमयी मौतों पर सत्ता चुप रही। देशभक्ति वाले वैज्ञानिक देशद्रोही षड्यंत्रो के सामने बेबस हो गये और अपनी जान की सुरक्षा को तरसते रहे। दूसरी तरफ आरोपित लोगों को अकल्पनीय सुरक्षा उपलब्ध करवाई गई।

देश की जनता बेबस होकर सब देखने को मजबूर होती रही। हर बीमारी पर पर्दा डालने के लिए सेकूलरिज्म की आड़ ली गई। बिना किसी पद और प्रतिष्ठा के भी आरोपी लोगों को उच्च स्तर

की सुरक्षा मुहैया कराई गई। हवाई अड्डों पर सुरक्षा जाँच से जहाँ देश के ले. जनरल मुक्त नहीं थे वहाँ आरोपी लोगों को जांच से मुक्ति मिली। अजब मखौल था और सत्ता का गजब अहंकार।

बिना किसी संवैधानिक पद और बिना किसी योग्यता के कद के भी एक मैट्रिक पास आरोपित व्यक्ति को राज्यपालों से भी ज्यादा महत्व दिया जाकर सारी व्यवस्था का मजाक उड़ाया गया।

क्या–क्या वर्णन करता संजय

यदि 16 मई 2014 से पहल महाभारत का संजय मौजूद होता तो क्या–क्या वर्णन करता है ? जरा देखिए –

''शीश कटाते फौजी देखे, आँख दिखाता पाकिस्तान।
भाव गिराता रूपया देखा, जान गँवाता हुआ किसान।
बहनों की इजज्त लुटती देखी, काम खोजता नौजवान।
अन्न गोदामों में सड़ता देखा, भूख से मरता हिन्दुस्तान।
कोई तो आकर यह तो बता दे, यह कैसा भारत निर्माण।।''
–– सोसल मिडिया से साभार

अब सुनेंगे राष्ट्रभक्त कवियों की आवाज

बड़े–बड़े मंचो पर राष्ट्रभक्त कवियों ने सत्ता को खूब जगाने की कोशिश की लेकिन जागता वो जो सो रहा हो। वह भ्रष्ट सत्ता तो जानबूझ कर सोने का बहाना कर रही थी। अब मोदी राज में इन देशभक्तों की आवाज को महत्त्व मिलेगा। जिन कवियों ने जगाया उनमें युग के श्रेष्ठ कवि हरिओम पँवार की कुछ पंक्तियों को देखिये –

''काले धन का मौसम आदमखोर दिखाई देता है।
हसन अली भी संविधान से बड़ा दिखाई देता है।
इसीलिए चौराहे पर सारे पर्दे खोलूंगा मैं।
चाहे सूली पर टंगवा दो मन का सच बोलूंगा मैं।

हो ना हो ये कालेधन के खातेदार तुम्हारे हैं।
या तो दोष तुम्हारा है या रिश्तेदार तुम्हारे हैं।।'' **– हरि ओम पंवार**

घरों में भी मान्य हों न्याय के सिद्धान्त

विधि शास्त्र में प्राकृतिक न्याय का महत्त्व सबसे ज्यादा है। कोई भी निर्णय पारित करने से पहले प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्तों की कसौटी पर परखना जरूरी है।

प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्त अदालतों के लिए बने हैं लेकिन अनुभव से पाया गया है कि इनको घर–परिवार और समाज में भी लागू किया जाये तो छोटों का उत्पीड़न बंद होगा और आपसी शत्रुता घटेगी।

प्राकृतिक न्याय का पहला सिद्धान्त है कि खुद के मामलें में खुद जज ना बनें। हम रोज अपने बाबत खुद निर्णय लेते है। निष्पक्षता के लिए किसी हमराज मित्र की राय बहुत उपयोगी हो सकती है।

सुनवाई का मौका दिये बिना दण्ड ना दिया जाये। हम रोज एक तरफा बात पर बच्चों को, पत्नी को, मित्रों को और परिवार को आरोपित करते हैं। उनका पक्ष सुनने पर बहुत बार आश्चर्य होता है।

एक बच्चे ने कार पर लिखा – I Love My Daddy.

पिता ने आव देखा ना ताव गाड़ी पर खरोंच डालने के लिए बच्चे को डंडा मार दिया। डंडा गलती से हाथ की बजाय सिर में लग गया। बच्चा मर गया। वह पिता कार पर लिखे शब्दों को देखकर आज भी अपने बच्चे को माफी मांगने के लिए जिन्दा देखने को तरस रहा है।

बात पुरानी है। एक फौजी को दोस्तों ने होली पर मजाक की चिट्ठी लिखी कि तुम तो बार्डर पर पड़े हो और तुम्हारी पत्नी पड़ौसी के साथ गुलछर्रे उड़ा रही है। फौजी आग बबूला हो गया और बन्दूक लेकर फौज से भाग गया। घर के नजदीक आया तो देखा कि उसकी पत्नी से कोई पुरूष गले मिल रहा है। पूर्वाग्रह से ग्रसित फौजी ने उस आदमी को गोली मार दी। पत्नी बिलखने लगी। फौजी ने देखा कि पुरूष तो पराया था लेकिन वह फौजी की पत्नी का भाई था। उस फौजी की आत्मा आज भी अपने साले से माफी मांगने के लिए भटक रही है।

निर्णय तर्क सम्मत हों। घर–परिवार के निर्णयों में भी भावुकता पर थोड़ी तर्क की लगाम लग जाये तो जीवन ज्यादा अच्छा हो जाये। गलत निर्णयों से किसी भीष्म को तीरों पर नहीं सोना पड़ेगा। कोई दशरथ अपने प्रिय पुत्र को वनवास जाते हुए नहीं देखेगा। ऐसे कई सिद्धान्त हैं पर समयाभाव से यहाँ इतना ही लिख पा रहा हूँ।

पहचानें–हमारे दायित्व

हमारा सबसे बड़ा दायित्व है–देशभक्ति और अनुशासन, हम मेहनत करें, निष्ठावान बनें, मेहनती बनें, ईमानदारी बरतें।

वर्षा जल संग्रहण – प्रतिवर्ष अरबों, खरबों गैलन वर्षा जल बहकर समुद्र में चला जाता है और हम वर्षा जल के संग्रहण में भागीदार नहीं हैं। एक सामान्य आकार की छत से इतना वर्षा जल इकट्ठा किया जा सकता है कि हम साल भर शुद्ध बरसाती जल पी सकते हैं। गुजरात जाकर देखें विलक्षण प्रयासों को।

खेतों में टांके, कुंड या तालाब बना लें तो बारानी भूमि के पौधों को आपात स्थिति में जिन्दा रख सकते हैं। हर साधारण नागरिक इस भूमिका में योगदान करके देश की समृद्धि में हाथ बंटा सकता है। लिखने से पहले अपने पुस्तैनी खेत में मैंने ऐसा कर दिखाया है।

सौर ऊर्जा का उपयोग – सूर्य से मिलने वाली ऊर्जा अपार है। बिजली की समस्या से त्रस्त लोगों के लिए यह बहुत बड़ा विकल्प है। देशभर की सरकारें घर–घर में सौर ऊर्जा से बिजली बनाने के संयंत्रों के लिए सब्सिडी देती हैं फिर भी एक प्रतिशत परिवारों ने भी इसका लाभ नहीं उठाया। मामूली बचत यानि 25–30 हजार से सौर ऊर्जा संयंत्र लग जाते हैं जिससे बैटरी चार्ज हो जाती है और बिजली की आपूर्ति में बड़ा योगदान दे सकते हैं। गुजरात में एशिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र लगाया है।

बात बस इतनी है कि हम अपनी प्राथमिकताएं सही करें। बड़े–बड़े घरों में सामान्यतः एक जन्म दिन मनाने पर जो खर्चा होता है उतने में एक साधारण खर्चे में सौर ऊर्जा प्लान्ट लग जाता है। लिखने से पहले अपने पुस्तैनी खेत में मैंने ऐसा कर लिया है।

समझें वृक्षों की महत्ता – हर वृक्ष केवल एक दो साल की परवरिश मांगता है और उसके बदले सैकड़ों साल आदमी का पोषण करता है। हमने वृक्षारोपण की ताकत को नहीं पहचाना है। वृक्षावली हमारे जीवन में महान क्रांति ला सकती हैं। समृद्धि का बड़ा स्रोत है वृक्ष। मैंने अपने खेत में करीब पांच सौ दरखत लगा लिये हैं जो दो साल के हो चुके हैं। ये दरखत मेरा भविष्य उज्जवल बनायेंगे।

अपनी अच्छी भूमिका निभायें।

लोग मोदीजी के आने से खुश हैं लेकिन अपनी–अपनी मांगे भी सोशल मीडिया पर प्रस्तुत करते रहते हैं। हमारा विचार कुछ अलग है। हम समझते हैं हमारा ऐतिहासिक काम हो गया। देश दूसरी गुलामी से आजाद हो गया। देश को दूसरी आजादी मिल गई। हमें कुछ नहीं चाहिए। हम जैसे करोड़ों होंगे जिनकी निजी अपेक्षा कुछ नहीं है। हमारी इच्छा यह है कि हम कोई अपेक्षा ना रखें। केवल सहयोग करें। अपनी अच्छी भूमिका निभायें। मोदीजी के स्वभाव में देश सेवा है।

देशसेवा तो वो करके मानेंगे हमारी उम्मीदों का भरोसा अविचल है।

देशवासियों से अपील है कि नई सरकार को वक्त दें कि वो अपनी प्राथमिकताएं खुद तय करें। अपना एजेन्डा लागू करें। दूसरी आजादी दिलाने वाले मोदी निश्चित तौर से भारत को नया बनायेंगे। देश का नवनिर्माण होगा। भ्रष्टाचार मुक्त वातावरण में देश चलेगा। अच्छे काम होंगे। मानसून की कमी जैसी कठिनाइयों तो आती–जाती रहेंगी। महंगाई तो घटती– बढ़ती रहेगी।

शहीद होने का मौका

मोदीजी बहुत सार्थक बात कहते हैं कि हम जो आजादी के बाद जन्मे हैं उनको शहीद होने का मौका नहीं मिला लेकिन हमें देश के लिए जीने का मौका आज भी है. ज्यादातर लोग या तो खुद के लिए जीते हैं या परिवार के लिए जीते हैं लेकिन देश के लिए जीने वालों की संख्या बहुत कम है. जिस दिन देश के लिए जीनेवालों का बहुमत हो जाएगा उस दिन भारत को विश्वगुरू और महान शक्ति बनने से कोई नहीं रोक पायेगा. देशभक्ति की सीख जापान से लेनी चाहिए. वहाँ हड़ताल भी होती है तो काम ऐसे होता है कि उत्पादन को नुक्सान नहीं होता. जुते की फैक्ट्री में हड़ताल है तो केवल एक पैर का जूता बनाते रहेंगे जिससे काम ठप्प ना हो और हड़ताल टूटने पर दुसरे पैर का जूता बना देंगे.

देशभक्ति हम में भी है पर वह बीच बीच में सोई रहती है. मोदीजी जैसा जगाने वाला बार बार चाहिए. बहुत इलाकों में हालात बहुत खराब हैं और हमें अपनी देश भक्ति की ज्वाला को जलाते रहना होगा. हमारे विचार और दर्शन बड़ा करना पडेगा.––

''हो गई है पीड परबत सी पिघलनी चाहिए.

इस हीमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए.

मेरे सीने में ना सही तो तेरे में होगी.

हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए.

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकशाद नहीं.

मेरी कौशिश है यह सूरत बदलनी चाहिए।''

– महाकवि दुष्यंत कुमार

———

आदर हो बुजुर्गों का लेकिन बुजुर्ग भी बोझ ना बनें

दादा पोता के प्रेम के किस्से सदा चले हैं तो बाप बेटे के झगड़े सनातन है। करीब हर बेटा पिता का Antithesis होता है, लेकिन पोता Synthesis का सामर्थ्य रखने में सक्षम हो सकता है।

राजा दशरथ की तीन रानियों के कारण पैदा हुए संकट से राम ने व्रत लिया–एक पत्नीव्रत।

अकबर का अपने बेटे सलीम से झगड़ा रहा और पौते को राज देना चाहता था। यह सब होगा क्योंकि हर पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में आकर मान्यताएँ बदल जाती है। अपेक्षाएँ और महत्वकांक्षाएं बदल जाती है।

देश में मोदीजी आजादी के बाद के वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले हैं, विकासवादी दर्शन का सामर्थ्य रखते हैं। उनका उत्साह और आत्मविश्वास माननीय लालकृष्ण आडवाणी से बहुत ज्यादा है। क्षमता कई गुणा है। माननीय आडवाणीजी ने धीरे–धीरे इस बात को समझ कर अपना सम्मान बचा

लिया लेकिन नरेन्द्र भाई ने एक अनुपम उदाहरण पेश किया कि बुजुर्गों को सत्ता देना संभव ना हो तो भी आदर में कभी कमी ना आवे।

बुजुर्गों का अनुभव महत्वपूर्ण है लेकिन नई पीढ़ी का दृष्टिकोण हमेशा ज्यादा विकासवादी होगा–––अतः बुजुर्गों को अपनी मार्गर्शक की भूमिका ठीक से पहचान लेनी चाहिए। यदि वे सत्ता में हस्तक्षेप करेंगे तो बोझ बनेंगे। कोई भी सत्ता अनावश्यक बोझ को नहीं उठा सकती लेकिन बुजुर्गों को अपने अनुभव से मार्गदर्शक की भूमिका में बने रहना चाहिए।

पीढ़ियों के विचारों में अन्तर को देखते हुए मैंने राजस्थान में कलेक्टर रहते हुए राष्ट्रीय पर्वों पर दादा पोता दौड़ और दादी पोती सम्मेलन करवाये जिनके बहुत सुखद परिणाम निकले। बाल–विवाह, दहेज, बेटा–बेटी में अन्तर,, रूढ़िवाद आदि कुरीतियों से बाहर निकलने से परिवारों के झगड़े बहुत कम हुए। अंतरजातीय विवाहों के खिलाफ गुस्से में कमी आई

दादा का अनुभव हमेशाा उपयोगी होगा लेकिन उस अनुभव का समन्वय पोते के विकासवादी दृष्टिकोण से करवाना जरूरी होगा।

"We think our fathers fools, so wise we grow.
Our wiser sons, no doubt will think us so."

- Alexander Pope

दादा का कर्त्तव्य है कि पोते की जन्मजात दक्षता को विकसित करे और पोता दादा को जीवन का नया दृष्टिाकोण दे।

विलक्षण संस्था..... आर.एस.एस

"Natural abilities are like natural plants, that need pruning by study." ------ Lord Francis Bacon

''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ न केवल व्यक्तिमात्र में बदलाव करती है बल्कि समस्त समाज में बदलाव कर सकती है। संघ में सभी जातियों को एक निगाह से देखा जाता है। गांधीजी ने संघ द्वारा छुआछूत खत्म करने के लिए संघ की प्रशंसा की है।''

– अटल बिहारी बाजपेयी

जो लोग आर.एस.एस की आलोचना करते हैं उनको चुनौती है कि एक प्रचारक की जिन्दगी अधिक नहीं तो केवल पांच साल जी कर दिखा दें। आर.एस.एस. का स्वयंसेवक खुद की बजाय देश सेवा के लिए जिन्दा रहता है। अपवाद तो हर संस्था में मिलेंगे लेकिन आर.एस.एस. में करीब हर व्यक्ति की देश के प्रति निष्ठा पर आप आँखे मूँद कर भरोसा कर सकते हैं। मैंने मेरे 36 साल के सेवाकाल में एक भी मौका ऐसा नहीं देखा जब किसी आर.एस.एस. के व्यक्ति ने देश की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाया हो, अन्यत्र भी नहीं सुना। मोदीजी का बचपन आर.एस.एस. से जुड़कर बीता और देशसेवा की प्रेरणा इसी संस्था से ग्रहण की।

आप श्री मोहनजी भागवत को देखिये। आपको लगेगा कि वे कितने मजबूत हैं और उनके विचार कितने स्पष्ट हैं। देश के सिवा उनके लिए कोई बात बड़ी नहीं है। राष्ट्रपति के पद की बात को उन्होंने कितनी मजबूती से खत्म कर दिया। वे इस बात के आदर्श उदाहरण हैं कि खुद कुछ पाने की इच्छा नहीं है और सारी इच्छाएं देश हित के लिए सुरक्षित हैं।

आर.एस.एस. दुनिया की सबसे बड़ी सेवा संस्था है जिससे वही जुड़ता है जो खुद की हस्ती मिटाने चलता है। देश ही जिसके लिए सब कुछ है। अपने स्वार्थों के लिए कांग्रेस और कमनिष्ठा

वाले लोगों ने आर.एस.एस. को खूब बदनाम किया लेकिन यह संस्था सब सहन करती हुई देश सेवा में लगी रही।

आर.एस.एस. का व्यक्ति सख्त अनुशासन में जीता है, किसी पर बोझ नहीं बनता। सर्वस्व देश को समर्पित करने की भावना ही आर.एस.एस. से जोड़ती है। इस संगठन के लोग पहले खुद को संभालते हैं और फिर देश की बात करते हैं। नरेन्द्र भाई मोदी इसी संस्था से सदा जुड़े रहे हैं। किसी पर बोझ नहीं बने। उनके अनुशासन और कठिन परिश्रम का ही परिणाम है कि आज देश को एक अद्‌भुत मार्गदर्शक नेता मिला है।

"Bombs and pistols do not make a revolution. The sword of revolution is sharpened on the whetting-stone of ideas"

- Shaheed Bhagat Singh

सभी गुणों का मिश्रण

मोदीजी ने स्वामी विवेकानन्द के आदर्शों को कर्म क्षेत्र में अपनाया, नेताजी सुभाष जैसा साहस प्रदर्शित किया। शहीद भगत सिंह का बलिदानी भाव प्रदर्शित किया, चन्द्रशेखर आजाद की तरह आजाद रह रहे हैं तथा सरदार पटेल के कौशल को पुनर्जीवित कर रहे हैं। यूनानी विद्वान प्लेटो ने जिस दार्शनिक राजा और साहसी सेनापति की कल्पना की थी उन सभी गुणों का मिश्रण मोदी में है। अपनी विलक्षण टीम को खड़ी करने के लिए मोदीजी के लिए कह सकते है –

''लोहे को सोना करे, पारस की पहचान।
मिट्‌टी को सोना करे पौरूष की पहचान।''

– कवि आर.सी. गोपाल

बन्द हों ये आदतें--

दिनांक 17 जून 2014 को मशहूर लेखक चेतन भगत ने लोगों को जगाया है कि लोग अपनी जिम्मेदारी समझें। लोग बहुत ऐसे काम करते हैं जिनसे अच्छे दिन आने में बाधा पड़ती हैं–ऐसी लापरवाहिया बहुत है लेकिन प्रयास करके कुछ के प्रति जागरूक करना जरूरी है –

1. **लापरवाही से गाड़ी ना चलाये** – लापरवाही से गाड़ियाँ चलाकर साल में लाखों लोगों की जानें जाती हैं या अपाहिज हो जाते हैं। यह जिम्मेवारी वाहन चालकों की है कि सावधानी से गाड़ियाँ चलायें। सरकार सड़को के कारण होने वाली दुर्घटनाओं के बचाव के उपाय कर सकती है लेकिन मानवीय भूलों पर और लापरवाहियों पर नियंत्रण में व्यक्ति व समाज की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण है।
2. **राजकीय सम्पत्ति को नुकसान** – लोग धड़ल्ले से राजकीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाते है। अतिक्रमण करते हैं। सड़को पर पानी छोड़कर नुकसान पहुँचाते हैं। सड़कों का अवैध काटन करते हैं। ऐसे कई काम हैं जो जिम्मेदार समाज को नहीं करने चाहिये।
3. **बिना बात के झगड़े** – बेसब्री लोग सड़को पर ऐसे चलते हैं जैसे लड़ाई करने के बहाने तलाश कर रहे हों। लालबत्ती का उल्लघंन लोगों के लिए प्रतिष्ठा का सवाल है। वे लोगों की जान से खिलवाड़ करते हैं। ट्राफिक जाम करते हैं। सब्र नहीं करते। गलती खुद की होने पर भी दूसरों से झगड़ते हैं। ऐसी जल्दी में रहते हैं जैसे प्रलय हो रही है।
4. **देश के जलस्रोतों को नुकसान** – अपने छोटे फायदे के लिए लोगों ने प्राचीन जलस्रोतों के भराव क्षेत्रों पर कब्जे कर लिए हैं। पानी की आवक बन्द हो गई है। जो बचे हैं उनको बचाना हमारी सामाजिक जिम्मेवारी है।
5. **वृक्षो की अवैध कटाई** – जहाँ देखो जिधर देखो वृक्षों की अंधाधुन कटाई करते हैं। सबसे बुरी बात है सरकारी क्षेत्र और वन क्षेत्र के वृक्षों की कटाई। सरकार के साथ समाज का दायित्व है कि वृक्षों की अवैध कटाई बंद हो।
6. **ना फैलायें गन्दगी** – जिसको देखो, जहाँ देखा लोग गन्दगी फैला रहे हैं या पर्यावरण को बर्बाद कर रहे हैं। कोई सड़क पर पान–जर्दा थूक रहा है तो कोई सरकारी भवन या अस्पताल पर पान की पीक से चित्रकारी बना रहा है। पिकनिक गये और पिकनिक स्थान पर गन्दगी फैलाकर आ गये। लोग तो धार्मिक स्थानों को भी अछूता नहीं छोड़ते। छोटी नदियों

को हमने सीवर के गन्दें नालों में बदल दिया है। तालाब गन्दे कर दिये। देश की सुगन्ध को बर्बाद कर दिया। पहली बार एक शीर्ष नेतृत्व ने देश को साफ सुथरा रखने की अपील की है। हमें भरपूर सहयोग करना चाहिए।

7. **शिक्षा को ना बनायें दुकानदारी –** मोदीजी ने चुनाव सभाओं में सही कहा कि शिक्षा को लोगों ने डिग्रियाँ बाँटने की दुकान बना दिया। शराब माफिया, ड्रग माफिया, खान माफिया के नाम तो सुने थे लेकिन पिछले दस सालों में कुटिल नेताओं व लालची लोगों की कृपा से अब डिग्री माफिया भी जुड़ गये।

   जो विद्यार्थी बिना योग्यता के डिग्री लेगा वह कल क्या काम करेगा ? नौकरी मिलेगी तो संस्था को बर्बाद करेगा और बेरोजगार रहा तो जेबकतरा बनेगा। फर्जी डिग्रीयाँ बाँटकर युवकों को मेहनत के काम से दूर भगाया जा रहा है। बड़ी डिग्री उन्हें छोटा काम करने नहीं देगी और बड़ा काम उनको आता नहीं। यह व्यवस्था राज के साथ समाज को सुधारनी होगी।

8. **चिकित्सा में अमानवीय कमीशनखोरी** – ऐसा नहीं है कि देश में सेवाभावी चिकित्सक नहीं है लेकिन कुछ लोगों ने जाँच और दवाओं में कमीशनबाजी से पूरे पेशे पर काले धब्बे लगा दिये हैं। कम्पनियाँ किसी दवा की ज्यादा बिक्री पर डॉक्टरों को कार तक इनाम देती हैं, विदेश घुमाती है। इसी प्रकार मरीज की सोनोग्राफी, एम.आर.आई., एक्सरे, खून जाँच आदि की कीमत का 40 प्रतिशत तक डॉक्टरों को कमीशन जाता है।

   गरीब गहने और जमीन बेचकर इलाज करवाता है और कुछ चिकित्सक जमीर बेचकर शोषण करते हैं। यह सही है कि सभी डॉक्टर ऐसे नहीं है लेकिन चिकित्सा सेवा के अच्छे और सेवाभावी डॉक्टर ही अपने लोगों पर लगाम लगा सकेंगे तो परिणाम ज्यादा अच्छे आयेंगे। करोड़ कैपीटेशन फीस देकर जो डॉक्टर निकल रहे हैं वे अपना धन वापस बटोरने के लालच में क्या–क्या नहीं करेंगे ?

9. **बिना काम वेतन नहीं –** देश में 20 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो या तो काम करते हैं नहीं और करते हैं तो मामूली और सरकार के काम बिगाड़ भी देते हैं। फौलादी पुरूष मोदी ही ऐसे लोगों की खबर ले सकते हैं। बड़े–बड़े अफसर सही समय पर कार्यालयों में आने लगे हैं और निर्णय ले रहे हैं। अब टाल–मटोल नहीं चलेगी। अच्छे लोग उत्साह में भरे है।

तटस्थता भी है अपराध

"समर शेष है नहीं पाप का भागी केवल ब्याध

जो तटस्थ है समय लिखेगा उसका भी अपराध।।" –रामधारी सिंह दिनकर

देश में जो ऐसा–वैसा घटित हो रहा है वह अच्छे लागों की तटस्थता के कारण है। बहुत से अपराध अच्छे लोगों की चुप्पी के कारण बढ़ते हैं।

चार चोर संगठित है और पाँच पंच बिखरे।

महान् विचवारक चाणक्य ने ठीक ही कहा है कि दुनिया को आपराधियों ने इतना नुकसान नहीं पहुँचाया है जितना भले लोगों की चुप्पी ने पहुँचाया है।

शायद माननीय मनमोहन सिंह जी अच्छे आदमी थे लेकिन बहुत मामलों में उनकी चुप्पी ने देश को बहुत नुकसान पहुँचाया।

जहाँ संतोष पाप है

मोदी लगातार संघर्षरत हैं। कभी चुप नहीं बैठते हैं। राजा को कभी संतुष्ट नहीं होना चाहिए।

''असंतुष्टा विप्रा नाशा संतुष्टा च महीपति

सलज्जा च गणिका नाशा, निर्लज्जा च कुलांगना।'' **– चाणक्य**

राजकाज की चुनौतियाँ अनंत है। विकास का कोई अंत नहीं। कल्याण कार्य की सीमा नहीं। अतः राजा के लिए संतोष का कोई कारण नहीं। जो राजा संतुष्ट हो गया वह मारा जायेगा और जो बुद्धिजीवी असंतुष्ट होगा वह नष्ट होगा। जरूरी है कि राजकाज से जुड़े लोग अपने प्रयासों से कभी संतुष्ट ना हों और कहते रहें यह दिल मांगे मोर।

मोदी का गीता प्रेम क्यों

गीता है श्रेष्ठ गाइड

लोग समझते हैं गीता संन्यासियों के लिए है लेकिन वे भूल जाते हैं कि गीता हर व्यक्ति के लिए है। यह किताब युद्ध के मैदान से निकली है और गृहस्थ अर्जुन को समझाया गया है। हम सब अर्जुन हैं जिनके माध्यम से भगवान कृष्ण ने पूरे संसार को मार्ग बताया है।

निष्काम कर्म धर्म है। अन्याय से लड़ना धर्म है। दुष्टों को त्रास देना और सज्जनों का सरंक्षण भी श्रेष्ठ धर्म है।

भगवान कृष्ण कहते हैं कि जब पाप बहुत बढ़ जाता है तो ईश्वर स्वयं अवतार लेते हैं अर्थात् जो काम ईश्वर अवतार लेकर करते हैं उनका अनुसरण श्रेष्ठ मार्ग है।

महान् गीता कैसे हमारा मार्गदर्शन करती है। देखिये –

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः
मा कर्मफल हेतु भूर्मा संगो अस्ति कर्मणी।'' अर्थात्

बनने की मत सोचो, करने की सोचो। आगे देखिए –

शत्रुता ना पालो। अति मार्ग ना लो। व्यवहार में मध्यमार्गी बनो।

''युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्यकर्मषु
युक्त स्वप्नाव बोधस्य योगा भवति दुखहा।''

मोदीजी की तरह लोक सेवा में लगे रहो –

''लभन्ते ब्रह्म निर्वाणमृषय क्षीण क्लमषा
छिन द्वेधा यतात्मान सर्व लोक हिते रता।'' **– गीता**

मोदी ने तोड़ा वो दुखदायी गुरूर

हमने पिछले कई सालों से दिल्ली सल्तनत में वो गुरूर देखा है जिसकी किसी प्रजातंत्र में वाले भारत में कल्पना नहीं थी। सूचना का अधिकार बनाने वाले खुद के बारें में नहीं बता रहे थे। तुर्रा यह कि कोई पूछे तो क्यो ? माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के बाबत् जानबूझकर

टाल–मटोल की गई। देश के प्रधानमंत्री को पूरा सम्मान नहीं दिया गया। राष्ट्रपति और मुख्य न्यायाधीश के नमस्कार तक का जवाब नहीं दिया गया। कोई विदेशी दौरे छुपाते है तो कोई आयकर के रिटर्न को गोपनीय बताते हैं तो कालेधन के बारे में तो सवाल ही नहीं। उस जमाने के लिए गालिब के शब्दों में यो कहें –

''हर बात पे कहते हो तुम कि तू क्या है ?
तुम्हीं कहो के ये अंदाज–ए–गुफ्तगू क्या है ?''

देश के हालात ऐसे कर दिये।

''जला है जिस्म जहाँ दिल ही जल गया होगा
कुरेदते हो अब राख जुस्तजू क्या है ?''

इन हालात में आये मोदी और उनका लहू बोला –

''रगों में दौड़ने फिरने के हम नहीं कायल
जो आंख ही से ना टपका तो फिर लहू क्या है ?''

मोदी के पीछे सीबीआई को लगाया – मोदी ने कहा कि ये कोई मुलायम–मायावती नहीं जो डर जायेंगे–उत्तर कुछ ऐसा –

''सितारे नोचकर ले जाऊँगा, मैं खाली हाथ जाने का नहीं
वो गर्दन नापता है तो नाप ले जालिम से डर जाने का नहीं।''

कड़वी दवा बनाम मधुमेह पीड़ित समाज

देश में पिछले कई सालों से वोटर को ललचाया जा रहा है। पत्ते सींचे गये। जड़ें काटी गई। अपने–अपने वोट बैंक को संतुष्ट करने के लिए मीठा–मीठा खिलाया गया। परिणाम यह हुआ समाज के बहुमत को मधुमेह की बीमारी हो गई। मोदीजी ऐसे राजनेता आये जिन्होंने अप्रेल–मई 1914 के चुनावी प्रचार में कोई भी मीठा–मीठा लोक लुभावन वादा नहीं किया। ना बिजली सस्ती देने का वादा ना लेपटोप देने का वादा और ना ही पेंशनों का वादा। मोदी पहले राजनेता हैं जिन्होंने समाज में फैलते मधुमेह को रोकने के लिए करेला खिलाया और नीम खिलाया। खुशी की बात है कि दादा–पोता ने एक साथ मोदी की कड़वी दवा का स्वागत किया। लोगों को गोस्वामी तुलसीदाय याद आये–

"सचिव बैद गुरू तीन जब प्रिय बोलहिं भय आस
राज धर्म तन तीन करि बेगहि होहही नाश।।"

नेता और अफसरों को मोदी ना कहना भी सिखा रहे हैं। कड़वे फैसले ले रहे हैं। जनसेवकों को अपने परिवारों के प्रभाव से दूर रख रहे हैं। अपराधियों के प्रति कार्यवाही में तेजी की बात हो रही है। युवकों को मोदी ने बार–बार आह्वान किया है कि लेने वाले नहीं देने वाले बनो–

"खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है?"

पहले दिन ही याद आई जवाबदेही

यह पहला मौका था जब मोदी ने पहले ही दिन–याने–लोकसभा में नेता चुने जाने के बाद पार्लियामेंट बोर्ड के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के दिन ही हमें याद करना है कि हमें पाँच साल बाद जनता को जवाब देना है। लोगों की आदत बन गई थी कि साढ़े चार साल कुछ नहीं चिन्ता करना और चुनाव के वक्त क्षेत्र की चिन्ता करना।

मोदी ने इतिहास बनाया और सबको सलाह दी कि आज से काम पर लगो जिससे पाँच साल बाद उचित उत्तर हमारे पास हों।

''आलसी व्यक्तियों के लिए भगवान् अवतार नहीं लेते बल्कि वे तो कर्मठ लोगों के लिए अवतरित होते हैं।''

– लोकमान्य तिलक

"We want deeper sincerity of motive, a greater courage in speech and earnestness in action."

- Sarojini Naidu

अवसर का लाभ उठावें मुसलमान

– ले. जनरल (रिटायर्ड) सैयद अता हसनेन

जनरल हसनेन ने मुस्लिम समाज को बहुत ही सार्थक सलाह दी है। उनका कहना है कि मोदी ने विकास के विशेष आयाम स्थापित किये हैं और अब विकास की यह धारा पूरे देश में चलेगी। इस धारा का लाभ सबको मिलकर उठाना चाहिए। मोदी के मंत्र– सबका साथ सबका विकास के मंत्र का लाभ मुस्लिम समाज को भी उठाना चाहिए और पिछड़ेपन से पूरी ताकत से बाहर आना चाहिए। जो लोग मोदी से नाराज है उन्हें भी विकास की धारा में शामिल होकर विकास के अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहिए।.....2013 में दिया गया बयान

अप्रिय भूत को मारो–आगे बढ़े

– सलीम खान

नई पीढ़ी के प्रेरणा स्रोत हैं श्री सलीम खान। मशहूर लेखक सलीम खान लम्बे अरसे से कह रहे हैं कि जो लोग सालों से गुजरात को कोसते रहे हैं उनको दंगों के बाद के गुजरात को देखना चाहिए जहाँ पिछले 13 साल से कोई दंगा नहीं हुआ है। गुजरात ने 2002 के दंगों से सबक लिया और शांति और विकास को अपनाया। लोग दूसरे प्रदेश के दंगों को भुलाकर केवल गुजरात के दंगों को बार–बार याद दिलाकर देश के सद्भाव को नुकसान कर रहे हैं। अब देश को जरूरत है कि भूत की अप्रिय घटनाओं से आगे बढ़ें। सही सोचें और सार्थक कर्म करे। उल्लेखनीय है कि श्री सलीम खान युवकों के चहेते स्टार सलमान के पिताश्री हैं। .....2013 में दिया गया बयान

वाजपेयी का अधूरा सपना साकार कर रहे मोदी

वाजपेयी ने देश को नये आत्मविश्वास में ढ़ालने की पूरी कोशिश की लेकिन उनको दूसरी बार मौका नहीं मिलने से बहुत बातें अधूरी रह गई। आओ फिर से दिया जलायें की कविता को मोदी ने साकार किया। देश को गहरे अंधेरे से बाहर निकाला। नदियों को जोड़ा। देश को मजबूती की तरफ ले जा रहे हैं। देश को मजबूत बनाने के लिए कठोर निर्णय ले रहे हैं।

आइये देखें वह कविता –

आओ फिर से दिया जलाएं

''भरी दुपहरी में अंधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें .....
बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।
हम पड़ाव को समझे मंजिल
लक्ष्य हुवा आंखों से ओझल
वर्तमान के मोह जाल में .....
आने वाला कल न भुलाएं .....
आओ फिर से दिया जलाएँ
आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने .....
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएं,
आओ फिर से दिया जलाएं'' **– अटल बिहारी वाजपेयी**

क्या हम लड़ते ही रहेंगे

''पंडित, मुल्ला, पादरी कितना ही बतियाय
जो जाने है मर्म को वो काहे पतियाय।''

–मजबूर, रविन्द्र कृष्ण

सदियों से हिन्दू मुस्लिम आपस में अमनचैन से भाई–भाई की तरह रहे हैं और जो अत्याचार किये, वो सब शासकों ने किये या सूबेदारों ने किये। पिछले तीन सौ वर्ष तो बहुत ही अच्छे अमनचैन के निकले, लेकिन जिन्ना और नेहरू, दोनों की महत्वकांक्षा ने हममें जहर भर दिया। बस 1946 से लड़ने लगे थे सो रूक–रूक कर आज तक लड़ रहे हैं। ठंडे दिमाग से सोचते हैं तो लगता है हमारे दूसरे धर्म के पड़ौसी से हमारी क्या दुश्मनी है और जब कोई जहर भर जाता है तो हम जान के दुश्मन बन जाते हैं। देश इतना बड़ा है। विविधता वाला देश है। सबके त्यौहार बारी–बारी आने ने रौनक बनी रहती है, लेकिन कुछ लोग वोट के लालच में लड़वा रहे हैं।
कभी हिन्दू, कभी मुस्लिम, कभी ईसाई ना जाने कितने मोर्चे खुल रहे हैं। इससे कोई लाभ नहीं। सत्ताधारियों का धंधा है हमें लड़ाकर रखना। खूब लोग ऐसे हो गए हैं कि जो कहते है :–

आओ अब हम कुछ ऐसा कारोबार करें, जहर भरने का काम सरे बाजार करें
लोग लड़ेंगे तो हमारी खिदमत करेंगें, धंधा खूब मुनाफे का है इसे बार–बार करें।
समझना हमें है – मोहब्बत से रहें – प्यार बाँटें। जाती और धर्म के झगड़ों से दूर रहें.
'रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ पड़जाय।

याद रहें षड़यंत्र – भूलोगे तो डूबोगे

"है बजा उनकी शिकायत, पर इसका क्या इलाज
बिजलियाँ खुद अपने ही गुलशन पे गिरा लेते है लोग।"

–दाग दहलवी

जानत सब जग मौर सुभावा, मोही कपट, छल, छिद्र ना भावा।

–गोस्वामी तुलसीदास

गुजरात के साथ यू.पी.ए. की केंद्र सरकार ने खूब भेदभाव किया। लेकिन गुजराती प्रतिभा को दबाया नहीं जा सका और गुजरात आगे से आगे बढ़ता ही गया। हर गलत बात का गुजरात से मोदी ने विरोध किया है, लेकिन किसने मोदी को चुप करने के लिए अपने और किराए के लोग पीछे लगा दिए। पोटा का कानून ऐसा रहा जिससे आतंकवादी डरते थे, लेकिन वोट बैंक की राजनीति ने पोटा कानून खत्म करवाया। पोटा की जगह महाराष्ट्र ने नया कानून बनाया, उसको राष्ट्रपति की मंजूरी मिल गयी। लेकिन गुजरात ने वैसा ही कानून पास किया उसको मंजूरी नहीं दी। इसका क्या अर्थ निकला है? अर्थ साफ है मोदी को परेशान करने के काम करो, भले ही गुजरात की जनता संकट में पड़े तो पड़े। गुजरात में आतंकवाद बढ़े तो बढ़े यह कैसा राज धर्म? यह कैसी जिम्मेदारी?

पूरा देश जानता था कि आतंकवादियों के सबसे पहले निशाने पर मोदी थे। लेकिन उनको खूब मालूम होते हुए भी उनकी तरफ से, मन से, वचन से या कर्म से कभी कोई गहरी चिंता जाहिर नहीं हुई, उल्टा मोदी की हिम्मत तोड़ने के प्रयास जारी रहे और बहुत हल्के स्तर पर जाकर लोगों ने मोदी पर हमले तेज किये। कई बार तो ऐसा महसूस होता है जैसे कई लोगों को शायद इस बात का मलाल हो कि मोदी अब तक कैसे बचे रह गए। आपको ऐसा नहीं लगा हो तो आत्मा से सच बताना।

देश के प्रख्यात उद्योगपति और युवकों के प्रेरणास्रोत नारायण मूर्ति और रतन टाटा ने कई बार कहा कि मोदी में देश के नेतृत्व की क्षमता है, तो तत्कालीन दिल्ली दरबार ने दोनों को महत्व देना बिल्कुल कम कर दिया। देश की दशा खराब होते देखकर टाटा को कहना पड़ा कि केंद्र सरकार के मंत्रियों के भ्रष्टाचार और निर्णय लेने में अपाहिजपन से देश की आर्थिक दशा खराब हुई। तीस्ता शीतलवाड़ के पुराने सहयोगी श्री राहीस अजीज खान पठान ने गुजरात हाई कोर्ट में दिनांक 20.10.11 को एक हलफनामा देकर कहा कि तीस्ता शीतलवाड़ पत्नी श्री जावेद द्वारा मुस्लिम कट्टरवादियों द्वारा धमकियाँ दिलवाई गयी और वो मुस्लिम कट्टरवादियों से मिली हुई हैं। गवाहों को पढ़ा–पढ़ा कर अपनी मर्जी के बयानों पर हस्ताक्षर करवाए। गवाहों को डराया कि बयान बदले तो जाहिरा की तरह जेल भेजे जाओगे–

जानते हैं यह तीस्ता कौन है–

तीस्ता वो एक्टिविस्ट है जो गुजरात दंगों के बाबत कई साल से खूब जहर फैला रही है और खूब जहर फैलाने के लिए कुछ चैनलों ने उसे खूब मौका दिया। क्या आपको मालूम है कि उसे पुरानी दिल्ली की सरकार ने पद्म श्री से सम्मानित किया। क्या जहर फैलाने के लिए भी पुरस्कार देना जायज है। यह वही तीस्ता है जिसके बाबत माननीय सर्वोच्च न्यायालय तक ने टिप्पणी की कि तीस्ता ने घटनाओं को बहुत मिर्च मसाला लगाकर पेश किया। यह वही तीस्ता है जिसको वो लोग देखना तक नहीं चाहते जिनकी पैरवी का ढ़ोंग यह करती रही । अब इस मसाला लगाने में कुशल एक्टिविस्ट से किसकी नजदीकी है यह आप समझ सकते हैं। पुरानी केन्द्र की बड़ी सत्ता से उसकी नजदीकी जगजाहिर रही है। अब आप जान गए होंगे कि जिन दंगों में गुजरात में 254 हिंदू मारे गए, उनके बाबत तीस्ता ने एक शब्द भी सहानुभूति का क्यों नहीं बोला।

गुजरात के 2002 के दंगों को नरसंहार कहा गया। जबकि ये दंगे थे। जिन दंगों में दोनों तरफ के लोग मारे जायें उसे इक तरफा नरसंहार नहीं कह सकते ऐसे तो दंगे ही होते हैं। इक तरफा नरसंहार तो 1984 का दिल्ली था। 2002 का गोधरा का एकतरफा नरसंहार था। गुजरात में 254 हिंदू मारे गए। आपसी सद्भाव के लिए जरूरी है कि मुस्लिम भाई ऐसे जहर फैलाने वाले और धंधेबाज तत्वों को पहचानें।

क्यों बिकें हम

''तू कतरा भी दे, तो मंजूर है मुझे
किसी गैर के हाथ समंदर भी न लूँ।''

हर चुनाव में हमें खरीदने हेतु खरीददार आ जाते है। हमें भेड़ बकरी समझ कर मोल लगाते हैं। मोल भी ऐसा जिससे मानवता को शर्म आ जावे। कुछ दारू और कुछ पैसे में ईमान खरीदने आ जाते हैं। पूरे पांच साल हमारा ही शोषण और उसी में से एक टुकड़ा फेंककर हमें खरीदना चाहते हैं। आप स्वाभिमानी राणा प्रताप के वंशज हैं अतः ध्यान रहे कि घास की रोटी खाकर भी उन्होनें अपना ईमान कायम रखा था और पूरे हिन्दुस्तान का बादशाह अकबर भी उनके सम्मान को नहीं झुका पाया था। दो चार दिन की दारू और दो चार दिन के खर्चे में अपनी आजादी ना बेचें। गुलामी को मंजूर ना करें। आप ऐसा उत्तर दें जो खरीदने वाले को करारा सबक मिले ––

''ना सोच कि मैं गरीब हूँ
न सोच कि झोपड़ी में हूँ
सुनले ऐ वोट के सौदागर
मैं बिकता नहीं हूँ
इसलिए झोपड़ी में हूँ।''
''महलां लूटो धाड़वी
झोंपड़िया मत आव
झोपड़िया री लूट में
जीव पियारो जाव।''

असली आस्था – असली महजब

''मैं उस ईश्वर को पूजता हूँ जिसे लोग इंसान के नाम से जानते है।''

– स्वामी विवेकानन्द

मोदीजी के जादू

नदियाँ क्यों ना जोड़ें

अनुसरण हो गुजरात का

———

जादू वो जो सिर चढ़ कर बोले

उत्तम उदाहरण है गुजरात

मोदीजी के जादू से सीखें। कच्छ–भुज के भयंकर भूकम्प के बाद जो विनाश हुआ। उसके बाद में जिस तेजी से पुनर्वास और पुनर्निर्माण हुआ, वैसी दुनियाँ में दूसरी मिसाल नहीं है। 2002 के दंगे तीन दिन में नियंत्रित कर लिये। यूरोप के देशों ने इस सफलता पर आश्चर्य किया है। नदियों को आपस में जोड़ने का सफल कार्य केवल गुजरात में हुआ। शासन में विकास सुशासन और न्याय का .....संगम केवल गुजरात में देखा जा सकता है। पूरे भारत में भूगर्भ जल का स्तर गिर रहा है। लेकिन गुजरात में तेजी से बढ़ रहा है। यह है 6 लाख जल संरक्षण कार्यो का जादू। लाखों कि.मी. बिजली के तार और हजारों ट्रांसफार्मर लगवाकर गुजरात के गाँवों में 24 घंटे बिजली दी गई।

गुजरात में कानून का शासन है। वहाँ कोई कानून से बड़ा नहीं है, जिसे कोई खास विशेषाधिकार हों। आप कितने भी बड़े आदमी हैं, गाड़ी गलत चलाते हैं तो चालान होगा यह होता है केवल गुजरात में। भ्रष्ट लोगों पर नकेल डालने का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया है गुजरात ने। लोग खूब जानते हैं कि जो गुजरात में दलालों की दुकानें लंबे अरसे से चलती आ रही थी वे दुकानें मोदी के आने के बाद से बंद पड़ी हैं। गुजरात की सड़कें देखते ही लगता है यूरोप में आ गये। खेती की उपज में विलक्षण बढ़ोतरी केवल गुजरात में। आदिवासी लोगों को फलों की खेती के गुर सिखाने में गुजराज कहाँ से कहाँ चला गया। आदिवासी एरिया का बहुत सराहनीय विकास हुआ है। गुजरात के टोल नाके और दूसरे प्रदेशों में टोल नाके चिपके हुए हैं। बराबर की संख्या में गाड़ियाँ निकलती हैं। गुजरात के नाकों पर एक प्रतिशत टैक्स की चोरी नहीं होती और दूसरे राज्यों के नाकों पर 10 प्रतिशत तक चोरी होती है। यह बात अविश्वसनीय होकर भी सच क्यों है?

लोग यह समझने लगे हैं कि सत्ता उन्हीं नेताओं को सौंपे जिनका भूतकाल स्वर्णिम हो और जो अपनी क्षमता का देशहित में लोहा मनवा चुके हों। इस परीक्षा में सबसे सफल हैं नरेन्द्र भाई मोदी।

ऐसे जियें

राम बन के केवटों को फिर गले लगाइए
बन में जा कर सबरियों के बेर फिर से खाइए
आज मन की पीड़ाओ के स्वर ले के जाइए .....
खुद की पीड़ाओं से पहले दूसरों को अपनाइए.

कहानी नहीं है यह तो इतिहास है
युगों को बदलने का ही प्रयास है
भाव सेवा का मन में जब भी जगे
समझो कि राम कहीं आसपास है
वाणी नहीं कर्म से कर्तव्य अपना निभाएं हम
वाणी नहीं कर्तव्य द्वारा गीत जनहित में गायें हम.

– बाबा सत्यनारायणजी मौर्या

———

मैकाले के नए अवतार

पढ़े 'क्या लिखा अंग्रेज मैकाले ने 1835 में अंग्रेजी संसद को !

मैं भारत के कोन–कोने में घूमा हूँ, मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं दिखाई दिया जो भिखारी हो अथवा चोर हो ! इस देश में मैने इतनी धन दौलत देखी है इतने ऊँचे चारित्रिक आदर्श के गुणवान मनुष्य देखे हैं कि मैं नहीं समझता हम देश को जीत पाएंगे, जब तक इसकी रीड की हड्डी को नहीं तोड़ देते ! वह है इसकी आध्यात्मिक संस्कृति और इसकी विरासत ! इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ ! कि हम पुरातन शिक्षा व्यवस्था और संस्कृति को बदल डाले।

यदि भारतीय सोचने लगे कि जो भी विदेशी है और अंग्रेजी है, वही अच्छा है और उनकी अपनी चीजों से बेहतर है तो वे अपने आत्मगौरव और अपनी ही संस्कृति को भुलाने लगेंगे !! और वैसे बन जाएंगे जैसा हम चाहते है ! एक पूरी तरह से दमित देश !!

क्या आप नहीं देख रहे कि वही प्रयास दुबारा हो रहा है जो बच गया उसे तोड़ने को।

'मेरा काम' ? अनोखा स्वार्थ

एक उद्योगपति नरेन्द्र मोदी के पास जाता है और कहता है कि वह गुजरात में टायर बनाने की फैक्ट्री लगाना चाहता है। नरेन्द्रजी कहते है कि हम तो परमिशन दे देंगें, लेकिन आप को एक मेरा काम करना होगा।

वो आदमी सोच में पड़ जाता है कि नरेन्द्रजी कही चन्दा वगैरह तो नहीं माँगेंगे। लेकिन जब उस उद्यमी को नरेन्द्र भाई मोदी की डिमांड का पता चलता है तो उसकी आंखो से आँसू निकल पड़ते हैं। नरेन्द्र भाई क्या कहते हैं, आपको भी जानना जरूरी है – कि आप को फैक्ट्री लगाने की परमिशन तब दी जायेगी जब आप ये वादा करें कि रबड़ के पेड़ गुजरात में लगायेंगें, वो पेड़ गुजरात की गरीब जनता से लगवायें जायेंगें। आपको रबड़ यही से मिलेगा और जनता को रोजगार भी मिलेगा और रॉ मैटेरियल के लिये आपको किसी और पर भी आश्रित नहीं रहना होगा। बस यही था निराला – 'मेरा काम'. हम चाहते हैं कि काश हर भारत का नेता सत्ता में आने पर लोगों को इस प्रकार के निजी काम बतावें। मोदीजी का 'मेरा काम' होता है जनता का काम।

"Do not see others doing better than you, beat your own records everyday, because success is a fight between you and yourself."

- Chandra Shekhar Azad

भ्रष्टाचार से अर्जित सम्पत्ति

लालू ने 37 करोड़ का घोटाला किया, जिस समय किया उस समय उस 37 करोड़ की कीमत भी कुछ और होगी, आज ये 37 करोड़ 370 करोड़ के बराबर हैं। यदि 20 वर्ष बाद सजा हो भी जायें तो ये सजा उस ठाठ बाट के मुकाबले बहुत कम है जो लालू ने पिछले वर्षों में किये हैं। उस घोटाले के पैसों से न जाने कहाँ–कहाँ निवेश कर के और कितना पैसा बनाया होगा सबने। हम सजा दिलाकर ही क्यूँ खुश हो जाते है ? हम उस सरकारी धन, जो हमारी जेब से गया है, इस देश के विकास हेतु उस धन की लूट को बर्दाश्त कर लेते हैं। हम इन मंत्रियों और घोटालेबाजों की सम्पत्तियाँ कुर्की करवाकर सम्पत्ति की रिकवरी की मांग क्यों नहीं करते ? हर्षद मेहता, लालू, कलमाड़ी, कौड़ा चोटाला राजा कनिमोझी आदि ये सब जेल जाते गये और हम सब इतने में ही प्रसन्न हो गये। घोटाले के केस में कोई उम्रकैद या फिर फांसी की सजा तो होने से रही। इन्हें भी

ज्ञात है कि आगे 3 से 5 वर्ष की सजा ही भुगतनी है फिर घोटाले के पैसे से ऐश की जिन्दगी। पर हमारा देश जो ठगा जाएगा उसका क्या ? सम्पत्ति कुर्की करो सबकी, सड़क पर लो सबको। तब मिलेगा असली सबक। मोदीजी से उम्मीद है के वे ऐसे लोगों के गले में उंगली डालकर पुराना खाया वापस उगलवा लेंगे।

दिल दहला देने वाला दुखद समाचार

कर्नाटक के संतोष गौड़ा नाम के एक व्यक्ति ने अक्टूबर 2013 के प्रथम सप्ताह में आत्महत्या कर ली। आत्महत्या के जो कारण उसने खुद के पत्र में लिखे हैं उनमें दो कारण बहुत परेशान करने वाले हैं। प्रथम कारण लिखा है प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह का खराब शासन और दूसरा कारण सीमा पर पाकिस्तानी हमलों का समुचित जवाब ना दे पाना। इस व्यक्ति की दूसरी निजी परेशानियां भी थी लेकिन यह बात सरकार को समझ लेनी चाहिए कि भारत का प्रजातंत्र हर आम आदमी को कैसे जोड़ रहा है। एक आदमी खुद की परेशानियों से ज्यादा देश की दुखद स्थिति के लिए परेशान है यह बात बहुत विचारणीय है। देश की सत्ता को सोचना पड़ेगा कि लोग किस स्तर तक अपनी जान की बाजी लगा सकते हैं। सरकारों के लिए वो जमाना गया कि कुछ भी कर के बच निकल जाओगे।

सरकार को भारी चिन्ता करनी चाहिए कि एक साधारण आदमी का देश की घटनाओं से इतना गहरा लगाव है कि वह जान देने को उतारू हो गये। यह दर्शाता है कि ऐसी देशभक्ति सत्ताधारी लोगों को बाध्य कर देगी कि वे देश की भावनाओं के साथ खिलवाड़ नहीं कर पायेंगें।

———

नादानी की कीमत

एक खानदान की नादानी की कीमत आज भी पूरा देश भोग रहा है। नेहरू की नादानी की वजह से चीन ने हम पर हमला किया और कई लाख एकड़ जमीन हड़प ली। कश्मीर मुद्दा जिसको भारत खुद सुलझा सकता थाा उसको नेहरू यू.एन.ओ. में ले गए और आज भी वह मसला अंधेर में है। नब्बे हजार से अधिक जंग बंदियों के बदले इंदिराजी ने कोई सौदा करने के लिए पाकिस्तान को मजबूर नहीं किया और करीब मुफ्त में छोड़ दिया। उनके बदले बहुत सौदे हो

सकते थे। राजीव ने हजारों सिखों को देश में मरने दिया। श्रीलंका में शांति सेना भिजवा कर हमारे तमिल भाईयों को मरवाया। आज भी श्रीलंका के तमिल परिवार बदत्तर जिन्दगी जी रहे है।

राजीवजी ने जनसँख्या विस्फोट पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसी विस्फोट से देश भारी समस्याओं से घिर रहा है।

यू पी ए की सरकार में सज्जनता और इमानदारी के लिए पहचान बना चुके प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंघजी का क्या हाल हुआ। उनकी इमानदारी के चलते देश के करीब बारह लाख करोड रूपये घोटालेबाजों ने लूट लिए। यह बहुत बड़ी रकम होती है––– बारह लाख करोड़–– जिसमें बारह साल तक नरेगा योजना चल सकती थी। देश का सुरक्षा तंत्र का बजट कई साल चल सकता था। घोटालों पर चुप्पी क्यों रही। कोर्ट के दबाब और सुब्रमनियन स्वामी जैसे मजबूत नागरिकों के प्रभाव के चलते घोटाले खुले। अब पाठक ही सोचे कि यू पी ए की चेयरपर्सन सोनियाजी के प्रभाव के चलते ये घोटाले क्यों हुए। जबाब तो मिलना बाकी है। इन घोटालों से देश बहुत कमजोर हुवा। काफी लोग तो जमानतों पर छुट भी गए। लोग पूछते हैं कि अब कौन से नादानी बाकी है जो इस खानदान के वारिस राहुल को सत्ता देने की सोचनेवाले करवाना चाहते हैं।

–सोशल मीडिया से साभार।

कल्पना कीजिए

कल्पना कीजिये कि दिनांक 27.10.2013 को नरेन्द्र मोदी की पटना रैली के दौरान् गांधी मैदान और पटना रेलवे स्टेशन पर हुए सीरियल बम ब्लास्ट जैसे बम ब्लास्ट राहुल गांधी की अहमदाबाद की रैली में हुए होते ? देश–विदेश, सरकार, मीडिया, स्वघोषित सेकुलर, जातिवादी और वंशवादी पार्टियों की क्या प्रतिक्रिया होती ?

मोदी के खिलाफ बौद्धिक आतंक

''मैं बहुत समय तक गुजरात दंगो के बाद ज्यादा नहीं बोली और मैंने शुरू में मोदी के खिलाफ बयान पर हस्ताक्षर किये लेकिन बाद में मैंने समर्थन नहीं किया तो ये सेकुलर लोग मेरे पीछे ही पड़ गए। मुझ पर कई तरह के आरोप लगाए। इस पर मुझे ध्यान आया कि ये लोग मोदी के पीछे ही पड़ गए और सही स्थिति मालूम की और सही स्थिति मालूम होने पर मैंने मोदी के पक्ष

में तब बोलना शुरू किया जब मैंने देखा कि कुछ लोग मोदी के खिलाफ बौद्धिक आतंक फैला रहे हैं। लोग ग्यारह साल तक मीडिया और जांच एजेंसियों से खिलवाड़ कर रहे हैं। यह भी देखा कि किस तरह तीस्ता शीतलवाड़ हर संस्था पर लगातार आरोप लगा रही हैं तो मैंने पाया कि तीस्ता के खिलाफ जांच होनी चाहिए। तीस्ता ने महाराष्ट्र की निवासी होने के बावजूद महाराष्ट्र के दंगो के लिए कुछ नहीं बोला और सवाल बनता है कि तीस्ता गुजरात के पीछे क्यों पड़ गई है।

मैं बिना तसल्ली किये बिना कुछ नहीं लिखती अतः मैं गुजरात गई और वहां के बहुत से मुसलमानों से मिली और हर दर्जे के मुसलमानों से मिली और पाया कि उनकी ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं है जैसी मीडिया बताता रहा है। गुजरात के मुसलमानों के मन में मोदी के प्रति वैसे विचार नहीं हैं जो मीडिया दिखाता रहा है। वे लोग विकास और बराबरी के व्यवहार से खुश हैं। मैंने जो देखा वो सच कहना शुरू किया। मेरा इतिहास गवाह है कि कोई मेरी निष्पक्षता को चुनौती नहीं दे सकता। तीस्ता शीतलवाड़ के खिलाफ मैंने ट्वीट करके जांच की मांग की।'' -मधु किश्वर सामाजिक कार्यकर्ता

आतंकवादियों का स्वर्ग

''आतंकवादियों को भारत में डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि सरकार और मीडिया में उनको मदद करने वाले बहुत हैं।''

– मेजर जनरल जी.डी. बक्शी की 2013 के हालात पर टिप्पणी

नेहरू और सरदार

"Manpower without unity is not a strength unless it is harmonized and united properly, then it becomes a spiritual power."

- Sardar Patel

मैं नरेन्द्र भाई से बिल्कुल सहमत हूँ। नेहरू ने अपने मंत्रिमंडल में मेरे दादाजी (सरदार पटेल) को कोई अहमियत नहीं दी। सरदार जी के सुझावों को नहेरू हमेशा किनारे कर देते थे।

... अगर दादाजी (सरदार पटेल) पहले प्रधानमंत्री होते तो ना कश्मीर हमसे अलग होता और ना ही चीन हमें हराता। मैं श्री नरेन्द्र मोदी में अपने दादाजी (सरदार पटेल) की छवि देखता हूँ

– विजयकांत पटेल (सरदार वल्लभभाई पटेल के ज्येष्ठ प्रपौत्र)

सीख जापान से

जापान की स्कूलों में बच्चों को पढ़ाये जाने वाले तीन प्रश्नोत्तर .....

1. प्रथम प्रश्न है कि आप सबसे ज्यादा किसे मानते हैं ?
   उत्तर – भगवान बुद्ध को।
2. अगर कोई भगवान बुद्ध पर हमला कर दे तो आप क्या करेंगें ?
   उत्तर – हमला करने वाले का सिर उड़ा देंगें।
3. अगर भगवान बुद्ध ही जापान पर हमला कर दे तो क्या करोगे ?
   उत्तर – हम भगवान बुद्ध का ही सिर उड़ा देंगे।

आपका क्या मानना है जापान सही है या गलत ? ?

जानते थे सरदार

ये सरदार पटेल ही थे जिन्होनें भरी मीटिंग में कहा था। नेहरू जी आपने कश्मीर का मामला यू.एन.ओ. में ले जाकर ठीक नहीं किया है। आपने भारत को वो घाव दिया है जो आने वाले कल में एक नासूर बनेगा। आपने कश्मीर मामले को यू.एन. में ले जाने के लिए अपने मंत्रीमन्डल से भी सलाह मशवरा नहीं किया और मैं तो गृहमंत्री हूँ आपने मुझे भी नहीं बताया।

भुलाया देशभक्तों का योगदान

देश में करीब हजारों योजनाएं है जो राजीव गांधी, महात्मा गांधी, इंदिरा गांधी और नेहरू के नाम पर हैं, लेकिन सरदार पटेल जी के नाम पर केवल एक या दो !

मोदीजी ने सरदार पटेल के प्रधानमंत्री न बन पाने पर 2013 में अफसोस क्या जताया हमारे पूर्व प्रधानमंत्री जी को गर्व होने लगा----- पटेल के कांग्रेसी होने पर !!

अब अगर इतना ही गर्व था आपकी पार्टी को पटेल पर तो क्यों कोशिश की, उनके नाम को इतिहास के पन्नों में गुम करने की ? क्यों दिखाया बार–बार कि देश की आजादी में सिर्फ गांधी–नेहरू परिवार ने ही प्रमुख योगदान दिया ।

मोदीजी को दिल से धन्यवाद कि आज उनकी वजह से इन कांग्रेसियों की जबान पर नेहरू–गांधी के अलावा किसी और का नाम आना तो शुरू हुआ।

खतरनाक लक्षित हिंसा बिल

(बाल–बाल बचे)

लक्षित हिंसा रोकथाम बिल को देखने से पता लगेगा कि यह बिल हिन्सा रोकथाम बिल ना होकर हिंसावृद्धि बिल था इस बिल का मूल सार यह था कि जब भी दंगा होगा तो प्राथमिक तौर से बहुसंख्यक दोषी माने जायेंगे और उनको अपने आप को निर्दोष साबित करना होगा। अब आप जान जाइए कि आपको बहुसंख्यक मान कर दोषी माना जाता या नहीं। यदि आप हिन्दू हैं तो आपको हिन्दू होने की कितनी बड़ी सजा मिलती। इस बिल का भारी विरोध उस वक्त बीजेपी नहीं करती तो क्या अंजाम होता। यह बिल सोनियाजी की निगरानी में बना। उनका बिल बनाने का कोई संवैधानिक अधिकार नहीं था। उन्होनें संविधान की धाराओं का मजाक बनाया । निर्दोष के खिलाफ आरोप साबित ना होने से पहले बहुसंख्यकों यानि करीब अधिकांश जगह हिन्दुओं को अपराधी मानने का पूर्वाग्रहपूर्ण प्रावधान शामिल कर के न्यायिक सिद्धान्तों का मखोल बनाया है। राज्यों के अधिकारों का उल्लघंन किया है। उम्मीद है ऐसा बिल तो अब तो पास नहीं होगा, लेकिन ऐसे लोगों को मौका मिला तो बहुसंक्ख्यक वर्ग के खिलाफ फिर ऐसा करेंगे। बिल बनाने वाले लोगों ने तो सामाजिक समरसता को तोड़ने का पूरा इंतजाम कर लिया था लेकिन मोदी जो आ गए। इस बिल से साफ है कि लक्षित वोट बैंक के लालच में देश के साथ दिल्ली की तत्कालीन सत्ता भारी मजाक कर रही थी। राष्ट्रीय भक्ति को समर्पित पार्टियों को इस मानसिकता के बाबत् पूरा संघर्ष करना चाहिए। सतर्क रहना चाहिए। लोगों की एकता को तोड़ने वाले हर बिल का विरोध होना चाहिए। धरम के आधार पर ना हो भेदभाव ना हों ऐसे षड़यंत्र.

चार साल पहले की भविष्यवाणी

आप पार्टी का लोक लुभावन एजेन्डा

''दिल्ली के मुख्यमंत्री बने श्री अरविन्द केजरीवाल ने कुछ माह पूर्व जो नई पार्टी खड़ी कर सरकार बनाई है उसका एजेन्डा बहुत ही लोक लुभावन है। अनुभवी लोग जानते है कि लोक लुभावन एजेन्डा से एक बार तो काफी लोग आकर्षित होंगे लेकिन वास्तविकता के कठोर धरातल पर वे दिशाहीन होकर हार जायेंगे। जिस तरह की नाटकबाजी लालू यादव ने की वैसी नाटकबाजी केजरीवाल कर रहे हैं और जिस तरह लालू ने निराश किया वैसे ही केजरीवाल निराश करेगा।''

(जनवरी 2014 में छापी गई मेरी पुस्तक जागें और जगाएं से)

बातें इधर–उधर की

''अक्टूबर 2013 में पटना की महारैली में बम फूटे और 6 लोग मरे 100 घायल। शेर घबराया नहीं जनता को समझाता रहा–शांत रखा–भगदड़ नहीं होने दी और इधर महज कार का एक कांच टूटा और पूरे देश में हंगामा।''

– परेश रावल

''देश में हजारों स्मारक, सड़क आदि के नाम केवल नेहरू गांधी के नाम पर रखे हुए है आखिर बाप का माल समझ रखा है क्या। अकेले दिल्ली में इनके नाम से 64 स्मारक हैं।''

– लोकप्रिय अभिनेता ऋषि कपूर

''केरल में एक साल मे 14 हिन्दूओं की हत्या हुई जिसमें से 4 दलित थे। रोहित वेमुला की मौत पर हैदराबाद जाने वाले राहुल और केजरीवाल केरल क्यों नहीं जाते।''

– प्रोफेसर राकेश सिन्हा संघ विचारक

''जब बाकि दुनिया में लोग पढ़ना सीखना नहीं जानते थे तब हिन्दुओं ने वेद लिख लिए थे और दुनिया में शिक्षा की कोई संस्थाएं नहीं थी तब भारत में गुरूकुल चलते थे जो शिक्षा के केन्द्र थे।''

– डॉ. डेविड फ्राली .....अमेरिकन विद्वान

''मोदी भीख मांग कर प्रधानमंत्री नहीं बने है। यह पूरे बहुमत से चुनकर आये हैं। आपने यह क्या इनटोलरेन्ट–इनटोलरेन्ट लगा रखा है। पांच साल के लिए चुने गए हैं। उनको काम तो करने दीजिए। फिर काम पंसद ना आवे तो हटा दीजिये। आपातकाल से सीखिए इनटोलरेन्ट क्या होता है।''

– अभिनेता किरण खेर

''पंजाब में सिख बहुमत में हैं और वोट बैंक की सोचते रहते तो पंजाब से आतंकवाद कभी खत्म नहीं होता। जम्मू कश्मीर के आतंकवाद को खत्म करने के बाबत् भी ऐसा निर्णय करना होगा।''

– स्व. के.पी.एस. गिल

''रास्ते पर कंकड ही कंकड़ हों तो भी, एक अच्छा जूता पहनकर उस पर चला जा सकता है। लेकिन एक अच्छे जूते के अन्दर भी कंकड़ हो तो, एक अच्छी सड़क पर कुछ कदम चलना भी मुश्किल है। अर्थात् हम बाहर की चुनौतयों से नहीं, बल्कि अन्दर की कमजोरियों से हार जाते हैं।''

– सोशल मीडिया से साभार

''मैं हिन्दू हूँ और राष्ट्रवादी हूँ क्योंकि हिंदुत्व और राष्ट्रवाद एक दूसरे के पूरक हैं। यह हिन्दू धर्म ही है जो मुझे ईसाइयत और इस्लाम से अच्छी बातें ग्रहण करने की छूट देता है। मैं धर्म नहीं छोड़ सकता। अतः मैं हिन्दू धर्म नहीं छोड़ सकता।''

– महात्मा गाँधी

''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ न केवल व्यक्तिमात्र में बदलाव करती है बल्कि समस्त समाज में बदलाव कर सकती है। संघ में सभी जातियों को एक निगाह से देखा जाता है। गांधीजी ने संघ द्वारा छुआछूत खत्म करने के लिए संघ की प्रशंसा की है।''

– अटल बिहारी बाजपेयी

''हमारी विदेश नीति की सबसे बड़ी सफलता यही है कि आज अमेरिका भी भारत के साथ है और रूस भी भारत के साथ है। भारत ने चीन की कूटनीतियों का जवाब देने के लिए जापान, वियतनाम और ताईवान और इजराइल को भी साथ ले लिया है। युद्ध से समस्या का समाधान नहीं होता। युद्ध के बाद भी वार्ता की टेबल पर तो आना ही पड़ता है। इसीलिये हमारी प्रतिक्रिया बहुत संयत है। चीन द्वारा बार–बार धमकी के बाद भी भारत पूरे संयम से काम ले रहा हैं।

– सुषमा स्वराज

''HINDUISM IS A WAY OF LIFE. UNLIKE MANY OTHER RELIGIONS; HINDUISM DOES NOT CLAIM ANY ONE PROPHET; IT DOES NOT SUBSCRIBE TO ONLY ONE BOOK OR SCRIPTURE; DOES NOT RESTRICT TO WORSHIPPING ONLY ONE GOD..''

HONOURABLE Supreme Court of INDIA

"Do not listen with the intent to reply, but with the intent to understand."

- Madhu Kishwar

हमारी सल्तनत चली गई लेकिन हम अब भी सुल्तानों की तरह व्यवहार करते हैं।

– जयराम रमेश (कॉंग्रेस नेता) 7 अगस्त 2017

" Our nation is like a tree of which the origin trunk is Swarajya and the branches are Swadeshi and boycott."

– Bal Gangadhar Tilak

ताकि सनद रहे

दोहरे मापदंड

"तीन तलाक–कोर्ट को दखल नहीं देना चाहिए।

राम मंदिर– कोर्ट का दखल मंजूर है।"

– मार्च 2017

माफिया के पनपने का मुख्य कारण – राजनीतिक संरक्षण

कई भारतीय नादान उस चीन के माल को खरीदते हैं जिसमें नागरिक तिरंगे का अपमान करते हैं और चीनी सरकार देती है भारत को गुलाम बनाने की धमकी। – मार्च 2017

कुछ पथभ्रष्ट मीडिया की नजर में सेना पर पथराव करने वाले भटके हुए नागरिक हैं और वे आतंकी नहीं लेकिन सिरफिरे भंसाली को थप्पड़ मारने वाले आतंकी हैं। – मार्च 2017

नये साल (विक्रम संवत्) में ऐतिहासिक जी.एस.टी. बिल पास। मोदी के ऐतिहासिक कदम पर संसद की मुहर।

अवैध काम को रोकने के लिए भी पूर्व नोटिस की बात हास्यापद है। मीडिया क्या चाहती है। दुराचार रोकने के लिए तत्काल कार्यवाही या नोटिस – बाबा रामदेव–नव संवतसर – (2074)

देश की जनता को इंतजार है कि यह सरकार लाये जनसंख्या नियंत्रण का कानून।

क्या वसूल होंगे 97 करोड़, जो केजरीवाल ने अपने प्रचार पर खर्च किये।

आश्चर्यजनक खुशी –

मोदी की कुटनीतिक विजय –

इजराइल की चीन को चेतनावनी, ''भारत पर हमले की पहल की तो हम भारत के साथ होंगे – 15.08.17

किस ने किया यह हाल

''बापू के भी ताऊ निकले तीनों बंदर बापू के

सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बंदर बापू के।।''

– महाकवि बाबा नागार्जुन

देश पहले – श्री एम.एस. बिट्टा

देश में बहुत लोग ऐसे हैं जो पार्टी से पहले देश को मानते आये हैं। इनमें एक प्रमुख नाम श्री एम.एस. बिट्टा का भी है। ये बेअंतसिंह जी के मंत्रिमंडल में मंत्री रहे और युवक कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। श्री मनिन्दर सिंह बिट्टा देश हित के लिए हर पार्टी के देशद्रोहियों से लोहा लेने के लिए तैयार रहते हैं। वर्तमान में वे आतंक विरोधी राष्ट्रीय मोर्चा के अध्यक्ष हैं। इनकी बातें देश हित में होती हैं जो कट्टरपंथियों को पंसद नहीं आती। ये हमेशा पार्टी से बड़ा देश को मानते आये हैं और बोलते भी वैसे ही हैं। इन पर बहुत से जानलेवा हमले हुए हैं लेकिन कोई हमला इनको भयभीत नहीं कर सका। इस बुलुन्द सख्सियत को हमारा बहुत बहुत नमन। ईश्वर से प्रार्थना है कि इस देशभक्त को दीर्घायु और स्वस्थ जीवन प्रदान करें। आज जब चीन ने घुटने टेके तब भी यह शेर यों दहाड़ा – ''रब का शुक्र है कि भारत में नरेन्द्र मोदी पी.एम. है, मनमोहन सिंह होते तो भारत और भूटान दोनो का बहुत नुकसान होता।'' (28–08–17)

– एम.एस. बिट्टा

सुखद आश्चर्य – पर सावधान

विश्वास नहीं होता कि क्या वही भारत है जिसे 1962 में चीन खेल–खेल में पीट कर चला गया। आज उसी चीन को भारत के सामने घुटने टेकने पड़े हैं। फर्क नेतृत्व का है। उस वक्त नेतृत्व शांति के कबूतर उड़ानेवाले कमजोर और अक्षम आदमी के हाथों में था और आज नेतृत्व मोदी महान के हाथों में है। भारत ने उत्तम रणनीति बना कर अपने से दुगुनी क्षमता वाले देश को चुनौती दी और आज भारत की जय जय हो रही है। बहुत से बुजुर्ग ऐसे जिन्दा हैं जो मरने से पहले चीन के 1962 के अपमान का बदला लेते हुए देखता चाहते थे। बुलुंद लोहपुरूष मोदी ने यह अवसर दिया है। बहुत बधाई मोदी जी। भारतीय फौज की भी जय जय। इस मौके पर यह याद दिलाना जरूरी है कि मान्यवर मोदीजी चीन बहुत धोखेबाज देश है और उसके द्वारा फौज पीछे हटाने के निर्णय के बाद भी पूरी सतर्कता बरती जाए। दुबारा धोखा ना हो। (28–08–17)

दूसरी मिसाल नहीं

मोदीजी के जादू से सीखें। कच्छ–भुज के भयंकर भूकम्प के बाद जो विनाश हुआ। उसके बाद में जिस तेजी से पुनर्वास और पुनर्निर्माण हुआ, वैसी दुनियाँ में दूसरी मिसाल नहीं है। 2002 के दंगे तीन दिन में नियंत्रित कर लिये। यूरोप के देशों ने इस सफलता पर आश्चर्य किया है। नदियों को आपस में जोड़ने का सफल कार्य केवल गुजरात में हुआ। शासन में विकास –– सुशासन और न्याय का .....संगम –– केवल गुजरात में देखा जा सकता है। पूरे भारत में भूगर्भ जल का स्तर गिर रहा है। लेकिन गुजरात में तेजी से बढ़ रहा है। यह है 6 लाख जल संरक्षण कार्यो का जादू। लाखों कि.मी. बिजली के तार और हजारों ट्रांसफार्मर लगवाकर गुजरात के गाँवों में 24 घंटे बिजली दी गई।

कंटीले फूल

''हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों के हनन का मामला आता है तो सेकुलरिज्म के चैंपियन लोगों के मुँह में दही जम जाता है। **– रोहित सरदाना (बंगाल में ममता बनर्जी की गणेश चतुर्थी पर अन्यायपूर्ण कार्यवाही पर टिप्पणी)**

कौन लोटा पायेगा

कर्नल श्रीकांत पुरोहित के जीवन के बर्बाद किये गए बहुमूल्य 9 साल कौन लौटायेगा और साध्वी प्रज्ञा सिंह को अमानवीय कष्ट देकर गंभीर बीमारी में धकेलने के लिए कौन षड्यंत्रकारी दण्डित होंगे। आज 23 अगसत के दिन साजिश के जरिये फंसाए गए भारतीय सेना के लेफ्टिनेन्ट कर्नल श्रीकांत पुरोहित सुप्रीम कोर्ट से जमानत पर रिहा होकर बाहर निकले तो दक्षिण मुम्बई के कोलाबा मिलिट्री स्टेशन पर फौजियों ने मानव श्रृंखला बनाकर उनका स्वागत किया। फौज का मनोबल तोड़ने के कुचक्र की पहल बड़ी हार हुई।

चिन्ता के विषय

कर्नल श्रीकांत पुरोहित को जमानत देते हुए माननीय सर्वोच्च अदालत के दो कमेन्ट गौर करने लायक हैं :–

1. किसी पार्टी को खुश करने के लिए किसी व्यक्ति को जेल में नहीं रखा जा सकता।
2. किसी व्यक्ति को जेल में इसलिए भी नहीं रखा जा सकता कि उसे रिहा करने से किसी समुदाय की भावनाएं आहत होगी।
3. अर्थात् कोई पार्टी चाहती थी कि कर्नल को जेल में लंबा रखा जाए।

सम्मान के धनी

श्री आरिफ मोहम्मद खान

राजीव मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर सत्ता से बाहर होना पड़ा लेकिन मुस्लिम महिलाओं के लिए उचित न्याय और सम्मान की लड़ाई नहीं छोड़ी। बुजुर्ग और बेसहारा शाहबानो को अस्सी के दशक में सर्वोच्च न्यायालय ने न्याय दिया लेकिन राजीव गाँधी ने सबसे बड़ी अदालत के निर्णय को सहानुभूति की लहर से मिले प्रचंड बहुमत के बूते पर बदल डाला। राजीव का फैसला बहुत अन्यायपूर्ण था लेकिन उन्होनें कट्टरपंथियों के सामने घुटने टेक दिए। न्याय के लिए सबल रहने वाले श्री आरिफ मोहम्मद खान ने राजीव गांधी के अन्यायपूर्ण फैसले के खिलाफ मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया लेकिन राजीव गांधी ने नादानी में उनके विरोध के महत्व को नहीं समझा। आज भी वो अपने सिद्धान्त पर कायम होकर सत्ता से बाहर हैं। आइये ऐसे लोगों को सम्मान से याद करें।

वाह मिश्रा जी वाह

भला हो विधायक कपिल मिश्रा का जिसने एकलव्य जैसे बाण छोड़ कर इस दोगले केजरीवाल का मुंह बंद कर दिया जिससे जो नुकसान यह संवैधानिक संस्थानाओं को पहुंचा रहा था उसकी रफ्तार धीमी पड़ी। आस्थाओं को चोट पहुंचाने से देश को सबसे अधिक नुकसान होता है। कपिल मिश्रा मेरी राय में कम से कम पद्म भूषण के सम्मान के हकदार हैं।

क्या बोल गए ट्रम्प साहब

मोदी की लोकप्रियता मुझसे भी ज्यादा है। (सीना गर्व से भर गया)। (22 अगस्त 2017)

रतन टाटा का आभार

पारसियों के कत्लेआम के कारण हमारे पूर्वजों को इरान से भागना पड़ा। उन्हें भारत ने शरण दी। हम भारत के बहुत आभारी है। **– रतन टाटा (22 अगस्त 2017) (भारत में असहिष्णुता का मुद्दा उठाने वालों को करारा जवाब)**

सेकुलरिज्म का इस्तेमाल केवल हिन्दुओं को दबाने, उनकी संस्कृति के खिलाफ किया जाता है।

– अभिनेता रजनीकांत

संस्कार

''भूल गया जो संस्कार,
वो जीवन खरा नहीं रहता
''जड़ से अगर जुदा हो जाए,
तो पत्ता हरा नहीं रहता .... ''

बुलन्दी हो तो ऐसी

आजकल राजनीति की थोड़ी सी समझ रखने वाले लोगों को पता है कि किसी भी कुतर्क का जवाब देने और राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने में जी न्यूज और सुदर्शन टी.वी. काफी बुलन्द पहल कर रहे हैं। कभी कभी इंडिया टी.वी. भी इस मुहिम में शामिल हो जाता है। जब लोग बुलंदी से परिचर्चा में सच बोलने का साहस कर सकते हैं उनमें कुछ लोग बहुत बधाई के पात्र हैं। मेरी राय में इनमें सबसे ऊपर रहेंगे श्री अशोक चाव्हाणके, श्री प्रेम शुक्ला, श्री सुधीर चौधरी, श्री रोहित सरदाना, प्रोफ़ेसर राकेश सिन्हा, डॉ. संबित पात्रा **---अर्नब गोस्वामी** आदि। इन बुलन्द देशभक्तों को बहुत बहुत प्रणाम।

खतरे मोल लेते कबीर

इन दिनों कट्टरपंथियों की धमकियों की परवाह किये बिना काफी लोग सामाजिक बुराइयों के खिलाफ खुलकर बोल रहे हैं। इनमें दूसरे लोगों से पहले मैं श्री तारेक फतेह और सुश्री तसलीमा नसरीन के नाम आगे रखना पसंद करूँगा। मौत की धमकी का सामना कर रहे दोनों लोगों ने मुस्लिम समाज में फैली कुरीतियों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा हुआ है। इन दोनों को वैसा ही सम्मान मिलना चाहिए जैसा स्वामी दयानन्द को हिन्दू धर्म की कुरीतियों के खंडन के लिए मिला था।

भोले या गजब के गोले

''टीवी के एंकर हिन्दू आतंकवाद के आविष्कार पर बड़े भोले बन रहे हैं – आखिर सवाल यह है कि उन्होनें हिन्दू आतंकवाद की कहानी को इतनी आसानी से क्यो अपनाया''

– मधु पूर्णिमा किश्वर – 21.08.2017

सोशल मीडिया पर सवाल जिन्दा हैं

हिन्दू आतंकवाद, सच्चर कमेटी, सांप्रदायिक हिंसा बिल इन तीनों के जरिये भारत से हिन्दुओं को परेशान और बर्बाद करने की तैयारी थी। अफसोस इस बात का है कि आज भी बहुत से नादान लोग उन्हीं पर भरोसा करते हैं।

सुब्रमण्यम स्वामी

राज्यसभा सासंद और राष्ट्रवादी नेता डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा है –

अगर कांग्रेस और सोनिया गाँधी मुस्लमानों को एकजुट करने की राजनीति करती है, तो हमे भी हिन्दुओं को एकजुट करने की राजनीति करनी चाहिए। ––– क्या गलत कहा।

कर्म पर विश्वास

''अपने कर्म पर विश्वास रखिये। धर्म करके ईश्वर से मांगना पड़ता है लेकिन कर्म करने पर ईश्वर को खुद देना पड़ता है।''

– मुनि श्री तरूण सागर जी

देर आये दुरूस्त आये

''मोदी जैसा कोई नहीं। मोदी का मुकाबला कोई नहीं कर सकता।''

– नीतीश कुमार

असली शहीदों को मान्यता

सोशल मीडिया की मांग है कि भारतीय करेन्सी पर नेताजी सुभाष–शहीद भगत सिंह और सरदार पटेल की फोटो छपनी चाहिए।

कंटीले फूल

बी.जे.पी. और संघ ने भारत को पाकिस्तान बनने से रोका है।

– **सनी देओल**

चीन के सामान का बहिष्कार

दुनिया की तीसरी महाशक्ति और वीटो पावर धारी चीन की धमकियों का जो जवाब दिया उस हौसले को बहुत–बहुत नमन। अब हम सब की जिम्मेवारी है कि हम चीन के सामान का पूर्ण बहिष्कार करें।

सहिष्णुता पर संयुक्त राष्ट्र संघ की पुष्टि

''भारत ऐसा देश है जिसमें हर धर्म के लोग सुरक्षित है।'' .....**– अगस्त 2017**

"For invaders nationalism is a dangerous disease. For defenders of self respect it is as primary as your own soul."

- Author

विचारणीय बिन्दु – कितना सच

तारेक फतेह का कहना है कि इस्लाम के पैगम्बर मोहम्मद के परिवार के लोगों की जान लाहोर के हिन्दू राजा दाहिर ने बचाई थी।

– तारेक फतेह – 28 मार्च 2017

''हिन्दू बहुल भारत में अल्पसंख्यक मुस्लमानों को सब्सिडी और सस्ते कर्ज मिलते हैं लेकिन मुस्लिम बहुल कश्मीर में अल्पसंख्यक हिन्दुओं को पलायन और मौत मिलती है। कौन सहिष्णु और कौन साम्प्रदायिक'' **– डॉक्टर डेविड फ्राली**

क्या ये लोग सेकुलर हैं?———

मुस्लिम अपना वोट समाजवादी पार्टी को ना दें। वोट बेकार जायेगा – मायावती

मैं मुस्लमानों के लिए जिया हूँ – उनके लिए मरूँगा – मुलयाम सिंह यादव

दिख रहा ——— बदलाव

कश्मीर को भारत से अलग करने की मांग की मैं घोर निन्दा करती हूं – महबूबा मुफ्ती

– मार्च 3, 2017

दुखद यादें——

19 जनवरी 1990 की रात कश्मीरी पंडितों के लिए मौत बनकर आई। मस्जिदों से आवाज आई – काफिरों कश्मीर छोड **– अनुपम खेर**

ताकि सनद रहे

नीतिश कुमार जितनी जल्दी लालू से पिंड छुड़वाले उतना अच्छा होगा। जितनी ज्यादा देरी उतना ज्यादा पछतावा। लिखते लिखते यह हो भी गया।

नोटबंदी पर जनता ने साबित किया कि कम पढ़े लिखे लोग देश का भला बेहतर जानते हैं। तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग का बहुमत गुमराह है।

संघ प्रमुख मोहन भागवत की उद्धव ठाकरे को सलाह – वे संघ और बीजेपी के मुद्दो पर ना बोलें तो बेहतर होगा – **– नव संवत्सर 2074**

सरकारी सुविधायें सीमित रहें तीन बच्चों तक। दूसरा बच्चा जुड़वा हो सकते हैं अतः तीन बच्चों तक सीमित हो रियायतें। **– लेखक**

मनमोहन सरकार ने ईरान से 43 हजार करोड़ का तेल कर्ज पर लिया। कर्ज चुकाना पड़ रहा है मोदी को। अब पैट्रोल–डीजल सस्ता हो तो कैसे। पहले कर्जा तो चुकता हो।

जनवरी 1990 में जब कश्मीरी पंडितो पर अथाह जुल्म हुए तब जितनी बेदर्द बेनजीर भुट्टो थी उससे कम बेदर्द वी.पी. सिंह भी नहीं थे। **– अनुपम खेर**

धर्म का मर्म

वेद ने धर्म का सही मर्म बताया है।

वेद का धुर वाक्य – मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बनो–राक्षस नहीं–लेकिन आत्मरक्षा हेतु अपवाद भी हैं धर्म हिंसा तथैव च। अर्थात् हिंसा केवल आत्मा रक्षा में ही जायज होगी।

आधार कार्ड के रंग

काफी जगह ऐसा हो रहा है कि आधार कार्ड से जोड़ने पर 50 प्रतिशत तक लाभार्थी फर्जी निकल रहे हैं, अब पता चल रहा है कि आधार कार्ड का इतना विरोध क्यों हो रहा है। क्यों गई ममता सर्वोच्च न्यायालय -----फटकार खाने.

बलात्कारों का एक समाधान

कई उपाय हो सकते हैं लेकिन बढ़ते बलात्कारों का एक समाधान यह भी हो सकता है – आइये असलियत से रूबरू होवें।

''एम्सटर्डम में एक समय में बलात्कार के बहुत केस बढ़ गये थे। इतने की मीडिया ने एम्सटर्डम को रेप केपिटल ऑफ यूरोप घोषित कर दिया था। लेकिन वहाँ की सरकार ने कुछ समाजशास्त्रियों के सुझाव पर वेश्यावृत्ति को कानूनी रूप देकर उन्हें लाइसेन्स दे दिया जिससे कुछ हफ्तों के अन्दर ही बलात्कार की घटनाओं में नाटकीय ढ़ंग से गिरावट आई।''

आज का एकलव्य

कपिल मिश्रा आज का एकलव्य है जिसने दिल्ली के रोज–रोज भोंकने वाले कुत्ते का मुंह बाणों से बन्द भी कर दिया और कुत्ता मरा भी नहीं। लेकिन भोंकना बंद

– सोशल मीडिया

जागो भारत

पाकिस्तान में जितने आतंकी हैं उनसे कई गुना गद्दार भारत में हैं।

– मुनि श्री तरूण सागर महाराज

कड़वा सच

हिन्दू है तो ही भारत है, अन्यथा संविधान, झंडा, धरोहर, इतिहास, भारत सबको मिटा दिया जायेगा।

– प्रो. राकेश सिन्हा

अनुसरण लायक युग पुरुष

युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

"मिटा दे अपनी हस्ती को अगरचे मुर्तबा चाहे

(कि) दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।"

आज की पीढ़ी को विभिन्न मुद्दों से निकलकर आशावाद का संचार करने वाले डॉ. कलाम की विरासत के पास नई पीढ़ी को देने के लिए अब भी बहुत कुछ है। सकारात्मक दृष्टिकोण के एक विलक्षण उदाहरण रहे हैं डॉ. कलाम। एक साधारण परिवार के पालन पोषण से निकल कर अपनी योग्यता के आधार पर देश के सबसे बड़े पद पर पहुंचे और उस पद की गरिमा को अपेक्षाओं के अनुरूप सराहनीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका जीवन एक अनुपम प्रेरणा का स्त्रोत है और देश के युवाओं को बताता है कि मेहनत और सतत प्रयास की सीढ़ियाँ हर व्यक्ति को सफलता की चोटी पर पहुंचा सकती है। उन्होंने जैसा करके दिखाया वैसा ही रास्ता वो युवाओं को हमेशा दिखाते रहे । उनकी कथनी और करनी एक रही। जो लोग अपनी महत्त्वाकांक्षा के लिए शार्टकट लेते हैं उनके लिए कलाम एक जोरदार उदाहरण है।

खोजा –एक तपस्वी राष्ट्रपति

''तूफानों में रेत का घर नहीं बनता

रोने से बिगड़ा मुकद्दर नहीं बनता

एक हार से कोई फकीर और एक

जीत से कोई सिकन्दर नहीं बनता''।

नमो और पूरी टीम इस बात के लिए बधाई के पात्र हैं कि उन्होनें एक ऐसा राष्ट्रपति देश के लिए खोजा जो अपने हाल में मस्त हो और अपने सदकर्मों में व्यस्त हो। बिना कोई अनावश्यक महत्वाकांक्षा पाले हुए वे अपने काम में लगे रहे। पेशे से वकील श्री कोविन्द ने दिल्ली उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की और सर्वोच्च अदालत में भी वकालत की। गरीबों और दलितों की सेवा को समर्पित इन योगी का कर्मठ जीवन बहुत सादगीपूर्ण और कठिनाइयों से भरा रहा। छोटी उम्र में ही उनकी परख मोरारजी देसाई ने कर ली और उन्हें अपना निजी सचिव बनाया। वे लोकसभा और विधानसभा के चुनाव तो नहीं जीत पाए लेकिन उनकी योग्यता ने उन्हें दो बार राज्यसभा सदस्य बनाया। वे अगस्त 15 में बिहार के राज्यपाल बनाए गए।

दो चुनाव हारने पर वे निराश नहीं हुए और अपने काम में लगे रहे। उनकी योग्यता और मेहनत ने उनको पार्टी के लिए जरूरी योगदानी साबित कर दिया। अपनी मेहनत के बूते वे सर्वोच्च पद पर पहुंचे हैं। उनका कोई आका नहीं था जो मदद कर पाता। राष्ट्रपति बनने के बाद उनके संबोधन ने देश को एक बहुत बड़ा और स्पष्ट आश्वासन दिया है जो श्लाघनीय है।

देखें – '' मैं एक छोटे से गांव में मिट्टी के घर में पला बढ़ा हूं। मेरी यात्रा बहुत लम्बी रही है, लेकिन यह यात्रा अकेले सिर्फ मेरी नहीं रही है, हमारे देश और हमारे समाज की यही गाथा रही है। हर चुनौती के बावजूद हमारे देश में संविधान की प्रस्तावना में उल्लेखित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूलमंत्र का पालन किया जाता है और मैं इस मूलमंत्र का सदैव पालन करता रहूंगा।

मैं इस महान राष्ट्र के 125 करोड़ लोगो को नमन करता हूँ। मुझे अहसास है कि मैं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम और प्रणव मुखर्जी जैसी विभूतियों के पद्चिह्नों पर चलने जा रहा हूं।

विलक्षण प्रतिभा ...श्री वेंकैया नाइडू

"Doing easily what others find difficult is talent.
Doing what is impossible for talent is genius." **- H.F. Amiel**

जब श्री वेंकैया जी बोलते है तो लगता है भाषा के अलंकारों की झड़ी लग जाती है। हिन्दी और अंग्रेजी में उनका शब्द चयन देखने लायक है। थोड़े शब्दों में बहुत बड़ा संदेश देने की उनकी खूबी अपने आप में अनोखी है। देश की समस्याओं के बाबत् उनके ज्ञान की गहराई अद्भुत है। विपक्ष को स्टीक उत्तर देते रहे हैं और ऐसा कुछ नहीं कहते जो किसी के सम्मान को ठेस पहुँचावें। विलक्षण प्रतिभा के धनी वेंकैया जी को उपराष्ट्रपति का सम्मान देकर सरकार और देश ने बहुत बढ़िया काम किया है।

राजनीति में ऐसे बिरले लोग हैं जो सत्ता में आधी सदी प्रभावशाली पदों पर रहकर भी अपनी छवि को बेदाग और साफ–सुथरा रख सकें लेकिन श्री वेंकैया नाइडू में यह खूबी रही है। एक साधारण किसान के घर से देश के उपराष्ट्रपति के पद तक बहुत सम्मानजनक ढ़ंग से पहुंचना अपने आप में बड़ी बात है और इससे भी बड़ी बात यह है कि सरकार द्वारा नामित होने से पहले आम लोगों की जुबान पर उनका नाम सबसे ऊपर रहा। यह आंकलन बताता है कि वे विलक्षण व्यक्ति हैं।

"औरों को हँसते देख मनु, हंसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सबको सुखी बनाओ।"

– महाकवि जयशंकर प्रसाद

फौलादी पुरूष

(श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी)

''दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत

मेरी मिट्टी से भी खुशबु ए वफा आएगी।''

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है.

हम पढ़ते आये हैं कि नेपोलियन कहता था कि उसके शब्दकोष में असंभव शब्द नहीं मिलता। अब हम नये इतिहास में पढ़ेगे कि असंभव शब्द नरेन्द्र भाई मोदी के शब्द कोष में भी नहीं मिलता।

जब सभी बड़े–बड़े राजनीतिक विश्लेषण मोदी के नेतृत्व को 250–260 से ज्यादा सीटें नहीं दे रहे थे तो भी मोदीजी का आत्मविश्वास हर मीटिंग में झलकता था। हर मीटिंग में नये उत्साह का संचार करने में सफल हुए श्री मोदी।

अपनी आराम की जिन्दगी छोड़कर मैं भी मोदीजी की प्रेरणा से आधे भारत घूम आया। मुझे यह तो अंदाजा था कि मोदीजी की निष्ठा, समर्पण, आत्मविश्वास और उनका कौशल उनको विजयी बनायेगा लेकिन उनके खिलाफ हो रहे षड्यंत्रो से मैं भी बहुत आशंकित था। पिछले तेरह साल से 'न्यूज ट्रेडर्स' और 'फाइव स्टार इन्टेलेक्चुवल्स' ने 'सेकुलर' षड्यंत्रकारियों से मिलकर जो हमले मोदी पर किये उनसे कोई भी खास व्यक्ति भी विचलित होकर टूट सकता था लेकिन मोदी निकले फौलादी पुरूष। ना जंग लगा ना मुड़े ना टूटे।

ऐसा लगता था कि वे उस वक्त की बेरहम और ऊपर के दबाब से मजबूर पुलिस टीम को कह रहे हों –

''सितारे नोचकर ले जाऊँगा, मैं खाली हाथ जाने का नहीं
वो गर्दन नापता है तो नाप ले जालिम से डर जाने का नहीं।''

मोदी जी ने ठीक ही कहा है कि जो पत्थर उन पर फेंके गये उनको सीढ़ियाँ बनाकर वे मंजिल की ओर बढ़ते गये। कठिनाइयों को चुनौती मानकर उनसे मुकाबला करना हो तो मोदी के जीवन से प्रेरणा ली जा सकती है। मोदीजी ने दर्शन में महान् पुरूष स्वामी विवेकानन्द को आदर्श

माना और लौह पुरूष सरदार पटेल की दृढ़ता और कौशल को अपनाया और साबित कर दिया कि इन दोनों महापुरूषों को आदर्श बनाकर अद्भुत सफलता प्राप्त की जा सकती है।

जिस प्रकार अब्राहम लिंकन ने लकड़हारे के जीवन से शुरूआत करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव जीता उसी प्रकार एक चाय वाले बालक से एक सफलतम मुख्यमंत्री बनना और अब देश की आशाओं के प्रकाश पुंज के रूप में प्रधानमंत्री पद तक पहुँचना अपने आप में उन युवकों के लिए नई उम्मीद जगाता है जिनका जन्म साधारण परिवार में होने पर कभी–कभी निराशा भव आता जाता है। शून्य से शिखर तक कैसे पहुँचा जा सकता है यह करके दिखाया नरेन्द्र भाई मोदी ने। सच्चाई से जीवन जीते हुए भी सर्वोच्च सफलता प्राप्त की जा सकती है, यह करके दिखाया श्री मोदी ने।

प्रकृति का श्रेष्ठ दोहन करके समृद्धि आ सकती है यह भी करके दिखाया श्री मोदी ने। पवन की ताकत, सूर्य की ऊर्जा और वर्षा के जल संग्रहण से देश की तस्वीर बदली जा सकती है यह करके दिखाया नरेन्द्र भाई ने। मोदी जी के खिलाफ किये गये षड्यंत्रो की कहानी और उनकी विलक्षण उपलब्धियों के बाबत् माह जनवरी 2014 में मैंने एक पुस्तक लिखी थी ''

जागें और जगाएं – भारत नया बनायें।'' यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि माह अप्रेल तक इसके चार संस्करण छपवाने पड़े। नई पीढ़ी के लिए यह पुस्तक निःशुल्क उपलब्ध हो रही है।

लगातार खतरनाक खतरों से खेलते हुए मोदीजी ने देशभक्ति के इश्क में जो नए मकाम बनाए वे आज की पीढ़ी के लिए बहुत प्रेरणादाई हो सकते हैं –

'' दयारे इश्क में अपना मकाम पैदा कर.

नया जमाना नए सुबह शाम पैदा कर.

मेरा तारीक अमीरी नहीं फकीरी है.

खुदी ना बेच गरीबी में नाम पैदा कर. ''

प्रेरक व्यक्तित्व श्री मोहनजी भागवत

"है कौन विध्न ऐसा जग में टिक सके आदमी के मग में
ठम ठोक ठेलता है जब नर पर्वत के जाते पाँव उखड़।"

"The most incredible architecture is the architecture of the self, which is ever changing, evoling, revolving and has unlimited beauty and light inside which radiates outwards for every one to see and feel."

- Allan Rufus

हम रोजमर्रा की जिन्दगी में जिस प्रकार अस्त–व्यस्त रहते हैं उससे बाहर आने में हमें मार्ग दिखा सकते हैं, युग पुरुष श्री मोहनजी भागवत। दृढ़ निश्चयी श्री भागवत ने भाजपा के अनिश्चय के क्षणों में न केवल दीप शिखा का काम किया बल्कि एक अभूतपूर्व सम्बल भी प्रदान किया। जब–जब भाजपा का जहाज किंकर्त्तव्य विमूढ़ के भँवर में डोलने लगा तब–तब श्री भागवत ने इस जहाज को जोरदार सम्बल प्रदान किया।

दूरदर्शी भागवत जी जानते थे कि युग पुरुष मोदी ही वह व्यक्तित्व है जो देश को निराशा और अंधकार से निकाल सकता है। मोदी ही वह धनुर्धर अर्जुन है जो भ्रष्ट सत्ता के चक्रव्यूह को भेद सकता है। बीच–बीच में जब भी बुजुर्गो की अधूरी रही महत्त्वाकांक्षा ने खेल बिगाड़ने की कोशिश की तब तब श्री भागवत ने अपना अंगद का पैर जमा दिया। श्री भागवत की क्षमता, कौशल और ताकत के सामने निजी स्वार्थ से भरे लोग हार मानने को मजबूर हुए।

श्री मोहन भागवत के जीवन का अनुसरण करते हुए हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि देश के सामने व्यक्तिगत हित कुछ भी मायने नहीं रखते।

श्री भागवत ने देशहित को ही अपना सर्वस्व माना है और एक विलक्षण निष्ठा के साथ देश को सबल और सुदृढ़ बनाने में लगे हुए हैं। हाल ही में जब शिव सेना ने भागवत जी को रास्ट्रपति पद के लिए ललचाने की कोशिश की तो उन्होनें साफ मना कर दिया। उन्होनें दृढ़ता से मना किया जिससे किसी के मन में कोई शंका ना रहे। जो लोग आधे अधूरे मन से सत्ता का त्याग करते हैं उनके लिए आदरणीय भागवत जी की स्पष्टता प्रेरणादायक है।

मोदीजी का मंत्र है कुछ बनने के बजाय कुछ करने की सोचो। आज देश को ऐसे लोगों की जरूरत है जो खुद कुछ बनने की बजाय देश के लिए कुछ करने की सोचें।

कौशल के धनी श्री अमित शाह जी

नरेन्द्र भाई मोदी के अद्भुत दर्शन और देशहित के सपनों को साकार करने में श्री अमित शाह के योगदान को इतिहास सदा याद रखेगा। जिस प्रकार हनुमानजी ने व्रत लिया था कि–

"राम काज कीन्हं बिना मोही कहां विश्राम।।"

महावीर हनुमानजी की तरह श्री अमित शाह ने व्रत लिया कि दूसरी आजादी प्राप्त किये बिना मोहे कहां विश्राम।

जिस प्रकार शतरंज के खेल में वजीर विरोधी खेमें में घुसकर विरोधी पक्ष की सारी योजना छिन्न–भिन्न कर देता है। वैसे ही श्री अमित शाह ने किया।

जातिवाद के जहर से पीड़ित प्रदेश में श्री अमित शाह ने देशभक्ति का जज्बा पैदा किया। लोगों को समझाया कि कैसे उत्तर प्रदेश की समाजवादी पार्टी की सरकार लोगों को आपस में लड़वाकर अन्याय कर रही है। अभेद्य माने जाने वाले उत्तरप्रदेश के किले में श्री अमित शाह ने विरोधियों की ताकत को छिन्न–भिन्न किया। युवकों को मोदी का सन्देश सुनाया।

लोगों का आंकलन था कि उत्तर प्रदेश में 50–55 सीटें आ जायेगी लेकिन लोगों को पता नहीं था कि अमित शाह में गजब की संगठन शक्ति है। 50 की बजाय सीटें आयी 73 यानि तेहत्तर। विपक्षियों को मिली केवल 7 सीटें। अन्यायी मुलायम को लगा करारा झटका और अहंकारी मायावती का सूपड़ा हुआ साफ। बहुत बोल रही थी कि मोदी को समर्थन नहीं दूंगी। अब समर्थन लायक बची ही नहीं।

कहते है कि केन्द्र की सत्ता का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर जाता है। श्री अमित शाह ने इस रास्ते को भली प्रकार पहचाना और इसे राष्ट्रीय राजमार्ग बना दिया।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के विधानसभा के चुनाव में जोरदार रणनीति बनाई और जहां पचास प्रतिशत के आंकड़े पर भी संशय था वहाँ अस्सी प्रतिशत सीटें जीतवाकर अभूतपूर्व उपलब्धि प्राप्त की। मोदीजी को ऐसा समर्थन दिया जिससे फील्ड में मोदीजी की योजनायें खूब सफल रहीं।

नहीं झुके बाबा रामदेव

''कभी अर्श पर कभी फर्श पर

कभी शाख पर कभी ख़ाक पर

कभी उनके दर कहीं दर गुजर

ऐ जिन्दगी तेरा शुक्रिया

मैं कहाँ कहाँ से ना गुजर गया।''

जुल्म ने अपनी इन्तिहा करने में कोई कमी नहीं रखी। देश हित में बोलने वाले संतो पर इतने अत्याचार किये जितने किसी प्रजातंत्र में कल्पना भी नहीं की जा सकती। अहंकारी सत्ता के चापलूस लोग अत्याचारों को बढ़ावा देते रहे। हसन अली के प्रति आँख मूँदने वाले रेवेन्यू के अफसर बाबा रामेदव और सहयोगियों पर सैकड़ों मुकदमें दर्ज करने को मजबूर किये गये।

काले धन को वापस लेने की मांग यदि अपराध है तो हर देशभक्त अपराधी है। देशभक्तों पर ऐसे अत्याचार सुनकर अंग्रेजीराज और सामंती शासन की याद आ गई। आधी रात को दिल्ली में अनशन पर बैठे बेगुनाह लोगों पर बर्बर लाठीचार्ज किया गया और एक निर्दोष महिला को पीट–पीट कर मारा गया। सच्चाई का मुँह बन्द करने के इससे बड़े कुत्सित उदाहरण आजादी के बाद बिरले ही मिलेंगे। ऐसा लग रहा था जैसे देश की सत्ता देशद्रोहियों के प्रभाव में चली गई हो।

लेखक बाबा रामेदव की निष्टा और दृढ़ता को पूर्ण आदर से प्रणाम करता है जिन्होनें हमें चाणक्य की प्रतिज्ञा दुबारा साकार करके दिखाई। जैसे नंद वंश बर्बाद करने के लिए चाणक्य ने चोटी खोल ली थी वैसे ही बाबा रामदेव ने स्वघोषित 'देश निकाला' ले लिया था। हरिद्वार के आराम को यह कहकर छोड़ा कि कांग्रेस को सत्ता से बाहर होने पर ही हरिद्वार में पैर रखूंगा। बाबा ने जो कहा सो करके दिखाया। कांग्रेस को जमींदोज होने पर ही हरिद्वार लौटे।

संतों ने सेनापतियों को देशहित के लिए जैसे पूर्व वर्षो में साथ दिया वैसा साथ बाबा रामदेव ने मोदीजी को दिया।

बाबा रामदेव से प्रेरणा लेकर हम भी देश के लिए अपना बड़ा योगदान दे सकते है। यदि विदेशी माल की जगह स्वदेशी को अपनाये तो हमारी अर्थव्यवस्था बहुत मजबूत हो सकती है। ज्ञानी लोग जानते हैं कि विदेशी कम्पनियों के माल की खपत में आधी भी कमी आ जाये तो रूपया डालर के मुकाबले 20–30 रूप्ये पर आ सकता है।

जो योग केवल मन्दिर, मठ और महलों तक सीमित था उसको झोंपड़ियां तक पहुँचाने का श्रेय बाबा रामदेव को है। हम खुद योग करें और योग से स्वस्थ रहकर देश का बहुत ज्यादा भला कर सकते हैं।

बाबा रामदेव के योग और आयुर्वेद का नई चिकित्सा पद्धति में व्यावहारिक सहयोग लेकर हम हमारे इलाज पर होने वाले खर्च को बहुत ज्यादा कम कर सकते हैं। डॉलर पर निर्भरता कम होगी।

बाबा का कारोबार बहुत तेजी से बढ़ा है। देश में निर्मित विभिन्न उत्पादों के बल पर बाबा दस हजार करोड़ के करीब का कारोबार करने लगे हैं। इतनी तेजी से हुए विस्तार में गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में बहुत दिक्कत आयेगी। अतः हम सबका जिम्मा बनता है कि बाबा को पतंजलि के उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने में सहयोग करें। पतंजलि को सही गुणवत्ता का कच्चा माल बेचें और किसी जगह कोई कमी हो तो पतंजलि को अवगत कराते रहें और सार्थक सहयोग देवें।

दूरदर्शी श्री राजनाथ सिंह जी

''इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना

किन्तु पहुंचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं हो।''

जब भाजपा के कई बड़े नेता मोदी जी को नेतृत्व सौंपने में झिझक रहे थे तब श्री राजनाथ सिंह जी ने वहीं रोल निभाया जो कृष्ण के साथ बलराम ने निभाया। बहुत मौकों पर ऐसा लगता था कि दाऊ कन्हैया से नाराज हो जायेंगे लेकिन जब श्रीकृष्ण दाऊ को रीति–नीति और देश धर्म समझाते थे तो दाऊ पूरी निष्ठा से श्रीकृष्ण को समर्थन देने लगते।

बलराम और कृष्ण की सभी समानताये ंतो मुश्किल हैं फिर भी एक निष्ठावान भ्राता का रोल निभाकर श्री राजनाथ सिंह जी ने अनुपम उदाहरण पेश किया।

जब बुजुर्ग और आत्मश्लाघा से पीड़ित वरिष्ठ लोग अपने आप को मोदीजी से ज्यादा क्षमतावान मानने लगे थे तब माननीय राजनाथ सिंह जी ने यह स्पष्ट कर दिया कि मोदी के सामने कोई नहीं। उन्होंने मोदी में कभी कृष्ण की कुशलता देखी तो कभी अर्जुन की एकाग्रता देखी। वे जान गये कि केवल एकाग्रचित गाँडीवधारी अजुन ही देश को भ्रष्टाचार के दलदल से बाहर निकाल सकता है और शकुनी मामा के षड्यंत्रों को मात दे सकता है। भारत के लिए यूपीए सरकार ने इतने गहरे खड्डे खोद दिये थे कि कोई मोदी जैसा युग पुरुष ही भारत को बचा सकता था। जिस प्रकार पृथ्वी को वराह राक्षस ने कब्जे में कर लिया था वैसे ही भारत भूमि राक्षसों की जकड़ में आ गई थी। यह कठिनतम समय था जिसमें योगीराज कृष्ण के कौशल के साथ पाँचों पाण्डवों के बल की जरूरत थी। श्री राजनाथ सिंह जी ने मोदी की अद्भुत क्षमता को पहचाना और विपरीत परिस्थितियों में भी जनमानस की भावना का आदर करते हुए, आकलन करते हुए श्री मोदी को बागडोर संभला दी। विरोध और विवादों की परवाह किये बिना जनहित के काम में किस प्रकार दृढ़ता अपनानी चाहिए यह हम श्री राजनाथ सिंह जी के उदाहरण से सीख सकते हैं।

सीना तान के

श्री कल्याण सिंह जी

''तूफानों से कह दो अपनी रफ्तार बढ़ा लें
अपनी जहाज के लंगर खोल रहा हूँ मैं।''

आजादी के बाद से ब्यूरोक्रेसी को बहुत बार शिकायत होती रही है कि नेता लोग अफसरों को जबानी आदेश देकर काम तो करवा लेते हैं लेकिन जब कोई निर्णय उलटा पड़ता दिखता है तो या तो अपने आदेश से मुकर जाते हैं या इधर उधर की बातें करके बच निकलने की कोशिश करते हैं। इसके विपरीत बुलंदी और साफगोई का उदाहरण प्रस्तुत किया माननीय श्री कल्याण सिंह जी ने। आज वे राजस्थान के महामहिम राज्यपाल का पद संभाले हुए हैं–– मैं जिक्र दिसंबर 1992 का कर रहा हूं जब बाबरी मस्जिद का ढ़ांचा गिराया गया। इस ढाँचे के गिरने के बाद काफी बवाल हुआ और मौके के अफसरों को आशंका हुई कि हमारा बिगाड़ हो सकता है। बहुत लोग आशंका से घिरे डर रहे थे। ऐसे वक्त में बब्बर शेर का कलेजा रखने वाले माननीय कल्याण सिंह जी ने बिना वक्त गवाएं बयान दिया कि ढांचा गिरने के लिए जिम्मेवारी मुझ मुख्यमंत्री की है और इसके लिए किसी ओर को प्रताड़ित ना किया जाए। इस बयान से ब्यूरोक्रेसी में बहुत आत्म विश्वास पैदा हुआ और आशंकाएं खत्म हुई। अच्छे परिणाम का श्रेय लेने के लिए होड़ लगती है लेकिन परिणाम विपरीत होते देख लोग अपनी आफत दूसरों पर टालते हैं लेकिन इस धारणा के विपरीत माननीय कल्याण सिंह जी ने सबको अचंभित कर दिया और बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। उनमें बहुत खूबियाँ हैं लेकिन यह खूबी अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है अतः किसी आदमी की महानता साबित करने के लिए ऐसी बुलंदी और साहस ही काफी है। लेखक उनके इस हौसले को नमन करता है।

''जिन्दगी तो अपने बलबूते पर जी जाती है। दूसरों के कन्धों पर तो जनाजे उठाये जाते हैं.'' – **शहीदे आजम भगतसिंह**

अद्भुत कर्मयोगी–श्री अजित डोभाल के सी

"सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

देखना है जोर कितना बाजू ए कातिल में है."

"I HAD SEVEN COMMANDERS WITH ME WHEN AJIT DOVAL CAME TO MIJORAM BUT BY THE TIME HE LEFT HE HAD WON OVER SIX OF THEM-THIS SITUATION ULTIMATELY FORCED ME FOR A SETTLEMENT WITH GOVT OF INDIA" -- LALDENGA LEADER MIZO NATIONAL FRONT

लालडेंगा ने जो कहा वह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। श्री डोभाल ने मिजोराम की पोस्टिंग उस वक्त याने 1972 में मांग कर ली जब उनके साथी आई पी एस मिजोरम में जाना ही नहीं चाहते थे क्योंकि वहाँ लालडेंगा ग्रुप का भारी आतंक था। उत्तराखंड के छोटे से गाँव में पैदा हुए इस सैनिक पुत्र के बालक ने अपनी खून में आई देशभक्ति को तेजी से बुलुंद किया और जो पुलिस पदक सामान्यतः बारह साल से पहले नहीं मिलता वह पुलिस पदक श्री डोभाल को केवल छः साल की सेवा में दिया गया। वे साल 1968 में आई.पी.एस बने और केरला काडर में ज्वाइन किया। सेवा की शुरुआत में ही उन्होंने 1971–72 के केरला के दंगों में सराहनीय कार्य किया और उच्च अधिकारियों की नजर में आये। उनकी विलक्षण योग्यता ने उन्हें आगे चलकर आई बी का मुखिया बनाया और वे देश के सुरक्षा सलाहकार के पद तक पहुंचे। एक पुलिस अफसर को जितने अवार्ड मिल सकते हैं।वे सब स्वतः उनके पास आये।

देश के लिए समर्पित इस व्यक्तित्व में युवकों को प्रेरित करने के विलक्षण गुण हैं।

एन एस ए की जिम्मेवारी जब से श्री डोभाल को मिली है उसके बाद जो सक्रियता दिखाई देने लगी ऐसा पहले कभी नहीं हुवा. मोदी जी ने इनकी विलक्षण याग्यता को

पहचाना और उन्हें मौका दिया. श्री डोभाल एक टाइगर हैं और टाइगर को अपने साथ रखने का मादा पहले वाली सरकारों में होता तो वे भी उनको बुलाते.

श्री डोभाल समान्यतः मिडिया से दूर रहते हैं और अपने काम से काम रखते हैं। प्रचार की भूख से दूर रहते हैं जो एक मुश्किल काम है लेकिन उनका काम आज सब तरफ बोल रहा है।

नेताजी सुभाष की फौज के मार्च सोंग की ये पंक्तियाँ हम श्री डोभाल के जीवन पर लागू कर सकते हैं –

''कदम कदम बढाए जा

खुशी के गीत गाये जा

जिन्दगी है कौम की

तू कौम पे लुटायेजा।

शेरे हिन्द आगे बढ़

मरने से तनिक ना डर

सामने तेरे अड़े उसे

खाक में मिलाये जा

कदम कदम बढाए जा

खुशी के गीत गाये जा।''

विलक्षण योद्धा श्री सुब्रमण्यमजी स्वामी

''तूफानों से डरने से नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।''
''वक्त आने पर बता देंगे तुझे ए आसमां
हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है.''

बड़े घरानों की चोरी और डकैती के जितने मामले अकेले श्री स्वामी ने देश के सामने रखे, उतने किसी दूसरे अकेले आदमी के बस में निकलवाना कभी नहीं रहा। वे अकेले अपनी सेना हैं। अकेले ने इतने घोटाले सामने रखे हैं जितने पूरी सी.बी.आई. सामने नहीं ला सकी। बड़ी से बड़ी अदालतों के ध्यान में लाकर और जोरदार पैरवी करके बड़े–बड़े घोटालों को रफा दफा होने से बचाया है। श्री स्वामी का देश में भ्रष्टाचार रोकने का योगदान ऐतिहासिक है और अद्वितीय है। ऐसा विलक्षण देशभक्त हमेशा अकेला चला क्योंकि उसको ऐसे नेता की तलाश थी, जो अद्वितीय युगपुरुष हो। श्री नरेन्द्र भाई मोदी में श्री स्वामी को उस युगपुरुष के दर्शन हुए और उन्होंने बिना शर्त खुद की पार्टी का विलय भा.ज.पा. में कर लिया।

वोटिंग मशीन के बाबत संदेह दूर करने के लिए सर्वोच्च अदालत में लंबी लड़ाई लड़ी और मतदान पर्ची प्राप्त करने का फैसला करवाने में सफल हुए। ऐसे अनेक मामले हैं जिनमें केवल उनके हाथ डालते ही बड़े डकैतों की पिंडली कांपने लग जाती है। जब ऐसे विलक्षण साहस के धनी के वर्षों बाद किसी को नेता माना है तो समझो उस नेता में जरूर कोई विलक्षण बात है और मोदी वाकई विलक्षण नेतृत्व के धनी हैं।

युग के प्रहरी श्री सुब्रमण्यम स्वामी

वो कौमें हार नहीं सकती जिनके
युग के प्रहरी जाग रहे हों।

श्री स्वामी वो युग प्रहरी है जो बंद कमरों के षड्यंत्रो को खोजना भी जानते हैं। सोनियाजी के संरक्षण में जो अनगिनत घोटाले हो रहे थे तो एक श्री स्वामी ऐसे कुशल और जागरूक योद्धा थे जिन्होनें गहन अंधेरों में किये गये षड्यंत्रो के सैकड़ो पर्दे उठाए और अकेले ही अपनी फौज बनकर लड़ते रहे। जब किसी को भनक नहीं थी तब से श्री स्वामीजी लड़ाई लड़ रहे है। श्री स्वामी वो जागरूक सर्चलाइट हैं जो सात दरवाजों से षड्यंत्रो को खोज लेते हैं। श्री स्वामी आज के युग के ऐसे प्रहरी है जिनकी नजरें रात–दिन जागती हैं। वो अपने आप में पूरी सीबीआई है। टू जी से कोलगेट तक सभी घोटालों को उजागर करने का श्रेय उनको है। मोदीजी के आने से

पहले स्वामीजी ने ऐतिहासिक कार्य किये। जितने घोटाले सी.बी.आई. की लम्बी फौज ने पकड़े उतने अकेले स्वामीजी ने पकड़े। वे अपने आप में वन मेन आर्मी के नाम से जाने जाते हैं।

नमस्कार उन नीवं प्रस्तरों को

दूसरी आजादी का जो सुन्दर भवन बना उसकी ऊपर की मंजिलों के सितारों का जिक्र हो चुका लेकिन भवन के नींव के पत्थरों को ध्यान से देखना पड़ता है। ये शिखर और मीनारों की तरह नहीं होते जो हम देखते हैं। इनको बड़े ध्यान से देखना पड़ता है क्योंकि ये नींव पर बैठे भवन का वजन उठाते रहते हैं। इनमें से बहुत देखने में भी छूट जाते हैं। मैं केवल उनका जिक्र कर रहा हूँ जिन्हें मैं जान पाया।

श्री ओमजी माथुर

"अँधेरे को तो बस यही खल रहा है
दिया जो मेरा आँधियों में भी जल रहा है।"

गुजरात के भाजपा संगठन को पिछले कई सालों से जो व्यक्ति बराबर मजबूती दे रहा है उसका नाम है ओमजी माथुर। पाली राजस्थान के निवासी ओमजी माथुर एक प्रसिद्ध नाम है फिर भी वह अपने को सामने प्रदर्शित करने की बजाय भाजपा की नींव को मजबूत करते रहते हैं। प्रदर्शन की भूख से दूर रहकर उन्होंने एक–एक कार्यकर्त्ता को पार्टी से मजबूती से जोड़ा।

खुद कुछ बनने के प्रयास से दूर ओमजी माथुर का ध्येय रहा है कि मोदीजी को मजबूत करें क्योंकि मोदीजी में ही उनको ऐसी अनुपम क्षमता दिखाई दी जिनके नेतृत्व में भारत वापस अच्छे दिन देख सके और अपना गौरव प्राप्त कर सके।

श्री माथुर को भाग्यशाली भी माना जाता है और वे जहां के प्रभारी रहे वहां पार्टी को जीत मिली। उत्तर प्रदेश की विधानसभा के चुनावों में मिली ऐतिहासिक जीत में उनकी बूथ लेवल पर की गई तैयारियाँ अपने आप में अनोखी रही। बिना किसी हड़बड़ाहट के वे चुपचाप छोटे बड़े लोगों को पार्टी से जोड़ने की विलक्षण क्षमता रखते हैं। उनका जोड़ फेविकोल का होता है जो टूटता नहीं है।

श्री हुकम देव नारायण सिंह

"हमने तो रो रो के रात काटी है

इन आँखों पे यह नूर तब आया है।"

इस दुनिया को नजदीक से देख और समझ चुके श्री हुकम देव नारायण सिंह का कोई जवाब नहीं। कोई लाग लपेट नहीं। वे सीधी–सीधी बात करते हैं और नम्रता के साथ अपनी बात कहते हैं भले ही किसी को अच्छी लगे या बुरी। अद्भुत बोलते हैं। उनकी वाणी में ओज है, आकर्षण है और उनको सुनने की उत्सुकता कभी खत्म नहीं होती।

भारतीय इतिहास को साहित्य की निगाह से देखते हुए वे ऐसी प्रस्तुति देते हैं जिससे तनाव रहित वातावरण में लोग सुनते हैं और जिनकी वे बखिया उधेड़ते हैं उनको भी वे निरूत्तर कर देते हैं। वे ऐसे साबुन से लोगों का स्वभाव निर्मल करते हैं जिससे सुनने वाला निरूत्तर हो कर आत्म चिंतन को विवश हो जाता है।

वे बिना नाम लिए नाविक के तीखे तीर चलाते हैं जिनके घाव बहुत गंभीर होते हैं। देखिए एक उदाहरण :–

"आनन सरल वचन मधुमय है
तन पर शुभ्र वसन है
बचो युधिष्ठिर इस नागिन से
विष से भरा दसन है।"

सच्चे राष्ट्रवादी
श्री मुख्तार अब्बास नकवी

"COURAGE DOES NOT MEAN YOU DO NOT GET AFRAID. COURAGE MEANS YOU DO NOT ALLOW FEAR TO STOP YOU FROM DOING WHAT YOU WANT."

श्री नकवी को सुनना अपने आप में आकर्षण की अनुभूति है। उनके उत्तर बड़े सटीक होते हैं। शब्द चयन अद्भुत होता है। उनके विचार बहुत सकारात्मक होते हैं और वे हर समस्या का

सबसे उचित हल बताते हैं। वे सही सेकुलरिज्म के अनुपम उदाहरण हैं। बी.जी.पी. कार्यालय को संभालने में उनका योगदान और लोगों से हमेशा अलग रहा है। बिना कोई दिखाव करे वे अपने सार्थक योगदान में लगे हैं। हिन्दू मुस्लमान की मान्यता से हटकर वे सच्चे राष्ट्रवादी नागरिक के अनुपम उदाहरण हैं। वे लगातार मीडिया में विवादित मुद्दों पर पार्टी का कुशलता से बचाव करते हैं लेकिन उनके बयानों के आधार पर कोई विवाद उठाने की गुंजाईश नहीं होती। पाटिर्यों के दायरे से बाहर भी वे खूब रिश्ते निभाते हैं।

लोकप्रिय श्री शाहनवाज खान

"SUCCESS DOES NOT MEAN LACK OF FAILURE BUT IT MEANS GOING FROM FAILURE TO FAILURE WITHOUT LOSING HOPE AND ENTHUSIASM"

श्री खान ने कई बार साबित किया कि उनकी लोकप्रियता तथाकथित सीमाओं से बाहर दूर तक है। भारतीयों को तंग दायरों से बाहर निकलकर किस प्रकार जनहित और देश को सब कुछ मानना चाहिए, ऐसा उन्होनें करके दिखाया। मीडिया में उनके जवाब सटीक और सार्थक होते हैं। उनके बयानों पर विवाद उठाना आसान नहीं है। वे ऐसे इलाक से सांसद चुने जा चुके जहां वोट बैंक की कोई बाध्यता नहीं मानी जाती।

तन्मय सांसद श्री अर्जुन मेघवाल

"IN THE WORLD OF IDEAS EVERYTHING DEPENDS ON ENTHUSIASM - IN THE REAL WORLD ALL RESTS ON PERSEVERANCE."

मोदीजी चाहते हैं कि उनके सांसद सादगी से रहें और संसद और अपने क्षेत्र में पूरी तन्मयता से मेहनत करें । हमारे राजस्थान के सांसद श्री अर्जुन मेघवाल ने सादगी का जीवन अपनाया और संसद में ज्यादा से ज्यादा भागीदारी निभाकर उन्होनें पिछली बार बेस्ट सांसद का सम्मान प्राप्त किया। संसद में साईकिल से आना–जाना करके उन्होनें एक नयी पहल शुरू की।

मोदीजी पर सर्वे

हमने निजी तौर पर मोदी जी के बाबत सर्वे किया। करीब दौ हजार लोगों से पूरे उत्तरी भारत में पूछा। सर्वे के नतीजे निम्न प्रकार रहे–––––

मोदीजी से संतुष्ट 65 प्रतिशत

जिसमें से बहुत संतुष्ट 15 प्रतिशत

मोदीजी से संतुष्ट लेकिन भाजपा के नेताओं से असंतुष्ट 20 प्रतिशत।

खुद मोदीजी से असंतुष्ट 15 प्रतिशत

जिनमें से बहुत असंतुष्ट 5 प्रतिशत

इस प्रकार नतीजा यह है की माह अगस्त से अकटूबर के सर्वे में नोटबंदी और जी.एस.टी और मंदी के बावजूद भी 65 प्रतिशत लोग संतुस्ट पाए गए। नतीजा यह है कि फिलहाल के चुनाओं में मोदीजी नैया पार लगा लेंगे।

श्री महावीरजी विश्नोई

हमारे सर्वे में एक एडवोकेट श्री महावीरजी विश्नोई अध्यक्ष बार एसोसिएशन नोखा जिला बीकानेर के विचार बहुत उल्लेखनीय हैं। उनका कहना है कि देश के बड़े नुकशान को बचाने के लिए छोटा नुकशान सहना पड़ेगा। मोदीजी हार जीत की परवाह किये बिना देशहित में आगे ही आगे बढ़ रहे हैं। सब वर्गों की नसबंदी भी देश की बड़ी जरूरत है। इस पर भी आपातकाल में श्री संजय गांधी के प्रभाव से नसबंदी का कार्यक्रम खूब चला लेकिन सन ७७ में चुनाव हारकर इंदिराजी ने नसबंदी से पूरा पल्ला ही झाड़ लिया। उनको जनता ने 80 में दुबारा सत्ता दे दी और जनता ने माफ कर दिया लेकिन उन्होंने मुड़कर नसबंदी का नाम ही नहीं लिया जबकि लोग जान गए थे कि नसबंदी बहुत जरूरी है। हमें उम्मीद है मोदीजी ऐसी कमजोरी कभी नहीं दिखाएँगे। उनका यह भी कहना है कि उद्योगपतियों को बढ़ावा देने से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं। वे चाहते हैं कि मोदीजी बार बार आवें।

अनोखे अंदाज में उत्तर

थोड़े में बहुत कुछ बोल दिया. श्री ओ पी विश्वकर्मा अंतर रास्ट्रीय साइक्लिंग कोच ने दिया अनोखे अंदाज में उत्तर . कैसे नहीं आये अछे दिन ———मोदी ने भ्रस्टाचार पर नकेल डाली. मेंहनत में युवकों को पीछे छोड़ा और जो करते हैं वो देश के लिए कर रह हैं. लोहानी जैसे कर्मठ लोगों को तलाश कर के लाते हैं जिन्होंने पहले एयर इंडिया को घाटे से निकाला और अब रेलवे को पटरी पर ला रहे हैं. चोरों को हिला के रख दिया.

100 में से 100 नम्बर – एस पी मित्तल अजमेर

राजस्थान के मशहूर पत्रकार श्री एस पी मित्तल का कहना है की मोदी भाई का कोई मुकाबला नहीं है। देश उनके हाथों में सुरक्षित है और वे ही भारत को विश्व गुरु और महाशक्ति जनता से बनवा सकते हैं। भारत की फौज में उनके आने से बहुत आत्मविश्वास बढ़ा है। उनका कोई विकल्प नहीं है।

हमारे सर्वे में बहुत मुद्दों पर सार्थक फीडबेक और सुझाव श्री ए के ओझा रिटायर्ड आई ए एस जयपुर, श्री सुरेशजी व्यास रिटायर्ड आई पी एस जयपुर, कर्नल सतीश सेठी लखनऊ, कर्नल ए के गुप्त अहमदाबाद, शाहजी श्री लक्ष्मीकान्त जी झुंझुनू, इंजिनियर श्री बी एल जांगिड नवलगढ, डाक्टर श्री सुमेर सिंहजी चिडावा, भाजपा के झोटवाड़ा के ब्लोक अध्यक्ष श्री कमल जांगिड जयपुर, श्री सिद्दार्थ जांगिड बैंक मैंनेजर कोटा, श्री अशोक यादव एडवोकेट झुंझुनू, सेवानिवृत प्रिंसिपल श्री मनीरामजी यादव सहड़, चौधरी श्री सुभाषजी पूनिया सुरजगढ, श्री अखिल शुक्ला एडवोकेट हाईकोर्ट जयपुर, श्री चिरंजिलाल जी माली एडवोकेट हाईकोर्ट जोधपुर, श्री एस एन राजपुरोहित एडवोकेट हाईकोर्ट जोधपुर, एडवोकेट धर्मवीर कुशवाहा जयपुर, शिक्षाविद श्री एम एल शर्मा जी जयपुर। श्री हेमंत गुप्ता जयपुर, उद्योगपति श्री नरेन्द्रजी मोदी अलवर, डाक्टर राजेंद्रजी सुरेका, पत्रकार श्री एस पी मित्तल अजमेर, श्री गुलाब बत्रा जयपुर, श्री राजेंन्द्र जी जांगिड बडबर, सेठ श्री मुरलीजी पचेरी राजस्थान, श्री हनुमानजी सुथार ट्रांसपोर्टर बीकानेर, प्यारे लाल जांगिड़ थली ——सूबेदार श्री उम्मेद सिंहजी किसान, श्री जिलेसिन्हजी चौधरी किसान, सूबेदार महेंदरजी नेहरा, श्री अशोकजी नेहरा लांबी जाट, श्री दर्शन चौधरी। श्री मेवारामजी चौधरी अध्यापक, श्री पवन बछोदिया समाजसेवी अटेली हरियाणा, श्रीमती निशा चौहान, श्रीमती संतोष शर्मा नवलगढ़, सुश्री अंजलि गोयल जोधपुर, श्री नारायण सिंहजी राजावत 'दिलचस्प' चुरू और श्री श्री नरेन्द्र फगेडियाजी बड़ के बालाजी जयपुर, कप्तान ताराचंदजी गुर्जर हमीरवास, श्री बी एल जांगीरा रिटायर्ड डायरेक्टर दिल्ली, श्रीमती अंजुलता, दयानंद बाल्मीकि जोधपुर, सुभाष मेघवाल श्री गंगानगर, श्री नवीन शर्मा मानसरोवर जयपुर ने भी दिए जिनको हमने उचित जगह पर्याप्त महत्व दिया।

सोशल मीडिया के ये शेर

सोशल मीडिया में कुछ बुलंद लोग देशहित में बुलन्दी और सर्तकता से जुड़े हुए हैं। चार साल से उनकी जागरूकता सराहनीय रही है। उनकी सतर्कता से मैंने भी बहुत कुछ सीखा है। ऐसे लोगों को मैं मेरी तरफ से बहुत बाधाई और धन्यवाद देता हूँ और उनके लम्बे और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।

श्री सुरेश व्यास आई.पी.एस., जयपुर।

श्री रविन्दर पंवार, अध्यापक, उत्तर प्रदेश।

श्री मिलिंद वाखाले सहज योग वडोदरा, गुजरात।

श्री प्रदीप ताम्हनकर कोजिकोड़े कालीकट।

प्रख्यात कवि श्री नरेन्द्र मिश्र, चित्तौड़गढ़।

श्री जितेन्द्र प्रताप सिंह, यू.पी. (हाल गुजरात)

श्री नूतन शर्मा स्टूडियो सुजानगढ़, राजस्थान।

श्री इंद्रजीत प्रजापति अध्यापक फलोदी, जोधपुर।

श्री आर.सी. शर्मा, उत्कर्ष।

श्री पुष्कर वीर सिंह भाटिया।

सुश्री पल्लवी उपाध्याय मिश्रा, लन्दन, ब्रिटेन

श्री विवेक बेनीवाल, नई दिल्ली।

श्री दिनेश कुमार बिस्सा आकिल जोधपुर।

श्री राहुल सिंह कानपुर, यू.पी.।

श्री मृत्युजंय कुमार, झा.बी.एच.यू., बनारस।

माननीया स्तुति शर्मा

श्री एस पी मित्तल अजमेर

हम सौगन्ध लेते हैं कि

हम सब देश हित को ही सबसे बड़ा हित समझेंगे।
हम नरेन्द्र भाई मोदी के बताये रास्ते पर देश के लिए
कुछ करने की सोचेंगे, कुछ बनने की नहीं सोचेंगे।
नरेन्द्र भाई ने देश को गहरे अपमान से निकाला है
हमारा प्रयास होगा कि देश का सम्मान बना रहे।
हमारे लिए महंगाई आदि बहुत छोटे मुद्दे हैं
हमारे लिए देश का सम्मान और स्वाभिमान सर्वोपरि है।
हम नरेन्द्र भाई मोदी की तरह सौगन्ध लेते हैं कि
हम देश को मिटने नहीं देंगें – झुकने नहीं देंगे।

– आर.एन. अरविन्द, लेखक

ले. कर्नल बी.डी. जालोडिया (रिटायर्ड) जयपुर
राम अवतार रघुवंशी आई.ए.एस. (रिटायर्ड) जयपुर
सुरेश व्यास, आई.पी.एस. (रिटायर्ड) जयपुर
डॉ. अखिल शुक्ला एडवोकेट हाईकोर्ट, जयपुर
बी.एल. जांगिरा, रिटायर्ड डायरेक्टर, कृषि अनुसंधान, नई दिल्ली
एम.एल. शर्मा, शिक्षाविद्, जयपुर
ले. कर्नल सतीश सेठी (रिटायर्ड) लखनऊ
चिरंजीलाल माली, एडवोकेट, हाईकोर्ट, जोधपुर
सत्यनारायण राजपुरोहित एडवोकेट हाईकोर्ट, जोधपुर
अशोक यादव सागा एडवोकेट हाईकोर्ट, जयपुर।
श्री धर्मवीर नेहरा सांवलोद, जिला झुन्झुनू
श्री कमल जांगिड़ लक्ष्मीनगर, जयपुर
सूबेदार झाबरमल थली जिला झुंझुनू
श्री किशोरीलाल जांगिड़ थली जिला झुंझुनू

आभार

इस पुस्तक के निर्माण में इन सबके सहयोग का मैं आभारी हूँ –

बेटी वाणी और बेटी प्रियंका (पुत्र वधु) का आभार उत्साह बढाने हेतु

पुत्र भगवत कुमार का आभार अनवरत सहयोग हेतु

वरिष्ठ पत्रकार प्रताप राव का आभार प्रेरणा हेतु

प्रकाशक श्री अजित तिवारी का आभार प्रकाशन हेतु

––देश मेरे ए देश मेरे ———————— मेरी जान है तू

देश मेरे ए देश मेरे ———— मेरी शान है तू

मिटाने से नहीं मिटते ———————— डराने से नहीं डरते

वतन के नाम पे हम ————————सर कटाने से नहीं डरते

.....

––है प्रीत जहां की रीत सदा मैं गीत उसी के गाता हूँ

भारत का रहने वाला हूँ भारत की बात सुनाता हूँ.

.....

––ए मेरे वतन के लोगो जरा आँख में भर लो पानी

जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुर्बानी

वंदेमातरम – जय हिन्द

सन्दर्भ पुस्तकें
(Reference Books)

आओ बनाएं – एक बेहतर भारत	– विलियम नंदा विसिल
देश विभाजन का खूनी इतिहास	–जस्टिस जी. डी. खोसला (अनुवाद सच्चिदानंद चतुर्वेदी)
वर्तमान परिपेक्ष्य में हिंदुत्व	–प्रकाशक- भारतीय विचार मंच, अहमदाबाद
मोदी इफेक्ट	– लेन्स प्राइस
क्यों आखिर मोदी	– डी पी सिंह
सरदार भगत सिंह	– विश्व प्रकाश गुप्त, मोहनी गुप्त
भर्तहरी– नीति शतक	– सत्काम विध्यालंकार (हिन्द पॉकेट बुक्स)
हिंदी साहित्य का इतिहास	– रामचंद्र शुक्ल
जागें और जगाएं भारत नया बनायें	– आर एन अरविन्द
Freedom At Midnight	- Lapierre & Collins
Modi	- Andy Marino
Maximum Confidence	- Jerry Minchinton
Changing India	- Robert W Stern
Man's Struggle for Meaning	- Viktor E. Frankl
The World As I See It	- Albert Einstein
Hindutva and Hindu Renaissance	- Dr S Swami
Breaking India	- Prof Rajiv Malhotra
[INFINITY FOUNDATION]	

लेखक परिचय

लेखक आरएन. अरविन्द राजस्थान काडर के एक सेवानिवृत्त आईएएस. अधिकारी हैं। सरकारी सेवा को उन्होनें जनसेवा के लिए मिशन के रूप में लिया। आधा दर्जन जिलों में कलेक्टर रहे और दर्जन भर विभागों/निगमों के मुखिया रहें। हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ निर्णय लेखन के लिए न्यायमूर्ति वेदपाल त्यागी अवार्ड जीता और दर्जनों प्रमुख पुरस्कार प्राप्त किये जिनमें राष्ट्रपति रजत पदक भी शामिल है। इनके जिले और विभाग हमेशा अग्रिम स्थान पर रहे। किसानों के हित हेतु गठित राजफैड का कारोबार पांच गुना बढ़ाकर पूरे भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बाड़मेर सहकारी बैंक को भी देश में प्रथम स्थान पर पहुंचाया। चुरू शहर की आवागमन की समस्या दूर करने हेतु अतिक्रमण हटाने और सौंदर्यकरण हेतु हजारों पक्के और कच्चे निर्माण तोड़े गए। ऐसे ही सौंदर्यकरण के काम निम्बाहेड़ा, मकराना, नागौर, जोधपुर और बाड़मेर में किये गए जो बहुत चर्चित रहे। परिवार कल्याण हेतु विरोध करने वाले वर्गों को प्रेरित किया गया और विरोध पर कानूनी कार्यवाही की। इन पर बार–बार ज्यादा सख्ती के आरोप लगे जिनको लेखक ने देश हित और अनुशासन हेतु जरूरी बताया। इनकी भागीदारी से राजस्थान रोडवेज भारत में अव्वल स्थान पर रही। अल्प बचत में लक्ष्यों में 60 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई। रेगिस्तानी जिलों में वर्षा के जल संग्रहण हेतु और वृक्षारोपण हेतु सराहनीय प्रसाय किये गये। गुंडो और माफियाओं के खिलाफ हमेशा सख्ती बरती और दबाव को हावी नहीं होने दिया। जवान किसान और नौजवान के चहेते रहे। सरकारों ने इन्हें ट्रबलशूटर के रूप में बार–बार आजमाया। लोकप्रियता इतनी रही के इनके ट्रांसफर रूकवाने हेतु कई बार जन आंदोलन हुए। करीब 36 साल गाय, गरीब और गाँव की सेवा को प्राथमिकता देते हुए सफलता से सेवा की। वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। कई तरह के नवाचारों के लिए जाने गए। इनमें प्रमुख रहे – दादा–पोता दौड़, भागता बाराती और छीना झपटी झांकी। पीढ़ियों के विचार भिन्नता में समन्वय हेतु चलाये गये अभियान दादा पोता दौड़ और दादी पोती सम्मेलन और अकाल के दौरान् जन सहयोग से संचालित राम रहीम रसोई और बाड़मेर के दूर दराज के रेगिस्तानी इलाकों में चलते फिरते मतदान बूथ बहुत चर्चित रहे। 2007 में सेवानिवृत्ति के बाद जन जागरण और राष्ट्रीयता के प्रचार–प्रसार में लग गये। देशहित में जनवरी 2014 में लिखी पुस्तक "जागें और जगाएं – भारत नया बनाएं" बहुत लोकप्रिय हुई जिसके चार संस्करण छापे गए। नमो के समर्थन में तीन और पुस्तकें लिखी गई – "सबका साथ सबका विकास", "सपने मोदी के दायित्व हमारे" और "जानदार मोदी–शानदार शतक" ।

मोदी की देशभक्ति, समर्पण, कौशल और दृढ़ता से प्रेरित लेखक की यह एक और पुस्तक आपके सामने है–" नमो और हम"। उम्मीद है यह पुस्तक भी आपको सोचने को विवश करेगी।